

DPN 6636

Title : ~~गजनिर्दिष्टा~~ पालाख्य / PĀLĀKHYA (गजनिर्दिष्टा/Gajacikitsā)

Run. No. 7361

Cat. No.

Micro. No.

Subject Gajāyurveda

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 32 × 16.8

Folios 109 Lines (in a page) 13 irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator Pālākhyā

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 828

Ruler / place भूपतीन्द्र मल्ल

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Together with Viśaya sūcī

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / one side yellow

Beginning, colophon, post-colophon : इति श्रीपालाख्ये महामुनिप्रणीते गजायुर्वेदे
महाप्रवचने सुद्विषयस्थाने द्वितीये गोत्रशेखरे नाम द्विसप्ततितमोऽध्यायः॥५२॥



संवत् ८२८ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा रेवती नक्षत्रे सैन्दवयोग एव कुतू
एव गजान्विकित्सा साफल्ये श्रीश्रीजय भूपतीन्द्र मल्ल देवसन
महायन्त्रपूर्वकेन जलाया दरवारस छात कायाव त्रैस्कैस
विज्याङ्कव संपूर्ण याङ्ग दिन ॥ शुभं भूयात् ॥ ॥

साखल
धलसकाय

श्रीमदुरवे

हाकयाउपवात्र
नकता
साधल
हामलवकी
उलिपू
यालनीयूव
मूलालपू
७०
धननक

पाय
तच्छाचून
कि ल रतिमना

हाकूवा
खिगुलि
इइ
धल
कथनित्र
लिकाथनित्र
वासिखलि
मूलालरुत्र
मूपामान

धनलप

किलिक्कानकतालानकताव
यकवा
वाहाल
हास
तितियाकू
सानस
वाधवाहाल
कूखा
ततल
हा
खवलखून

खिवा
रुसि
नलवा
वृसा
मम
वानस
ठा
वला
थसखा
गुखा
कूखा
धनलानकव इइ

मसाला
दि
जीन
धन
पान्
वि
पातक
यकनकूय

सानिकडाइइ
दाक
मान
धनलानकव इइ

मृत्तिकाकलत्रागयाविकित्सा पृष्ठ ८२
यहनीलोगयाविकित्सा पृष्ठ ८१
आमत्रागयाविकित्सा पृष्ठ ८२
कमीकाष्ठयाविकित्सा पृष्ठ ८३
किणिकानकमजिसाकानकविकित्सा पृष्ठ १००
मदवायिवयालकलकानाप्रकारन पृष्ठ १०१
वलवक्तुआदिनेजिताप्रकारन पृष्ठ १०१
वातआदिनेमदलकल पृष्ठ १०२
पताप्रकारनमदयाविकित्सा पृष्ठ १०३
कलत्रवालकिमिया पृष्ठ १०४
कलत्रागयाविकित्सा पृष्ठ १०५
शूनायकत्रागयाविकित्सा पृष्ठ १०५

नसाकपचातकानमनवयाविकित्सा पृष्ठ १०५
दालीकसाथयाविकित्सा पृष्ठ १०६
श्रुतिपातयाविकित्सा पृष्ठ १११
पित्तगुल्मयाविकित्सा पृष्ठ ११२
दृष्टोगयाविकिकित्सा पृष्ठ ११४
गनीनसर्वगित्याकत्रागडत्यलिलकल पृष्ठ ११४
वातलकल पृष्ठ ११५
पित्तलकल पृष्ठ ११६
शूललकल पृष्ठ ११७
सनिपातलकल पृष्ठ ११८
धनयाविकित्सा पृष्ठ १२०
शूर्गुडकषट्त्राग पृष्ठ १२१

सुधनागविकित्सा पृष्ठ १२२
 निधाननाग पृष्ठ १२३
 विदुतनाग पृष्ठ १२३
 माढयाविकित्सा पृष्ठ १२४
 कयकूढ रुमयाविकित्सा पृष्ठ १२४
 आलस्यविकित्सा पृष्ठ १२५
 मथिनयाविकित्सा पृष्ठ १२५
 अदिकथाजायकोयाविकित्सा पृष्ठ १२६
 कान्कसाथविकित्सा पृष्ठ १२६
 क्षीणविकित्सा पृष्ठ १२७
 विद्युतविकित्सा पृष्ठ १२७

वातनागयालपन
 हिंसा प्र१
 रूक्मिनि
 लभरुजिन
 यवाकन
 दवदानू
 थलवाकन
 मालगालजाकि
 सधू
 तिमि
 प्रका
 लामल प्र१

हं२ सादूस पाकयाय
 लामलवर्क कू७
 घृत कू७
 उरुयादाक हं१
 वातनागयानक उ पवाल
 गुगुनकू१
 लोह हं२
 रूमून ता१०
 मूध्वर्गध ता१०
 गु० ता२०
 पिपिन ता१०

उदावर्तभागयाविकित्सा पृष्ठ ३३
वल्मीकभागयाविकित्सा पृष्ठ ३३
कमीभागयाविकित्सा पृष्ठ ३४
उन्नतगलागयाविकित्सा पृष्ठ ३४
लालितान्नभागयाविकित्सा पृष्ठ ३५
पू दुतियानखभागयाविकित्सा पृष्ठ ३५
चर्मकीलभागयाविकित्सा पृष्ठ ३६
जवगन्धभागयाविकित्सा पृष्ठ ३६
वृद्धिभागयाविकित्सा पृष्ठ ३६
भूवसन्नभागयाविकित्सा पृष्ठ ३७
ज० न० भागयाविकित्सा पृष्ठ ३८
वालभागयाविकित्सा पृष्ठ ३९

वाक्कसुशक्कनानाभागयाविकित्सा पृष्ठ ११
मूयसंगमूययाभागयाविकित्सा पृष्ठ १५
माकिसियासूतिकाभागयाविकित्सा पृष्ठ १३
दन्तभागदकार्याविकित्सा पृष्ठ ८८
नृगनमक्किटावविरुक्किनेमदूयाविकित्सा पृष्ठ ८१
गुलभागनतार्याविकित्सा पृष्ठ ८२
कुलसात्रदाभागयाविकित्सा पृष्ठ ८३
कगसात्रदाभागयाविकित्सा पृष्ठ ८३
जवगलुभागयाविकित्सा पृष्ठ ८४
गीतकन्दभागयाविकित्सा पृष्ठ ८४
मधूमक्किकादसुभाग पृष्ठ ८५
कुविभागयाकादगयाविकित्सा पृष्ठ ८६

किं सियाद्धवनवनयतासुधादिदयक पत्र ३१
किं सियादिश्रुदिकववयाउपचान पत्र ३२
घालसमियाउपचान पत्र ३३
कीलसुवयाव.शुशुकर्मनवन्धयायविधि पत्र ३४
किं सियातायद्धवियविधि पत्र ३५
गजाद्यातशवया.गल्यउद्धनल पत्र १२
नतायकात्रयाविद्विउपचान पत्र १४
गनीन.श्रुगनुक.वृलनता पत्र १५
नलीवृल पत्र १६
नकाकायसुयत्रागयावि.गमन पत्र १७
शूर्वदत्राग पत्र १८

दन्तवागविकित्सा पत्र ८८
श्रुदिकदन्तयाविकित्सा पत्र ८९
हिश्रुदिकववया.हिश्रुय.वासुलविधि पत्र ९०
किं सियामर्मसुन पत्र ९३
नयाव.शुनुनकायाया.विष.निवृह
शवयाउपचान पत्र ९४
मर्मस.श्रीगशवया.सियिव.म्यायिवसय पत्र ९५
संग्रामसयनता.मर्मसलकायायविधि पत्र १००
लूटाविकित्सा पत्र १०१
कीटविकित्सा पत्र १०२
सयविकित्सा पत्र १०२
गनीनसदका.श्रुगयानाम पत्र १०५

द्याल्ल्यायणमुदयकविधि पृष्ठ १०८
ल्याळासुमिनपूतकविधि पृष्ठ १०८
मूथद्वितीयखलुपृष्ठ १
वातश्रुदिनवसनश्रवयाविकित्सा पृष्ठ ३
मूतीसावनागयाविकित्सा पृष्ठ ७
मशताकानमूर्च्छश्रवयाविकित्सा पृष्ठ ७
द्यासद्याजा नयानथाषश्रयावराहिनया
उपचान पृष्ठ १
मूमीतिश्रयावकिसियावन्ध्यायविधि पृष्ठ ८
किसितथाथसथानमर्नवपनिसय पृष्ठ ८
मरीठवन्धुनयायाविकित्सा पृष्ठ २
विक्रसयउपाय पृष्ठ १०

दूखीविषलकलसय पृष्ठ ११
विषनसियिवसय पृष्ठ ११
विषयावंगलकलसय पृष्ठ १२
२ विषयाविकित्सा पृष्ठ १४
१ विषयास्वत्थायनविधि १२
दिग्बविद्धविकित्सा पृष्ठ १७
कवनजंगमविषयाषलकल पृष्ठ २३
विसयविष्णुलकलविकित्सा पृष्ठ २७
मूपवादवद्ध पृष्ठ २७
नकलाळाकिसियां कपालाळावतयाकिसियां
वसक्तमडसं ग्रीष्ममडसं मनचंचलश्रवया
लकलश्रवसय पृष्ठ २९

पत्रांक ४॥

मंगलाचरणप्र

वर्णविक्षानपत्र

वर्णयालकलपत्र

आताविधिवर्णयानामपत्र

असाध्यवर्णपत्र

वर्णशयिवधयपत्र

वासल्यागलयाताप्रकाशपत्र

वासल्यागलगलयापनिनिसप्रथमअध्यायताप

सद्यकतवर्णपत्र

लक्षवर्णशवया

अनुकायाववर्णशवया

लक्षवर्णविकिसाअध्यायतापत्र

लक्षवर्णवर्णयानामपत्र

धर्तसद्यनशवयावर्णअध्यायतापत्र

षष्ठ्यागयाउपचानअसाध्यलक्षवर्णपत्र

रुद्रादिनयतानातियापत्र

द्यालशयिवलक्षवर्णपत्र

मूत्रलिमडसद्यालउपद्रवशयिवलक्ष

लक्षवर्णदवपत्र

पंचवर्णलक्षवर्णपत्र

पंचवर्णउत्पादिकषष्ठ्यागयापत्र

षष्ठ्यागयालोगउत्पादिकपत्र

आयुर्वलसत्वसाम्यपत्र

पू

सत्त्वनिर्लुप्य पद्य २१
गन्धवादि सत्त्व पद्य २८
युक्तीति पद्य २८
संधिमर्मा पद्य २२
वयस्कृमस्वतान पद्य ३१
दणस्वताप्रकाश पद्य ३२
यताश्रुति पद्य ३२
श्रुतिवाचनभाग्यात्मनि पद्य ३४
जिनताडयवाचन पद्य ३४
गनीनयावर्णयताजातिथा पद्य ३५
निमेषादिनकाल पद्य ३५
महत्तुआदिनतत्त्व पद्य ३१

गर्वसुडत्यलिलकल पद्य ३८
गर्ह्यारुलतिनश्रुयूर्वल पद्य ३२
माकि सियाभउशवयालकल पद्य ४१
गर्हसदवयालकल पद्य ४२
गर्हसनयागिनगनीनलकल पद्य ४४
वनसंवाठपनिसननयायालकल पद्य ४४
पोषसमाद्यसनयायालकलरुल पद्य ४५
शिवशुनयायागनीनलकलजातिरुदं पद्य ४५
दणरसुडत्यलिलकलगनीनउत्यलिविक्र
लकलपद्य ५५
गर्वसुश्रुडत्यलिलकलपद्य ५१
व्यानेलिगनीनवाधपूलकल पद्य ५१

दूढावस्याकया
कल्क
गर्भजिन
कातगिन
लिकातगिन
बाल
धर्मकाथ
पंचमूल
हामलथकन
लपनयायता
नकचन्दन
काष्ठपद्म
पातक

सधू
कुलाकलक
सजिखाल
यवखाल
धलनवालावलपन
नडयानकवासल
विलिसपू
गिरुला
मनव
पिपल
७०
ककिसवालवलचिन

किनियाककिया
मूलालहल
सधूवि
हामल
गिठता
धनसमरागपाय
ककियाचकन
ग्रीखलु
मृगन
मन्याथ
सानपासाक
पियंगु

वलखूनधल
कालानुसारी
नागयूथ
हवल
गानीसहल
गकनाम
खाधहल
याधनख
रुद्धदात्र
याला
हरजि
मि।के।सि

पून लूवा

कूट

पुपुलीक

नसीइन

नूडिमिल

कसि मू ४

सथ मू १

हामय के कू २

किनियाद्यालयावक

मू न क पात हल मू १

धवनवा मू १

निकरुल मू १

मगकी योहा मू १

हामय के कू १

नरालनदवद्यालयावासन

तिलिय

खाथ

दवदानसिकिव

सिमसिया किव

सामवल्क

खयन

काखलाखसदायकावपाय

नरालनदवद्यालया

तायूववलयालफ मू १

उहलयालफ

वाल

कूटनट जकांमि

कनवीनयाहल

वलागतखाला

इवसिखाला

पलासिखाला

आपखाला

वलसिखाला

हामल मू १

हाकूवा

सोधनसल का १००

धनलि कसकू

हायाव सिवू

भामतयावधाम

नपाय

अलागखाला

वलसिखाला

पलासिखाला

इवसिखाला

आपखाला

खोहनाखसनियाव

सिवू भामतयावपाय

प्रका ८०१
वाक् ८०२
धल ८०१
हमलथर्क ८०१
सादू ८०२
धनपाकयाथ
शूनूपान्मर्थनवदूतव

कार्कवानताविधि
कलाज
नीप
शूनिनहा
पादली
गिनोव

थाल
वकसखला
हमल
धननियावपालदयक
कपीयकनवूयक
दूद
थकननतादायक

कयकूठयावासल
खकालखान्याहाना ४
शूनालपू
वालचित
पलमास
दिकरुल

कृतिवनना ४
थकन
खयादाक

किसियाद्यालयाथर्क
विलिसिपू
चितक
किपू
मिताकिस
काचहनति
यि
७०
गमसूय
समशोग

कृपानकवासल
प्रका
नीप
धल
कस्ति

माठयापाय
शूनालपू
नालपू
अपू
प्रका
पानूचकन
वतकला

मलाठ
दवदाव
नकनाज
तवसहा
दाति
ममसुसुनिय

धलखून
कचूल्याभा१
रूक्तिमिन
पारवानरुद
मूर्शन
गुचूल्या

मूग्धगध
हाकुभा
कीनकाकावि
धतवव
खयल
लाहा
रूयजव
गेजि
मन्याथ
काचरुनति
मितकिस
लानभा१
धलरू१
नाखरू४

वाक्काक्शनया
वलसि
पखिहा
नलहा
मठकसून
मन्याथ
कगलहा
वर्तगतखला
धतनिय
थालसदूद
थालससल
थालस्यादाक

नगलसवाथाया
काचरुनति
मन्याथ
रूक्तिमीन
कगनेहा
दवदाव
यवाकन
मद्य
धतनकता
किसियावाक्काक्कीपीज
नडयावासल
पिपिन
पिपलामूल

सिपि
धतकहा
रू०
विलिसपू
मूर्तिनहा
दगमूल
गुगुन
निंव
आलस
लाहाव
पिरुला
धतचूडुयाठ
नियावर्तखस
तयावनक

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

किसिया उत्पल्लिभूदिन प्रथम

द्यालया उत्पल्लि

द्यालया सा तापकावथानि

द्यालया उत्पल्लि कल प्रथम

द्यालया श्रुत्यादि रुद

द्यालया थानिया च द्याल कल स्वता

द्यालया रुदनादि थतापकाव

द्यालया थतापकाव किन

द्यालया निविद्धादि थतापकाव

द्यालया श्रुदद्युष्टल कल

द्यालया श्रुप्रयद्या तापकाव प्रथम २

द्यालया कि पिहाव थिवन तापकाव रुद दूक

रुद रुलि द्यालया नियय तापकाव

नियय तापकाव द्याल सनकादि कि श्रुदिन पिहाव वना तापकाव

द्यालया स्मनरीठ मरि विद्याव

द्यालया मरि स्मनया विद्याव

द्यालया साध्य श्रुसाध्य दू ४ साध्य सा तापकाव ल कल प्रथम ३

द्यालया उत्पल्लि वल कल द्या तापकाव

द्यालया वल्लुल कल

द्यालया गन्धल कल

द्यालया आवल कल

किसिया सामया कनान जायल पूद्याल

किसिया वासलया यम सव वै थया कनान जायल पूद्याल

मसवका माहा उतया कनान जायल पूद्याल प्रथम ४

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय
 धर्मसागपकावद्यालया लभधनादिप्रकाशउपाय
 सागपकावद्यालया न्यायसीमादिनसागालकल
 घालयादातायकावगमकर्म
 लभदयकयासूक्तुदिद्वयलद
 लायाउलिघालसथनद्वयनिरूपण
 पक्कमश्वद्यालपक्कयायनीयस्वगायकावद्याय
 घालयात्रवक्त्यायथार्ग्ययागयाय पञ्च
 नानाप्रकावद्यालयाद्युतादि लभधनद्वय पञ्च
 वायुलभधयाविकारनद्यालयास्तन
 घालयावधनउपाय
 वधनद्वययानिर्णय
 घालयासिद्धिलक्षण पञ्च

घालयाउषधीप्रयाग
 घालहानकयाउपायनतायकाव
 घाललभधनयाय पञ्च
 दूष्टघालया लभधनयाय
 वातघालया लभधन
 पितृदूष्टघालया लभधन
 लभधनदूष्टघालया लभधन
 सामान्यघालया लभधनचूर्ण
 घालयालखनसागपकाव
 वललखनद्वय
 क्षमिनागउपाय
 घालयावीलकयाविधि
 घालवीलकयाउषधी पञ्च

5
कुक्यालनाङ्कयाताविधि
गीतं द्यालशवया क्कार्कवान् उपाय
विषनजोयलपूद्यालयाकल्क
गीततशवद्यालयाओषधी
द्याललानकयाधूप
द्यलयावर्ला
द्यालसनापनयायकल्क
द्यालयात्रापनयापाक
किन्नादिदूखवर्णयाद्युतपाकतैलपाक
दूखवर्णयात्रापनवूर्ण पत्र 10
द्यालयात्रापनवसक्किया
रुनिद्यादिपाकओषधीद्यालया

द्यालयाउनदयकयाओषधी
धर्मद्यालयाश्रुध्यायप्रथम 8॥
श्रुधद्वितीयश्रुध्याय 8।
श्रुंगवाजननगायकात्रद्यालयानिदानचिकित्साकना
मूनिनसद्यकतद्यालयाखाकाना
सद्यद्यालयानतायकात्रस्वरूप
श्रुगंठवर्णलकल
शनीवस्तुवर्णलकल
संयमसंयममुदिनकवद्यालयालकलकातायकात्र
संयमसंप्रवर्णवर्णनजायघूद्यालयालकल
किनियाश्रुगरुदनद्यालशवयालकल पत्र 11
श्रुनगायलपूद्यालयाश्रुवपातादिरुद
द्यालगर्भजायलपूनिघृष्टादिलकल

कि गिया क्रासमनी कवयाल कल

का कय कन छल मली सीथ मूग मल का गल मि पूकल कल

छ क मिन पूकया घालयाल कल दाता

छं उ लि स श क का कं पूकयाल कल

ला स दिक मिन पूक घालया विकानल कल

छं उ लि लावा वाव दिन लि दित काव मिन पूकल कल

छं उ लि लावाल काव मन पूकया विवाल

म मल्ल न स मिन पूकया विवान

नाव का गल पूकया विवान

का का र्थ्या दिथूत कावल सलाह न कवया विवान

कि सिया क्रासमनी कवया विवान पृ १२

ला स काय कवल नाल न कवता पन कन वया वद्यालया विवान मीन पूकया घाल सपाय वासल

पवित्र म कन यया वद्याल दयू विवान

वीया म सन कया व कन वया वन कदा वद्याल

कि सिया क्रास विद्याय स दिक या विवान

धत स य कतया विवान

स य कतया लया डीषधी

स य कतया द्युत तैला दि डीषधी विवान ११०

स य कतया लया लभना दिक कल डीषधी

सिंह द्याधन ल सिन कय पूडा वान का क डीषधी

द्याल सयया विधि मून दय क विवान पृ १३

सुया लुलि द्याल सपाय वासल

धलचकनमनीसीधचाकथूलिंपूकयावासल
नशालिंदिकमनीकेवयावासल
खसिपवतसपूखलिसलाखदिकद्यालयावासल
नलिंपूकावदवठुलिद्यालयावासल
वीयायसनदिकयावासल
सयद्यालयाहानकयावासल
तायूववठुद्यालयाउपाय
चाकलाकावठुहानगकद्यालयाउपाय
सयद्यालसंतालीपूतकयाविधि
ंतालीपूकाद्यालसपायवासल पद १४
धर्तसयद्यालयालकलविकिसानभूषाय॥
पूतवादि सयकतद्यालयाविणव नठना

सयकतद्यालयाविणव क्रिया
सयकतद्यालयावन्दनादिकल्क
गमुनद्यालखाय
हयाद्यालसपायवासल
नकापिरुनजायलयूद्यालयाकल्क
न्याकद्यालवाद्यालयूकेद्यालधतयालय
ममस्मनद्यालयाउपाय पद १५
ममस्मनयासंभिसगायलयूद्यालयावासल
किर्सिकिसिनदार्तसयाद्यालयावासल
संयाससखझादिगमुनपालाद्यालयावासल
धर्तद्यालयाकिल्क
धठुलिद्यालयाभूतिकम

धद्यालयाद्युत्तमपविधि
दूतानकयाविधि
रुक्मिणिदिवाद्यालसदूतानकविधि
धर्तसद्यकगद्यालयाविकेसाविधि **ब्रह्माय ३॥**
पूनर्वाद्यगससुहिनलीसकससदिकद्यालयाठना
भूगवाजमूनिनकाना
सलसुहिनलिसकससदीकद्यालयानताप्रकान **पञ्च ७॥**
मसडा माहाउतमसनलहियानदवद्याललकण
हिनलियाकयालकण
भूमकदयानकयकापशवलकण
संधिकुदायादाषलकण
भूकस्मात् नकप्रवयालकण

नकवृद्धिशवयालकण
नकदीगशवयालकण
नकवृद्धिशयावहिविकायलकण
द्याललयाथस नूतुलियमाललकण
सीधियासगमुकमयायविवानमतव **पञ्च १॥**
गमुनकतयाकाकाकिसिनकवासल १११
धर्तहिनलि **ब्रह्माय ४॥** दिनदिकद्याल **ब्रह्माय ४॥**
पूनर्वाद्यरुद्यादिपताजाताकिसियाद्यालया
लकणठना॥
मूनिनरुद्धमदमृगमिणपताजातकिसि
याद्यालयांरुदकाना॥
धधताजातकिसियायीष्मकालसलासदा
वतापनकायानवल्लखताठाननयायावि

यायाविकाजनवायुप्रकापश्याव
 किसियागनीनसद्योतशवयालकल
 वषकिलसपिरुप्रकापशवयालकल
 गनत्कालसतापनकायावपिरुप्रकापश्यावदाषशवयव ७
 निगिनकालसपिरुप्रकापश्यावदाषशयलकल
 (प्रमनजायलयद्यालयालकल
 धनविदाषनशवद्यालश्रकात्रविणषलकल
 जेमउतायकान
 केउलिसदिकविदाषद्यालयानतालकल * * *
 मर्मस्कनदिकविदाषद्यालयायतायकात्रलकल
 मर्मसंधिसजायलयद्यालयानतालकल
 नयायादाषनकालदाषनपक्कनयकमध्यपक्कद्याललकल

वातपिरुप्रकापश्यावकतालिशवसनिधानलेकल
 नकाप्रकापश्याविकाजनवलशवयालकल
 विदाषनकात्रय्यावद्यालशवयालकल
 कनयावगनवलुदिनयाविधान यव १२
 विदाषयाद्युनादिलप
 विदाषकात्रयवयायवविणष
 विदाषद्यालयाडोषकादिडयायक्रिया
 धनविदाषद्यालयलकलविकिसाभूधायज॥
 पुनवदिभूगनाजानयालकाखायाकठना
 किलियावैद्यगर्थिकामालधकमूर्निकाना
 वैद्यलकलनिर्भुय॥
 पृथिव्यादिपयकननिर्भुय॥

बृथिद्यादिपंचरुतयागुलानिर्लुप्य पद २०
 किं निनषट् वसनयाव दिला दाक वीज वाधयश्व
 वातपिरुल्लभयाप्रकापशक्यादिनविचान
 कडविधिरुतयानियागुलविचान
 स्मवजंगमयाविचान
 डीषधिलकल
 वनस्यनिलकल
 वानस्यलकल
 गुखियालकल
 किं नियागत्रीवसनसडत्यहि श्वयालकल
 किं नियागत्रीवसयागदिपंचवायूनवसडत्यहि
 प्राणदिपंचवायूयाथान

प्राणदिपंचवायूवसनवागडत्यहि श्वया पद २१
 प्राणदिपंचवायूप्रकापनवागस्विचान
 ल्लभयकापनवागशुद
 यिरुप्रकापनवागशुद
 वायूप्रकापनवागशुद
 सनिपातनवागशुद
 वातपिरुल्लभयाअधिसुन
 मधूनादिषडसनिवृपन
 षडसयाअधिसुन
 वसयाथताप्रकावश्रुहान
 वसयाविपाकनताप्रकाव
 वातपिरुल्लभयास्वराव

११२

वातपिरुल्लभयावसननसननकादिदृष्टि पृष्ठ २२
पृष्ठिद्यादिपंचमहाह्वगमध्वनादिषष्ठसयाश्रुधिसूत्र
षष्ठसयाविलेखलनागविलेख
षष्ठसयाश्रुहानवसनदाषयाहानिदृष्टिविचान
नसयावसनवातपिरुल्लभयाप्रकाशउपाय पृष्ठ २३
धनमध्वनादिषष्ठसयाविचान
नसयावसननागलभक्तियाउपाय
वातपिरुल्लभयासूत्र
श्रुमयासूत्रविलेख
विदाषयाविकिसालकल
किलियावैद्यवानवदककद्वललकल पृष्ठ २४
किलियाश्रुयुद्धयिषवीश्रुयायताश्रुगप्रत्यक्षविचान

किसियाश्रुयुद्धयिचिद्व
किसियादलाविद्व
किसियावलविचान
किसियागमनविचान
किसियादूनदलनमनसवलविचान
किसियाउरुममध्वमश्रुधमविचानवलया
किसिनकीलनूत्यादिनमदनयास्कवलविचान
किसियानवधकचूर्कधकवलविचान पृष्ठ २५
किसिनशानवयकयानाविचान
किसियास्वशावेनजायलपूर्वल
श्रुहाननजायलपूर्वल
किसियाश्रुहानयताप्रकाश
किसियागनीनयुद्धिद्वस्तप्रकाश

किनियासामान्यवलस्वता
 किनियावलावलसायावक्रियायायविचार
 किनियाद्वलपतायकान
 किनियावगपनीका
 किनियास्वतायकानसत्व
 स्वतायकानसत्वयाकर्म पृष्ठ २४
 किनियाद्वगध्वदिसत्व
 किनियाद्वगध्वदियाविचारपनिसन
 माकिरिश्यावदिनजपनिसासंयागनकिमिव्यक
 किनियात्राकसादिसत्वविचार
 सूदजानिकिसियाविचार
 वाक्कलजानिकिसियालकल
 कविजानिकिसियालकल

वेधजानिकिसियालकल
 वाक्कलजानिकिसियाकर्मसुल
 कविजानिकिसियाकर्मसुल
 वेधजानिकिसियाकर्मसुल
 सूदजानिकिसियाकर्मसुल
 धयताजानिकिसियाआहारादिकर्मसुल ११३
 धयताजानिकिसियासात्म्यलकलनतायकान पृष्ठ २५
 प्रकृतिसात्म्यलकल
 नीलसात्म्यलकल
 नससात्म्यलकल
 किनियाप्रकृतिलकलविधायकान
 किनियासाधुश्रुसाधुद्वुसाधुप्रत्याख्य
 धयतायकानवाधियालकल

किनियास्तु दृग्भादिग्रीवया विराग पद २८
किनियाग्रीवसमूह्य ननसकसोपकार
ऊउलिक्तसवाकदयूव
मांसपसीकमल
हिनलिदागल
सायदागल
मस नियदागल
उयषदागल विमिलसायागल
कागयात्राकतिनीयस्वगल
किनियासाहल ग्रीवसल कल स्वगल वयस्व
किनियाममममगल जिमकाअकसा
हासवेवनसा दिष्टापियस्व

साहल कस्यास्तु नपगल
थलिभ्रंगप्रेहभनसंयक शवकागवप्रिकशयि
धतभ्रंगलदार्ढीनकाचूकधकशयिव
किनियाग्रीवसमगमनियायताभ्रनिगमया
कालविचार
वसनादिष्टुलिमउयाविचार
धखूउलिमउयास्वताप्रकारलद
धखूउलिमउसवलावलविचार पद २९
खूउलिमउसवातापेहलक्ष्मयाप्रकायविचार
खूउलिमउसनिदाषयाहानिद्विदिविचार
किनियावालदृष्टजीवनादभ्रवस्तु
स्वताप्रकारवयसयावलचललकल
वयक्रमयावर्षलकल

व्यक्रमयावद्विनिष्पन्नं पृष्ठ ३०

किसियाथोवनवयक्रम

किसियाथोवनवयक्रम ४।

किसिउत्पत्तिश्चिवयाउत्तिवनयानिर्धुय
जंगलवनयालकल

यू अन्तर्पनामवनयालकल पृष्ठ ३१

वनविनिष्पन्नं गडत्पन्नश्चिवयालकल

साधनवनयालकल

किसियाअतिलकलथताप्रकाश

तीक्ष्णअतिलकल

मन्दअतिलकल

समअतिलकल

विषमअतिलकल

किसियावलथअलकल पताप्रकाश

किसियाग्रीनसथादअग्निथापताप्रकाश

समपाचकअग्नि

मन्दपाचकअग्नि

विषमपाचकअग्नि

तीक्ष्णपाचकअग्नि पृष्ठ ३२

११४

धनयताप्रकाशवलसाथावषदासकिसिचय

किसियाव्याधिनताप्रकाश

अस्तिचाननगाययू व्याधि

दाषनजाययू व्याधि

धनयकाशव्याधिनिनिमिदित

किसियादवतायावलिपूजाहोमादिविया

माहाडतयालकल

किसिवेशयालकल

धनदक्षिणेशलक्षणदि विकित्सा मूल्या ३३॥
पूनवदि मूला न जानठ ना पृथिव्यादि किसिया उत्पत्ति पद्य ३३
मूनिन काना कृपा किसिया उत्पत्ति निमि लिन काल निवृत्त पन
कूथु सिसान काल न वृत्ति लक्षण

निमखलक्षण
काष्ठालक्षण
कलालक्षण
मूकलक्षण
मूला न पलक्षण
मास लक्षण
पक्ष लक्षण
मूयन लक्षण
वर्ष लक्षण

सत्यादियुगलक्षण
चतुर्दश नूतन काल
वक्रायादि नवादि
मूला कानादि सुष्टि
पृथिव्यादि पंचमाहात्म्य सुष्टि
पंचतन माया सुष्टि
चतुर्विध रूपा मम सुष्टि पद्य ३४
भान्यादि चतुर्दश वीहि सुष्टि

पद्य सुष्टि
उसजायल पृक्ष सजायल
दल सजायल पृक्ष सजायल
प्राणी दकास मनूख (प्रक्ष)
पद्य दकास कि नि (प्रक्ष)
मनूख या नि (प्रक्ष)
किसिया नि (प्रक्ष)
नवीन या लक्षण
पंचविंशति तत्व
गर्भ सदयि वया लक्षण
गर्भ याषट्का सत्त्वन
गर्भ तिलि लक्षण
जीपू नूतन पं स का विवा न

गर्ह्यापनिपाक
 गर्हसर्गजायलपूयाकालनिर्णय
 गत्रीप्रयागर्गरुदनेदवता
 हृन्तुल पय ३७
 आमायातुल
 नृद्वियाधनिद्रुपण
 मधूनादिवस्यहण
 गत्रीनसवागदिलक्ष्मयाविचान
 सात्विकराजसतामसस्वताजागयालि
 सात्विकस्वराव
 राजसयास्वराव
 तामसयास्वराव
 प्राणादिपंचवायू

प्राणादिपंचवायूयातुलकर्म
 वायूयादवतास्वतुपनिद्रुपण
 गत्रीनसमठयास्मन
 गत्रीनयावृधिवदिसफनिर्णयधु
 वृधिवदिसफधुयास्मन
 गर्ह्यायूधिनिमिहिनमधूनादिषट्पनस
 गर्हध्यानलक्षण
 माकिसियागरुलक्षण पय ३८
 माकिसियाभ्रुलक्षण
 माकिसिवाकिसिडी, सयागयाविकान
 गर्हिनीशवक्रामाकिसियाध्व
 वाकिसि, माकिसि, नपूसककि, सि, शयिवयाविचान
 माकिसियागरुस, चान, कोदयिवयाविचान

११७

15
 माकि सियागर्ह्युसि शयिवया विचान
 कि सियागनीनयो वलु विचान
 कि सियाधूसि वादत अंगहीन अधिक अंग
 विकानया निर्लुय
 कि सिवा वयिवया वछ
 10
 धतमा कि सियागर्हलकल अक्षाय ॥
 धून चोद पालका खा मूनिया क अंग वाजन ठना ॥
 दिना अनय ता जात कि निया डत्य लिग थधक ॥
 रुद्रादि य ता जात कि सिया विना प्रडत्य त्यादि प्रम ॥
 मुनिन बाजा काना ॥
 ना किय का मय छ
 5
 माकि सि अउमती शयिवलकल
 अउमतीया वछलकल

पव ३१

पव ३८

अउमतीया राव
 अउल्लु पलकल
 अउकाललकल
 गर्ह्युवगलकल पव ३२
 गर्हनिधयया यलकल
 गर्हजागलकल
 गर्हलीलकल
 गर्हयामास कालादि निर्लुय
 गर्हधानलकल
 गर्हयादूक विलकल
 गर्हपेनिनामलकल
 गर्हपूछिमासादिलकल पव ४०
 गर्हवृद्धि निर्लुय

15
जिमनलादयानं किमिवाव्यमरूया
गङ्गात्यलिलकल

किनियागनीनयाअंगदवगा पृष्ठ ४१

किनियापिहसम्बन्धमाहसम्बन्धगुल

किनियागनीनस्वरूप

जीवस्वरूपलकल

किनिवाक्यिवयावस्था

वाकिनिवयिवलकल

माकिनिवयिवलकल

वाकिनिमाकिनियासंज्ञागवलसंज्ञाहान

वायूयावगननानाप्रकाशगङ्गलकल

वर्षाकालसगङ्गीयावायूयावगननदाप्रशक्यालकल पृष्ठ ४२

ग्रीष्मडावर्षाडाश्रुतनसपिरुहानिश्रयाववायूरुद्धिदाष

गन्तकालसग्रीष्मकालसपिरुयाअधिकविचार

किनियासत्वाकावलकल

किनियागनीनयालकल

वनसचाठकिनियाविजयलकल

वनसचाठकिनियासत्त्वलकल

वनसचाठकिनियावस्था

मृगजानिगजयालकल पृष्ठ ४३ ११३

वलमदूकिनियावलदयक

किनियावलावलसायावडीषधदिकर्म

किनियाकर्मविचार

हमन्तमाससकिनिलहियविचार

हमन्तमाससमाकियागर्हसदवयाविचार

हमन्तकालसवडाकाकिसियालकल पृष्ठ ४४

मन्दजाति कि सियालकल
 मन्दजाति कि सियासलकल
 मन्दजाति कि सियालकल
 वसन्तकालसर्वका कि सियालकल
 रुद्रजाति कि सियालकल
 रुद्रजाति कि सियालकलसल यन् ४७
 रुद्रजाति कि सियालहियतालकल
 सैकीर्णजाति कि सियालकल यन् ४७
 सैकीर्णजाति कि सियाविणलकल
 सैकीर्णजाति कि सियासलकल
 सैकीर्णजाति या जिमयातारुद
 सैकीर्ण कि सियामगान्नसलद

सैकीर्णजाति या द्विष्टुपनमूतायकावशद
 द्विष्टुपसैकीर्णजाति या लकल यन् ४७
 धनकाभ्रपमवियामतससैकीर्ण कि सिया जिमयातारुद
 गेनमयामतसमृगदिष्टुताजात कि सि
 नाजपूयामतसमृगदिष्टुतारुद
 रुसिवात्रीयामतस जिममूतारुद
 धयताजाति कि सिया खदामसठा कानयाकानदाधनिर्णु
 धदास कि सिचयमसठा कानथकायादाध य
 गुर्वधनलकल
 नूत्यायनवधलकल
 नूतिवधवधलकल
 किनिसमसयापिलादिनहाकवर्णु शिवलकल यन् ४७
 वायूडासमडाथल्लिगलपानहाकवर्णु

15
 किमिवाचूवर्षुशयिवलकल
 किमियालसिहाकूवर्षुशवलकल
 किमियालसिगायूवर्षुशवलकल
 हाकूथाकूशवयाविचार
 काठवर्षुथाकूशवयाविचार
 10
 पद्मपत्रधर्मायथाकूशवयाविचार
 थाकूयावर्षुनेमिथाकूयाविचार
 किनियासियूवर्षुमिखाशयिवलकल
 यानमिखाशयिवलकल
 वाचूमिखाशयिवलकल
 काकयाथमिखाशयिवलकल
 कयातवर्षुमिखायाविचार
 5
 विषमाकूविष्पाकूयाविचार

कानश्याववृवकाकिनियालकल
 विकटजानियालकल
 अदिसादयिवकाकिनियालकल
 किनियागनीवनरुर्किवलतिववयाविचारपु ४२
 हीनाश्यालकल
 लयंकनश्यावजायपूकिनियालकल
 दाननसयूकश्याववृयिवयालकल
 अदूदानशयीवलकल १११
 मियूदानशयीवलकल
 मानदनशयिवलकल
 मागजानिकिसियालकल
 मकूनाकिनियालकल
 एकदनाकिनियालकल

15
समदत्त कि सियाल कल
नय दानदले क पूहायावववल कल
दान थ आकायायाल कल
मान गरी व श डाल कल
मान ल म दाम लयाल कल
10 एव ल स म ल म श यिव ल कल
त्र ल्या य दी घा यि श यिव ल कल
लहि मा वे स न कि सि रि म रि श यिव ल कल
वल व न कि नियाल कल
सा वि क जात कि सियाल कल
5 कि निया सर्व दाम आ नो य श यिव ल कल
आ कालि कि सियाल कल
कामली कि सियाल कल

वृद्धि व न कि सियाल कल
कि सिय निस ग मृ प व द्या दित कल स्वता
प्रका ति व स न कि सिया रु द्वा दिय ता
दूर्व सि कि सियाल कल
धर्म पे ता जात कि सिया ग र्द ड त्या हि व र्धु र द्या दि
कि सिया प्रका छ व ल म धा व ल दूर्व ले
सा वि की र्द द्या दिन स्व ता प्रका र्द य क ति
कि सिया काल व म न मे थ ना दि व द्वा न द्या धि ड त्या हि
कि सिया द्या धि व स न च त ना दि वि द्या न
कि सिया ग री य या स्वा रा वि क र्द ल
ग री व डी क या ग्र य त न स्व रू प प्रका
व्र ना व ता दि कि सिया कू ल स जा य ल य कि सि

गजनाभ कि सिया लक्षण
कि सिया नीव जय न शयिव लक्षण
गल पात का सा क कि सिया लक्षण
सलक्षण दव धूल का कि सिया
ना जाया रहल

पू धन धन जात कि सिया उत्पलि नृणा म ॥
पू नवा द न जान क ना कि सिया या पा दि प्र मान ॥ प ॥ १२
कि सिया जीव ना दि प्र न क ना
अग्नि सा मात्म क र्सा न लक्षण
व ना च व या क ठ वि धि मृ छि
रु व न र्ज ग मा दि निर्णय
कि सिया म धून विवान
गर्ह सात्मा लक्षण

गर्ह वृद्धि लक्षण
गर्ह य छि सा का न ल
गर्ह स स र्वा ग य वि धू न शयिव
कि सिया ज न
कि सिया स न लि पृष्ठ शयिव का न ल
कि सिया पि ला द व व ल स म्मा दान व स न दा ष ड ल लि
वा त पि ला दि वृद्धि प ॥ १३
न का दि धा ठ वृद्धि
वा त पि ला ष म्मा या य था जन
स म धा ठ या ठ ल
वि न म धा ठ या दा ष
मा ह र्ग कि सिया
पि ह र्ग कि सिया

११८

15
 10
 5
 अस्ति संधि निर्लुप्य
 वायापविमान
 दन्तसंधि अक्षदण
 चवणस्सनयासंधि
 सर्वज्ञिन अस्ति संधि निर्लुप्य
 नखनिर्लुप्य
 किगियागवीनसर्पचदणक्किद
 नामादिलकण
 किगियासर्वज्ञिनसागलडानीयष्कास
 सागलडाभूयखसंधि
 कणलुनाठीदयिव
 मम्मरुद पणज४

15
 10
 5
 20
 25
 30
 गलदिडासकाकनलतमम्मरुद
 दाषस्सनलकण
 आमस्सन
 रक्षस्सन
 यिरुस्सन
 वातस्सन
 याणादियंयवायूयास्सन
 याणादियंयवायूयाकर्म
 मांसयणीलकण
 मांसयणीयासंख्या
 किगियागवीनसदवतानिर्लुप्य पणज५
 आमालययामध्यसवाधिलकण
 मलसूययाहानिरुद्धि

६

किं गियासाताप्रकृति
 गत्रनीयाप्रसात्रादिकर्म
 गमनविचार
 किं गिदाढावधानिवलकल
 किं गिरुकडुढावधानिवलकल
 किं गिदायाववनिवलकल
 किं गियासाधसानकिवलकल
 वाकालगयिवलकल
 साधननयवसुकायिवलकल
 कूथसानकिवयालकल
 नसानयिवयालकल
 धूनद्यासकासहालिवयालकल
 कपालसानकिवयाविचार

लखगानिवलकल
 साधनलखयिष्ठायिवलकल
 मिश्वानसायिवतिसिथिवलकल
 नाडवयाविचार
 मिश्वयासंधि
 मदनालीविचार
 क्रसयातसानकिवविचार **पद्य ७६**
 निष्ठासविचार
 किं गिरानिव
 क्रियातसानकिव
 संधूनादिकामयच्छ
 मलमृगनालतिजाविचार
 वायवहनार

पिरुवहनली
 धूमवहनली
 सर्वाग्निनकिगियाग्रीनसजि
 मरुगलडाक्रयडा
 माकिगियाविलषनाली
 दीनवहनली
 धननालीविचार ११२
 किमियासर्वाग्निन
 साहलयाविचार **पद्य ७७**
 संधियानाम
 संधिस्तनसवागपिरुकरु
 नथियानवाधिशयिव
 संधिसयालशयिवविचार

सचयालह नमम
 कालान्नसंयालह नमम
 संयुक्तु किनियागनीनसलावगशागलख्यपिडा पव ३८
 धर्मसिपनीयाप्रमान
 माकियामासपनीयालकल
 विविधमासपनी
 किनियागनीनसपवदलकिद
 किनियागनीनससकयकावकुवि
 भामसंख्या
 गनीनलकल
 गनीनयुधि
 नूधिनदिपनस्यनडत्यलि
 मलमूयगालनीवलकल

गनीनवध पगज २
 मदयासगधिलकल
 मदहायिवस्तनकस
 मदहास्यवयिवलकल
 किनियानामजिमकाता
 गजप्रसंसा
 धनकिनियागनीनयाडत्यलि लकलमदि
 निर्धुयनूयय २॥
 पालकाखामूनिनगमादिकार्यनाजाकाना
 गमादिकर्मयायताकिनियथयथास
 श्रुतिकर्मयाययाताश्रुतिस्तपन
 श्रुतिकर्मयाययातागस्तु
 श्रुतिकर्मयाययातान्यायायतनमीसक्य

यू

गन्धकर्मयादानदिवदक्षियवासनचुष्टुदि
 गन्धादिकर्मयातिथिनक्षत्रादि
 गन्धाधिवासन
 दाषणान्यथक्षाम
 किं सिन्ना नयास्क ~~यदु~~
 किं सियाजीरसगन्धपातनयाय
 दाषविक्र
 किं सियाजीरसगन्धपातनयायस्मन
 गन्धवैश्यालकल
 हिपिकाययाविचान
 रुदनयाग्रयालयाविचान
 द्यालयाउलदाषविचान

द्यालदयकयाताम्रुलप्रमाण
 वरुत्रेयादिद्यालदयकयाविचान
 द्यालवययताडोषधादि
 मर्मस्यलपातनविचान
 यिरुनदूष्टशवनकलकल
 श्लेष्मनदूष्टशवनकलकल
 वायूवनदूष्टशवनकलकल
 सनिपानदूष्टशवनकलकल
 सदाषनूधिनलकल
 रुधनकलकल
 यिकायनवयुलिनकलकल
 यिकायमनवयुलिनकलकल

120

15
 श्रुतिप्रकाशद्विधाउपाय
 प्रकाशद्विधाशुलनावनकमतवकस्रयाविधान
 श्रुकस्मात्प्रकाशवशवयाविधान
 प्रकाशवयाजोषधादिउपाय
 10
 श्रुतिकर्मयाय
 मिनपूकथासद्युतादिलप
 श्रुतिकर्मयायमतवकायाविधान पृष्ठ ७१
 श्रुतिकर्मयायमतवकायाश्रुतिकर्मनदाप्रविधान
 मर्मसिधिसनाठीसमनपूकयाविधान
 5
 किलियागत्रीनस्रुतिकर्मभालनस्कन
 किलियागत्रीनस्रुत्यलकल
 धर्तगम्रादिकर्मविधि

श्रुतवलादिकर्मविधि
 साहानरूत्यादिस्थाक्यालसमतयमतव
 मतवस्कनसमनपूकानदाप्रलकल
 मिनपूकयायद्यालयालकल
 श्रुतिकर्मयायुल
 यालयावधवर्तुलकल
 दूद्वलकल
 श्रुतकश्रुतिनदाशुलनावदाप्रलकल
 मनपूकयाद्यालसखयउपाय
 धर्तकिलियाश्रुतियाकर्मश्रुतयाग १०॥
 पुनर्वादिश्रुतनाजानमूनियाकठनाकिसिया
 वयातगिरवन्त्यादिनन्याकानद्याल
 दयिवधयाउपाय॥ पृष्ठ ७२

मूनिनकाना
किनियाप्रतिकर्मविधि
मन्त्रसप्तयाक्काकिनियादाष
किनित्रययाप्रकानजिमस्वता
नकलादाक्काकिनित्रययाउपाय
किनियाप्रतिकर्मयाययास्मन
किनित्रयवलसकिनिचवलरुयिवउपाय
पक्षवधनविचार पृष्ठ ३३
वधनसदाषविचार
यन्त्रनकिनित्रययाविचार
यन्त्रवधनमसिद्धस्मननिर्णय
किसिकीलदयक सियाविचार
यन्त्रदयक सियानिर्णय

किनिकिलयन्त्रदयकयातातिथिनक्षत्रादिनिर्णय
किलदनगासिमाथायूजा
वृक्षाधिवासनकर्म
यवयूजादिस्रस्तिवाचनविधि
गालवृक्षयायूजाविधि
खयलसियायूजाविधि
सिमायतावलिदानविधि
सिमागलसथाकावधेयनपालयमन्त्र
मूथासिकलमीनसिमायन्त्र
सिमादनयातादिगविचार
सिमागलकुलवलसगद्ययाविचार
नाकददासिमातयथाय
यन्त्रकीलशतकविचार पृष्ठ ३४

१२१

यन्त्रयाकीलयालकलयमान
प्रयादगवन्धनयन्त्रनयययाविधि
प्रकारान्कनयताप्रकारवर्ध
यन्त्रसयथाक्षाकिगियाप्रनिकर्मविधि
धर्मउरुमयन्त्रविधि
मध्यमयन्त्रविधि
कनिष्ठयन्त्रविधि
यन्त्रसूपनविधि
कीलसूपनविधि
यन्त्रकीलयास्नानादिपूजाविधि
वलिदानविधि यन्त्र ३३
श्रद्धापदयन्त्रपूजा
सनत्कुमानादियन्त्रदवगापूजा

वेद्यनयन्त्रयानमस्कारप्रदक्षिण
वेद्यनयन्त्रकर्मयाथ
धर्मकिमिच्छययातायन्त्रकीलविधि श्रद्धाय ११॥
यूनर्वादर्जगनाजनमूनियकदेनो
संयमसनानाप्रकारमस्कारमूनशवद्यालयालकलयविकिस्ता
मूनितकोना
गल्यस्तनलकलय
वाक्कगल्यलकलय
दानूलगल्यलकलय
गल्यल्यवगललकलय यन्त्र ३३
मर्मस्तनरुदनगल्ययाद्विष्ट
प्रकारान्कनयनगल्यवगललकलय
स्तानाकनयनगल्यवगललकलय

गगनलवलायाउपाय
 गल्यविद्वयाय
 गल्यविद्वयायमरुताविद्वयायउपाय
 कउलिजायलपूगल्यवलायाउपाय
 लासदिकगल्यसियउपाय
 नागीसजायलपूगल्यसियउपाय ~~यउउ~~
 नलीजालसवाकगल्यसिययाउपाय
 साहानसवाकगल्यसियताउपाय।
 कोससवाकगल्यसिययाउपाय
 घालकपशवयाउपाय
 छिदस्मनसवाकघालखयमतव
 छिदस्मनसवाकघालखय

कसुस्मनसवाकगल्यसियउपाय
 काकगल्ययाउपाय
 काकघालपिकाय
 गल्यघालसद्युतादिलप
 नखगल्ययास्मान
 किनियाकासखययन्त्रगल्ययाआकान
 किनियाकासमर्मस्मननिद्रूपन ~~यउउ~~
 मर्मसविद्वयालकण
 विद्वताठितघालयायन्त्र
 यन्त्रयाजानिआकान
 यन्त्रनहिपिकाय
 घालसद्यलनखय

15
मूर्ध्ववन्दाकृतिवर्त्तकवयाउपाय
वनाहकलुधयाउलिवर्त्तकवयाउपाय
सामान्यवर्त्तकवयाउपाय
नानाप्रकारगणसूक्तवयाविद्यान
महामर्मसंगसूक्तवयाउपाय पद ३२
आसनादिस्मृतिसंगसूक्तनकवयायाधिशयिव
गसूक्तनकयावताकन्याकद्यालयाउपाय
किन्नादिद्यालसखयवासलचूल्
कडाद्यालयाचिह्न
वृणल्लधनउपचान
वृणल्लधनडोषध
वृणसंगमुादिकर्म पद १०

वृणयायतिकर्मविधि
वृणसमन्वयथाग
प्रथागयायउलिमन्त्र
गल्याद्याललानकताकिं सिलाखसखयक
लाखनधकायावकिं सिनकवस्तु
धर्मकिं गियागल्याद्यावल्गदिउपाय नूध्याव १२॥
पूनवदिमूनिन नूगवाजाकाना
विदधिलगयालकण
नगाप्रकारविदधिलग
विदधिलकण
समूक्तनरुदनकाताप्रकारविदधि
विदधियाउत्पत्ति

वातविदधिलक्ष्ण
 धिरुन विदधियायु विचार
 धिरु विदधिलक्ष्ण
 (क्ष्मयाकनानजायल्यु विदधिलक्ष्ण)
 (क्ष्मविदधिलक्ष्ण पृ ११
 सनियान विदधिलक्ष्ण
 विदधियासाध्मसाध्विणसिययताकिनियाका
 सक्तन विचार
 क्तन विणषन विदधिन नानावागउत्पलियायु विचार
 विदधियाचिकित्सा
 विदधियासामान्याचिकित्सा
 वातविदधियाचिकित्सा

धिरु विदधियाचिकित्सा पृ १२
 कीलनययाताउपाय
 (क्ष्मविदधियाचिकित्सा
 सनियान विदधियात्रसाध्वनिमिहिनचिकि
 त्सा मूनाल
 अर्गउ विदधियाचिकित्सा १२३
 अत्यक्तन विदधियाचिकित्सा
 अत्यक्तन विदधिया कश्चिद्विक्तन हिपिकाय
 विदधिनोगसुकि सिलहिययाउपचार
 धन विदधिनोगयालक्ष्ण चिकित्सा अथ १२॥
 पुनर्चिद्विदधिनानाजानमूनियाकटना पृ १३
 किसियागत्रीनसुनानाप्रकाशनाठीवणदय
 धयालक्ष्ण चिकित्सा गथधक

मूनिनकाना
किणिआनाठीवणनताप्रकार
मनीननाठीवणयालकण
मृगनुनाठीवणयालकण
वातपिरादिविणषनाठीवण
वातनाठीवणयालकण
पिरुनाठीवणयालकण
मृगनाठीवणयालकण
संनिपातनाठीवणयालकण
नाठीवणयालकण
नाठीवणयासाध्यासाध्याविचार
प्रकाररुदननाठीवणयासाध्यासाध्याविचार पण १४

निर्दामवणयालकण
नाठीसडत्यकिशुववणसमूहनयाविकिसा
किणिआगनीनसवातपिरककसन्निपातअलि
घातनयप्रकारननाठी
धनाठीपनिसलकण
ककुसाध्यानाठीलेकणकनरुदन
नलयकवलकाटमणुलाकारमृधामूरुड्डमूरु
नाठीयालकण
धनाठीपनिससाध्यासाध्याविचार
नाठीविकिसा
नाठीयागद्यादिकालकर्म
नाठीयाद्यालसगयवृणुयालकण
नाठीयालयाडोषधुडिका पण १५

नाठीवलालयन
 नाठीवलाणमधनडोषधी
 नाठीवलाणमधनडोषधी
 नाठीदूष्टवलाणमधनडोषधी
 नाठीदूष्टवलालयनडोषधी
 प्रकाशान्नननाठीवलाणमधनडोषधी
 नाठीवलापनडोषधी
 नाठीवलायागाद्यनापणडोषधी
 साध्यनाठीवलायाविकित्सा
 नाठीवलायाक्रियिकायउपाय
 क्रियिकायाद्यालसख्यकल्क
 नाठीणमधनादिनकायादिकाथ

नाठीवलायाग्विन्यादिनेल
 पत्रिपक्कनाठीणमधनगीर्वलादिवर्हि
 नाठीवलापनाथनेल
 नाठीवलायाअग्निक्कम
 अग्निक्कमनिमिलिनगीवष्टकादिडोषधीगुटिकायवत
 मिनपूतकागुलियादग्धविकित्सा
 धननाठीवलायागम्राग्निक्कमापिचान १२४
 अथवानाठीवलायागम्राग्निक्कमायमजिवधम
 वलायादाषरूक्कनिमिलिनडोषधविधि
 यवतगनादिगुटिका
 अंजनतगनादिगुटिका
 अथनाठीवलायादानक्कमडोषधी
 रुसदयकउपाय

15
 रुक्मपाक
 नूनि युजा यादावपाकका काय
 द्यालसरुक्मनख्यविधि
 व्याधियोवलडीषधीयावलसायावडोषधीदिय
 वासलनश्रुत्यनदग्धरुलसोवगसवनविधियाय
 10
 वललयनविधि पृष्ठ ११
 कीनादिवललयन
 नूनिमदादिनेल
 न्यायध्यादिकाथनेल
 पकावाकननन्यायध्यादिकाथ
 5
 काथपानयास्वविधि
 नाठीवलगुद्वार्थलंगलकादिनेल
 नूनालसजायलपूनाठीवलगुनक्रियायनिमिलिननेलपाननेलायम

नाठीवलयावासलयादावलसकिनिनकवसु
 धतनाठीवलयालदलविकिसाश्रुध्याय ३४
 पूनवदिश्रुमनाजानमूनियककना
 किसियागनीननाठीग(१५)उत्पदिशुलधक पृष्ठ १८
 मूनिनेवातादिनाठीकाना
 नाठीउत्पलिलदल
 किसियागनीनसकगलननाठी
 वातपिलवहादिनाठीउत्पलि
 नाठीयाथानि
 अषियाशुदनधउत्पिपुय
 नाधिरादियाथानिनिपुय पृष्ठ १२
 किसियागनीनसमसादिवपुनिपुय

किनियानकादिपिकायतामात्रप्रमाण
 द्विपिकायथायकि सियाविधान
 द्विपिकायमनवकि सियाविधान
 नकनपयप्रकात्रलकि सियागत्रीनवधावययाय पद ८०
 किनियानत्रीनसत्रागवि (ग) स द्विपिकायविधि
 वीनढालनावकिनियानत्रीनसद्विपिकायविधि
 नकाविश्रवणदियदहादि
 नकरूस्किनिमिहिनकिनिठायकप्रमाण
 गमुादिकेमाकिप्रतिकर्म
 किनियानत्रीनसस्सननिर्णय
 किनियानत्रीनसस्सनरुदनिर्णय
 नाठीयाविशगलकण ८१

नकनियावपिकायताविधि
 किनियानत्रीनसयनवधनविधि
 नाठीपत्रीका
 नाठीवधकिया
 नाठीवधविकित्ता
 नाठीवधसकिनिलहियउपवात्र १२३
 किनियानत्रीनसकवियाप्रमाण
 किनियानत्रीनसद्यालयाकिपियउपाय पद ८२
 वधयासूदासूदविधान का ८२
 निनायासमूहनिर्णय
 निनावधउपाय पद ८३
 किनियानत्रीनसनिनायीनयमान

यू

पादनागसगिनावधयकार
 जिनादाष
 सिनाप्रक्तिनिर्गुथ
 किनियाननीनसदहसधि
 श्रुत्तियमाल
 धनहिपिकाययाविधि
 हिपिकाययाद्यालसिलउपाय
 धननाठीवलयागिनावृहनादिविधि
 पूनवदिश्रुननाजानमूनियाकठना
 किनियाननीनसश्रुवदनागग
 मूनिनश्रुवदनागयालकलकाना
 मनाप्रकोनश्रुवदनागयाउत्पहि

श्रुवदनागयालकल
 मनीनश्रुवदनाग
 मगनुश्रुवदनाग
 धयासाध्यासोध्विविवान
 श्रुवदनागयाविकित्सा
 दन्त्यादिघटलप
 उदद्युतमदन
 धनश्रुवदनागयालकलविकित्सा
 पूनवदिनाजानकठनादातस
 मूनिनकाना
 दातसकिदयूदातहायूवलकल
 दक्तपतनलकल

15
दन्तनक्तिहायवल्कल

ध्याउपाय

दन्तसिलउपाय

दन्तलभधनउपाय

10
ओषध्नादिपाक

काधनदन्तसिलउपाय धन७३

दन्तवतनवापननेल

पठालादिपाक

सूवहादिकल्क

5
मैकूषादिबुलु

काकाल्यादिनेल

गणकादिमांसनसपाकन

दन्तपतनभागसुकिस्तिनकयाउपचान

नेलादिपान

धर्मदन्तवल्कलविदिकित्साग्रन्थाय१७॥

पूतवदिर्गनाजानकना दन्तदाष

दन्तदाषशुवक्काकिसियाविकानलकल

ध्याविकित्सा

धन७३

१२३

काकलखनदोतसिलधलकस्तिनहाय

षठ्शुवासलयापानयास्क

गतधीनद्युगनदन्तसवन

धर्मदन्तदाषयालकलविदिकित्साग्रन्थाय१८॥

पूतवदिहर्ननाजानकना नागीकिन्नरिनया

नागीकिन्नरिनशुवया

मूनिनका ना
 गमुवधनमसिसगन्धकर्मयादानचिन्नरिन्नशयिव
 रुक्मिनदिवदगा
 थयासाध्यासाध्याविद्यान
 गिवासीखाकगल
 उपगिवादातुकि
 सश्यालद्वनगिवातिष्ठय यन८८
 अतिनकाटुदिशुलनावनागशयिव
 नकाकथयाचिन्न
 नाठीघालनमृतिदिववक्त्रियवासल
 मधुकादिचुलु
 समूदरुणादिचुलु

नकादायलानकनिमिलिनमृगमृगलसकिस्त्रिणयक
 नकाविकाल्याद्यालससचनयायतामृष्टकुदिकाथ
 अथवाअग्निमर्मयाय यन८९
 धलनसंयुक्तदीनपान
 मर्मगतनिनाविकित्सा
 सूनातानक
 गामुदीनवधनउपाययादानदाप्रशयिव
 धनगिवाकुदनविकित्सातदलमृष्टाय१२॥
 पुनर्वादिमृगनाजनपालकाख्यायाकठना
 किगियामर्मस्तनमसिसनाठीपनीकायायमजिवधक
 नाठीपनीअयायनिमिलिनमर्मस्तनकाना
 मर्मसंख्यागतक्त्रियकस
 मृगरुदनमर्मयामृष्टलादिप्रमान यन९०

15
द्यालश्यान किं नि सियु मर्मया विवा नस्य पिदव

कुविरुदनदाषश थिवल कल

कालाने नया लन मर्म नीय कस

वेठु चकन मर्म पिय खूता यव २१

धलि मर्म सिया व कि गिया व वेथन वि कि सायाय

धन मर्म धिया य मर्म य २० ॥

यून वदि अंग ना जान ठना विष ना गया वि कि साग थधक

मूनि न विष ना गया ल कल काना

लोमानु नी क विष या ल कल

विवा या विष ल कल

लोम विष स्व नाय का न

गर्त व नी मा कि नि न द्या मान या व्या फ कल था डि सप्य

वृद्धि कन न मर्म म विवा या मर्म सन थिव धया कन वू व क्का कि नि विष न दिग्ग श थिव

धक्का कि नि वा या विवा न ल कल

स विष नि विवा ल कल

अव क्का दि विष ल कल

वा क्का दि लु मि ल कल

लु मि या र्ग ध व क्कु प नी का यव २२

लु मि का लु मि

थे लि की लु मि

वा ति का लु मि

स की लु मि

लु मि वि ला ग न वि कि सा

विष य का प रु रु

विष व ग ल कल

१२१

विषयासाध्यासाध्यविचार
विषयाधूपादिविकित्सा
तगनादिप्रसपान
खिर्चाकाकविषद्यालयाविकित्सा
खिर्चाकाकपिष्ट्यादिपिष्ट
शूद्रकादिपिष्ट
कृष्णदिपिष्ट
रुनिगालादिलय
दीनादिपान
खिर्चाकाककिणिनकयाउपचार
शूद्रनीकसवाठविवायाविचार
धनविषयागयालक्षणविकित्सा

विकित्साधूपाय २१॥ पद २३
पूनवदिर्गगनाजनकिसियाविरागनर्गसमर्मविराग
कना मूनिनगरीनयाविरागनर्गकाना
साहालयासमर्मविराग
समर्मानाम
गरीनयाउर्द्धरागसमर्मास्तनविचार पद २४
सद्यपानहनसमर्म
धनपानहनसमर्माविराग
किनियासर्वांसमर्मपत्रीका
समर्गरागसगमुकर्मयायमतव
पकशलसागमुकर्मयायविधि
बलकदनप्रकार पद २५

15
वृक्षकान्तकुदनयावृंठलप्रमान

वृक्षवृक्ष

वृक्षविश्रवन

वृक्षगीवन

गुणसीवन

सूचीप्रमान

संगमसंगसुकनद्यालयासीवन

सीवनयायमनवद्यालयाविचार

वृक्षसमृद्धिदि

सीवनादियाथूवेद्ययाघनीका

थतममवृक्षयासीवनादिविधिविकित्तात्रुधाय२२॥

पूनवदि वृंगराजानठनायुद्धसनानाप्रकारंजायल

यूयाविकित्ता॥

मूनिनकानासंगमसनानाप्रकारंवाल्शक्याउपाय

मर्मस्तानसंगसुकनद्यालयारुद यत् २३

सद्यपालरुनसुकनवृक्ष

कालान्नयालरुनसुकनवृक्ष

गसुकनवद्याउपद्रव

गल्यमर्म

गल्यवृक्षसमिधुमायूयाविचार

वेगुलकनमर्मसूयधि

समृद्धिनिगतकिउक्तसउमर्म

मर्मगुण

मर्मगदमूर्ध

प्रकारान्नवृक्षप्रयुक्तानमर्म यत् २१

१२८

गिनादिमर्मसद्यालश्लनावमथानंकिनिसिथ
 धयानिमिदिनेगिनादिसकनयायमनव
 मर्मयासिद्धिर्नसिद्धिविवोत्र
 न्वयथनागसगम्नादिकर्ममनव
 गमुकर्मधनकावद्युतादिसवनउपाय
 गमुकर्मनजायलपूद्यालयविद्यादिशुद्ध
 गमुप्रयागसकगलकावेद्ययालकल
 वेद्यनकिनियावनावलपनीकायाय
 धनगम्नादियालयालकलविकित्तामर्मयाग्रध्याय२३॥
 पूनर्वादिर्गवाजानमूनियकठना
 किसियागनीरसमिनप्रकद्यालयालकलविकित्ता
 मानिनकानाग्रनिदग्धद्यालनतायेकात्र २४

दाहयाथानिनियकानाप्रकात्र
 अग्निदग्धयाविकित्ता
 दाहगान्धनसूखादकनहाय
 मधूयन्मादिलय
 नृश्वत्कदिलय
 लाध्वादिकल्क
 जठामास्यादिनेल
 पद्मादियुलु
 घृतादिलोपनलेपन
 धनग्रनिदग्धद्यालयाविकित्तालकलग्रध्याय २४
 पूनर्वादिर्गवाजानमूनियाकठना
 विमिलसावकयाकनानजायलपूद्याल
 यानामहगाधोयधयालकलविकित्तागथ

15

10

5

मूनिनकाना लूनालकल
 मूंगशदन लूनायानामनीयद्वि पञ्च २२
 लूनायाविणमननागलकल
 लूनायावर्तु
 लूनायाविकित्सा
 हनिदादिउटिका
 प्रयोपुनीकादिलय
 लूनायाद्यालमानययाथमन्त्र
 धमन्त्रयादवनायाध्यानमन्त्र
 धर्मलूनायाविकित्तालकल मूध्याय २७॥
 पुनर्वादिमूंगनाजानमूनियाकठना
 किनियागनीनमविषकीटादिगथदगधक

मूनिनकाना
 विषकीट्यालकल
 किनियागनीनमविषकीटादिजायलचिवलकल
 विषकीट्याविकित्सा
 विषकीटनजायलपूद्यालसकीलनयावहिपिकाय
 पिकायाठलहीससूदासूदविवात्र
 गीतलजलसक
 खदिवादिलय पञ्च १००
 पविषक
 गतकोतद्युगनमूध्याय
 मूकानादिक्वाथ
 धर्मविषकीटद्यालयालकलविकित्सा मूध्याय २७

१२२

धूनवर्दिभृंगराजानमूनियाकठना
 वीनकाकयालकलविकित्सागथधक
 मूनिनवीनकाकयालकलकाना
 किगियागनीनसवीनकाकयालकल
 वीनकाकयालनदियिकाथ
 वीनकाकयालयाविकित्सा
 नस्तिश्रादिनयानयास्क
 धनवीनकाकयालकलविकित्साब्रूयायशा॥
 मूनिनकिगियागनीनसभृंगपर्यगयाविचानकाना
 भृंगयाप्रदगनामभृंगुलादिप्रमान यव१०१
 मुखप्रदगसूयनस
 दनप्रदगदग

मुखप्रयप्रदगसूयस
 नगप्रदगसूयनस यव१०२
 सफविगतिनिप्रधप्रदग
 कलुप्रदगसूय
 ग्रीवाप्रदगनीयस
 हृदयप्रदगकस
 उदप्रदगनव यव१०३
 शसनननिसगप्रदगगुयम
 गनीनसभृंसपीयसप्रदग यव१०४
 गलकननिसप्रदगकयपि
 मधप्रदगसनीकि
 पूकप्रदगकस
 हस्तादिपंचदगभृंगयामंपूर्वप्रदगयामंखा॥३२

धन किमियायदन्मध्याय २८॥
 पुनर्वादिना जानकना किमियागनीनस
 रुदनादिगन्धकर्मयायगागन्धलकलगधधक
 मुनिनकानागन्धयानिर्लुय
 निक्षिपगन्धयाविवात्र
 उरुमगन्धयाविवात्र यय १०३
 दगविधगन्धयाविवात्र
 गन्धाधानगन्ध ४०॥
 सिद्धिदंष्ट्रादिप्रवर्णीगन्धस्वगा
 न्यायागन्धनीयक्ति॥
 धनसुमखधमलानावनानागदयू
 खवधमगन्धकर्मयाय
 गन्धयाक्रिया॥

धनगन्धादिनिर्लुय
 मूथदन्निर्लुय
 वृद्धिदिदन्
 दन्धयादिद
 नूनमूर्खादिदन्धविकल्प
 दन्धयाउपक्रम यय १०३
 दन्धयासूयादिकर्म
 दन्धउत्पत्तिनिर्लुय
 वातिकदन्ध
 नक्तात्यन्तदन्ध
 दन्धयाप्रमान
 मकूनदाष
 एकदन्धादिनविवात्र

१००
 १३०

15
श्री ३ ग ॥ ७ ॥ अथ नमः ॥

मूथ दूध नागयास्तु नदिनीययायवा ॥ ४ ॥

मूथ वमथूनागयाय

मूगनाजानपालकाखामनियकठना ॥

10
मूनिनवमथूनागयाउत्पलिकाना

वमथूनागनताप्रकात्र

वागिकवमथूयालकलविकित्सा

पेलिकवमथूयालकलविकित्सा

प्राप्तिकवमथूयालकलविकित्सा पत्र १

5
सन्निपातवमथूयाविवान

आगनुदास

वृश्चिकादिरुक्कलनवमथूनागशयिव

सयविषकीटादिरुक्कलजायलपूवमथ

वमथूनागसकिनियामुखशयिवविवान

वमथूनागयासाध्यासाध्याविवान

वमथूनागयाविकित्सा

डोषधोदिकुलु

मुखपलप

सविषवमथूयाडोषधो

गाल्यादियिगु

पटाल्यादियुष

गालिवादिकवल

तनूयादिकवल

निन्दकादिकवल

रूक्षदल्लादिकवल

हनिद्रादिकवल
 सीधूयान
 जिखितिलिनादिमीसत्रस यग २
 वमथूनागस किजिनक उपचाव
 धर्मेवमथूनागयालकल विकित्सा **ब्रूधाय** ॥
 प **ब्रूथ** ब्रूतीसाननागयाविकित्सा
 ब्रूतीसाननागननाप्रकात्र
 ब्रूतीसाननागयाउत्पलिलकल
 दाषाश्रुवमृलिकाश्रुवब्रूतीसाननागयाश्रुसाध्यविद्यात्र
 वानिकब्रूतीसाननागयालकलविद्यात्र
 नकातिसाननागयालकल
 दाषानिसाननागयालकल

मृलिकारुदकलजायलपूब्रूतीसाननागयालकल
 ब्रूधगमनाश्रुवब्रूतीसाननागयालकल
 ब्रूमानिसाननागयालकल
 समसुब्रूतीसाननागयाश्रुवसुखता
 ब्रूतीसाननागयालकलश्रुदश्रुदिनविद्यात्र
 ब्रूतीसाननागयाविकित्सावातादिन
 ब्रूतीसाननागीयाश्रुदश्रु
 ब्रूतीसाननागयाविकित्सा
 जलपानविधि
 वातादिब्रूतीसाननागयापृथक्पृथक्विकित्सा **यग ३**
 जलसकादि
 दूर्वादिकवल

१२८

15
10
5
धियं गदादि कवल
पिष्टाद्यादि कवल
रवादि कवल
निन्दुकाद्युल्लु
श्रुतीसात्रागस कि सिनक उपचान
श्रुतका श्रुतिकन सम्वर्तन
अधलादि कषाय
धर्मश्रुसाध्यादि श्रुतीसात्रया सामान्यलक्षण विकित्सा
श्रुतसमस्त श्रुतीसात्रया पृथक्कन दामसमूहानलक्षण विकित्सा
श्रुतिविषादि पिष्ट
पिष्टानि सात्रया लक्षण विकित्सा
वलकादिनस्पान

मृगदिमांसराजन
नकाति सात्रया विकित्सा
कृगद्विपात्र
आल्यादनादिनक उपचान यगध
श्रुथकलाति सात्रया लक्षण विकित्सा
विकटकादि कषाय
दधिल्लुदिश्रुतीना पचान
रथादिगमदिश्रुतीसात्रया सामान्यन विकित्सा
धर्मश्रुतीसात्रया गया लक्षण विकित्सा श्रुत्याय २
पूनवदिश्रुगमजानया लकाखयकठमा
कि सिनदूसनयानमूकगधशलाधक

दूषमदनकनयाननकपिलवायुप्रकापशय
 मूर्च्छादिविकार
 मदनजग्वयालुकल
 ध्याविकित्सा
 लभमयादिप्रदह
 प दध्मादिनिबूह
 काष्ठनिर्वापन
 वदनादिपिलु
 श्रमगतकादिकवल पञ्ज
 हिंयुमाहुल्लभदिपिलु
 पियालादिपिलु
 खज्ञानादिपिलु

स्वकलकल
 मदिनातानकविधि
 लृगवनादियनियान
 कीनट्टकयाकषायशान
 गलमांसयावसवान
 स्वकलशववलसनकडपवान
 लावतिलिनादिमांसवस
 धातिमरुलनसयाभ
 गाल्यादनादिशान
 श्रमवपानयास्क
 धर्तदूषमदनादिवायुलकलविकित्साग्रन्थाय३॥
 पुनर्वादिनाजानमूनियकठनाकिनियाहललभमीनामप्रा

१२२

ग

मृत्तिनकानल्लगण्णीनामनागयाउत्पल्लिकलपय ३
 हल्लगण्णीनागशलनावकिनियायच्छविकान
 हल्लगण्णीनागयाहृद्धयाविकित्सा
 सिन्धुमधूनादिउपवान
 पिथल्यादिकवल
 नल्लुलीयकादिकवल
 लक्ष्मणानकादिक्वाथपान
 नल्लुलीयकादिक्वाथ
 तालीसपयादिपाविनलग्णमूत्रपान
 गन्धकादिप्रलप
 मूत्रलग्णधनार्थकठजादिबुधु
 हृत्कादिहजनापवान

लल्ल्यादनादिराजन
 सापदवल्लगण्णीशलनावन्नसाध
 धनल्लगण्णीनागयाल्लकलविकित्साश्रुयाय ४ ॥
 श्रुथकम्मतिनीतनामनागयाविकित्सा
 कम्मतिनीतनामनागयाउत्पलि
 कम्मतिनीतनागकवकाकिनियायच्छविकान
 धकाकिसियासर्वकर्मनिषध
 धयाविकित्सा
 यथकालननदीतीरादिसाकिसिठायक
 पल्लवानपूखलिसहायक यथ
 वृत्तादिनपुष्टुवनसजययन
 श्रुदानविधि
 मूत्रापानयास्क

15

10

5

15
षष्ठिकानादिरुजन

दूष्मादिपान

धर्तकस्मातिनीतनामनागयाविकित्साब्रूधाय॥

पूनवदिर्गुगनाज्ञानमूनियकथना

सुषादियाविषनआनद्यासयागलाखरूत्यादिनया

नगाठानजायलपूविषदाषयाविकित्सा

मूनिनकाना।

मसियाक्कामनूखाकायरूत्यादिकिनिगलसकथमतव॥

गकूनपनिसननानापकावनदूछजनपनिसनरुकराअ

दिविषप्रयागयायुविवात्र

विषप्रयागयायुक्कामनूखायालकल

धसद्वेयपनिसनविवात्रयाय

किनियाअन्नपानादिक्कनगठगालारूत्यादि
युफयाकावतय

विषनागरुलनावपनीअयायउपाय

माऊनिवायसादियातावलिदियावविषया

पनीअयाय॥

काकादिपनीअ पञ्च

आय्मादिपनीअ

नूनियागदपनीअ

धूमगन्धादिपनीअ

धर्तअग्निगतविषपनीअ

अथजलगतविषपनीअ

जलसकथयायापनीअ

१३०

जलशुद्ध्याविगमनपत्रीश्च
वकनसदसविषयपत्रीश्च
आसवसविषयपत्रीश्च
जलपानसविषयपत्रीश्च
द्यासेपानसविषयपत्रीश्च
सूर्ययाविषयपत्रीश्च
विषसहृदादिलक्षण
विषार्कशिवकाकिणियाविक्र
मूथविषदाषनानिनीविकित्सा
कपित्थदिबुल्लुप
मूथविषयाद्यालसलयातवासल

विल्वादिशृगद
वत्सनाशुदियाग
मूविषसविषादियाग
नानाविषदूषयामत्रिवादिपृथक्थाग यत्र २
ओषधयामात्रायमान
शृंगशदनविषदाषपत्रीश्च
कोष्ठगतविषरूक्कनिमिहिनदधिघृतयूक्त एवमयनक
मूत्रपत्रीकिंशुकोदिनसपान
विषार्ककिणियासाध्यासाध्यालक्षणविकित्सा
विषार्कयाविक्रादिविकान
मूत्रिषविक्क
जिह्वासमृशलसासाध्यसिय

विषाह्याः श्रमादिविकार
विषाह्याचिकित्सा
मधुर्गन्धदिवृष्ट
कूटनगादिवासपलप
श्रमाकादिनसपान
तगनादिपिण्ड
तिन्दूकादिपान
पलासवीजादिपानपिण्ड
नस्यकर्म यत्न १०
रुविदादिकवल
रुविण्मादिमांसनसपान
विठ्ठगदिमूजन

विषयातिविध्यादूर्ध्व
मूलजदंष्ट्रकृत्तिमेस्वगा
धपनिसचिकित्सा
विषयासिग्नानाश्चाय ॥
नृथजीर्णविषलक्षण
दूषीविषयालक्षण
विषयादृष्टिकित्सविचार
विषवृद्धिलक्षण
विषदूषधातुलक्षण
कायादियाकविषलक्षण
विषापद्यव
विषवगक्रसायकार

मगान्नवनप्रिविधविषवग
दूषविषवगलक्षण यत्न ११
यथमविषवगलक्षण
द्वितीयविषवगलक्षण
तृतीयविषवगलक्षण
धनचिकित्सविषदूषकिणिसिय १३१
विषदूषयासाश्चसाधन
मद्यागादिजीमधनरुप्रीपताका
धजवाद्यलपलपावकिणिकनवाद्यधाय
वैद्यनस्नानयादाववाक्कलपनिसनस्वस्ति
वावनयादावदक्षिणहस्तनकुण्डलाव
विषनागनमन्त्रपालप

विषह्नमन्त्र
नकुलवनादादिमांसनस
उषधादिसंहान
पिष्ट्यादिनस
विषदूषितकिनिनचकीथियकमतव
तेलयास्तनसद्युतप्रथाग
समस्तविषयाक्रिया
पलत्तानपूरुलिसविषदूषकिमिष्टायक
हविद्यादिविषनाननपिलु
पद्ममृत्तिकाप्रलय पद्म १२
वन्दनादिपानप्रलय
जलसक

मधूकादिक्काकनसक
सिद्धकादिरुस्म
रुस्मपाकविधि
गिरुलादिसंवपन
मृगदकाल
विषसूत्रप्रवाध
विषसूत्रप्रवाधाञ्जन
कूकमादिशूलय
मृदीकादिनसपान
विषध्नमांस
विषयाप्रथमकालसनकमांस
मध्यकालसनकमांस

15
प्राक्तकालसनकमांस
वनाहमांसमत्स्याशजन
नानापकावशाजनादि
भक्ष्यादनादिशजन

10
कृगमृगादिपान पृ 13

प चन्दनादिनचन्द्रादयनामशृगद
नकाद्यशृगद

शृदादिगुटिका

गुटिकाप्रयाजन

5 वाक्यमरुमाकियायानिसगुटिकाप्रलय

मणुलीसर्पनकाकडोषधी

कृष्णसर्पनकाकयाडोषध

यवदानूनादिनशृगदकल्क

पिष्यत्यादिशृगद

मधुकादिशृगद पृ 18

यागकालसुधजकृत्तदूदलिपताकावाद्य

धशृगदनलपनयाय

सोपलुनामविषहृत्तशृगद

132

धतविषारुयाक्रियासाधन

धतदूषीविषयालकलविकित्तानामाध्याय 11

पूनवदिशृगनाजामूनियककना

विषनदिश्वविद्धविषयालकलविकित्ता

मूनिकाना

विषदिश्वलकल

विषविदलकल
दिग्बविद्ययाविक्र
दिग्बविद्ययाविकित्सा
भवनादिगत्याणधन
श्रमलकादिकाथ
सामवल्कादिलप
विषयगमनवसपाक यण ७
विशुलत्वमदिवलाणधन
हनिदादिबुभुगिद
दिग्बविद्ववण
दिग्बविद्ववणयाविकान
दिग्बविद्ववणयापकापकविवात्र

वणयापकापकविक्र
श्रपकविक्र
नकमाकल
सूपकविक्र
गमुकर्म
दूर्गधर्मासवलाणधन
वणयासूद्रासूद्रगधवर्षुविवात्र
उलानादिविवात्र
धर्गविषलदिग्बविद्ययाविकित्सा लकलश्रुधायण
पूनवदिवाजानमूनियककनाकिसियाविषनदुषित
सयमसविषयुलुगमुनदिग्बविद्वविषवगपीठिन
याविकित्सा मूनिकाना यण ७॥

15
विनकाकयाढाताप्रकात्रकात्रल

सर्पदक्ष्याविविधद्रुप

सर्पनिपीठितलकल

सर्पनिपीतलकल

सर्पदक्षडद्वलितलकल

प सर्पयाविषरागलकल

किगियागनीनस विषनगयश्वयाविवान

सर्पयापताप्रकात्ररुद

दर्वकिनयालकल

दर्वकिनयाविषवातलकल

मउलीसर्पयालकल

नाजिलयालकल

प्रताकीसर्पयालकल

धयताजानसर्पयाविषयताजान

सर्पनकाकउलिसमययाविक्र

दर्वकिनसर्पकाकयाविक्र पञ्चम

मउलीसर्पनकाकयाविक्र

नाजिलसर्पनकाकयाविक्र

प्रताकीसर्पनकाकयासामान्यलकल

धयताजानयाविषनकउल

धतस्त्ववनविषलकल

सर्पकाकयासाध्वलकल

विषपीनयालकल

विषपीतनश्रुतीसायादिनागशयिव

133

मंथलीसर्पकाकयाश्रुजन
 किनियोकहतीयविषयाचिकित्सा
 विटगादिकल्क
 दक्षीकनसर्पकाकयाविनचन
 नाजिलसर्पकाकयाकषायपान
 नकदाषयाजलसक
 सर्पकाकनालगावतयाकिनियाविकान
 धयाचिकित्सा
 सप्ययाविषनेमालसदिठावमालस्याकचिकित्सा
 नाजिलसर्पकाकयामनःनिनादिश्रुजन
 सप्यनकायानसंनिपातश्वया
 श्रुधकलुमदिश्रुजन

नगसर्पजनतयाकाकिनियाजलसकयदह
 धतसर्पदक्षयालकलचिकित्सा
 विषयूकवशुनयानसविषकिनियालकल
 विषाज्जितकिनियालकल यगुश
 धयाचिकित्साकर्म
 विषघ्नश्रुजननादियाग
 पुकात्रान्ननयाग
 पियत्वादिशुटिकाश्रुन
 गर्कावादिश्रुजन
 श्रुजादूवादिश्रुजन
 धतविषाज्जितयालकलचिकित्सा
 श्रुधविषपीगयालकल
 धयाचिकित्सा

१३४

15
 10
 5
 जलसकिगिरुयक
 मृज नयदहादि
 मृदालिप्रवालादिधूप
 विषनसंयूक न्याकिगिननाउननावविषद्यालधाय
 धयाविकानलकण
 धयाविकित्साकर्म पञ्च २२
 कपित्कदिपान
 विषयूकयाविकानलकण
 धयाविकित्सा
 विरुलादिवसि
 घृतयदहादिक्रिया
 विषघ्नजवगालिशजन

विषनमूकशवक्रास्नानयास्कविधि
 वलिहामादि
 स्नानयास्कनाकलग्नसगयडोषधी
 पयगवादिसामग्री
 वेद्यनजलाग्नयसवदावकलग्नजाढावमन्त्रपालप
 स्नानमन्त्र पञ्च २३
 स्नानधूनकावस्वस्तिवावनकिगियूजा
 धनसर्पदष्टादिविषत्रागविकित्सा मृध्यायत॥
 मृथकृक्कित्रागयाविकित्सा
 कृक्कियालकण
 कृक्कियाश्रूकान
 कृक्कियावल्गुदिविवान

15
कनरुदनश्रुसाध्यविष्णुटक

ककुसाध्य

विकादिदूष्टनिधिसविष्णुटकशूलनावकिणिसिधिव

लूगादिविकान

सर्पदंष्ट्राकियाथनायाय

प किणियागनीनसविकानयाविचान यय २४

नसादिधामुदायविचान

विषाययूकादिहृदु

विविधधातुत्याग

पणुयाविषदाषमद्विचान

पणुयाकस्तुटिकामागविचान

धयाकाश्रपमतनविकित्सा

प्रथमादिक्कवियरुदविचान

धयासाध्यामाध्यविचान

श्रुसाध्यविचान

काकाणुदिमहाविष

धयागमुकमादि यय २५

धगस्तुटिकायालकलदिश्रुत्याय १०॥

श्रुथश्रुपवादवद्विधाय १३५

श्रुपवादवद्वलकल

उग्रदानूलादिनिधिनकपसकिणिवयमतव

दूष्टनिध्यादिसचयाक्काकिणियादाष

सुमूकलदिसचयाक्काकिणियागुल

धगश्रुपवादवद्विधाय १॥

पूनर्वदिवाजानठना
पूर्वविद्वनामद्याधियाविकित्तालकल
मूनिनकाना
पूर्वविद्वद्याधिलकल
ध्वद्याधियांश्रुसाध्यादिविद्यान पृष्ठ २४
वसन्तकालसकिनियाक्रीगानिद्रूपन
वसन्तकालसक्रीगानिद्रूपन
ग्रीष्मकालसकिनिपनिसक्रीगानिद्रूपन पृष्ठ २७
ग्रीष्मकालयाक्रीगलमाढावग्रामसथाठकिसिसिय
श्रीवर्षाकालसकिनियावनक्रीगानिद्रूपन पृष्ठ २८
वनक्रीगमुखलमाढावग्रामर्थापनिकिसिसिय पृष्ठ २९
गन्तकालसकिनिपनिसक्रीगानिद्रूपन

गन्तकालयाकिनियाक्रीगलमाढावकिसिसिय
रुमन्तकालसवनससखक्रीग पृष्ठ ३०
ग्रामसथयावतयाकिनिरुमन्तकालयासख
क्रीगलमाढावसिय
गिगिनकालसवनसक्रीगानिद्रूपन पृष्ठ ३१
गिगिनकालयाशगलमाढावकिनिसिय
अथवामसितसानानापकावनयाधिशय
धर्तलकलनपूर्वविद्वद्याधिक्षय
ध्यानिसिहिनभदागवधककिनिवयमन्तव
पीयदासपूलकिसिचयमन्तव
धक्काकिनिकदाविनम्वासापदप्रपतनदोषरय
पदप्रपतनदोषयात्रुत्तल

माकि निपनिसनयप्रयथादगत्या पूर्वविद्धकि निभालन
रुतीयावउथादिभानसंयुक्तकि निवय
पंचमीदग्ननसंयुक्तकाकि निवयमन
पंचमीदग्नसयथाकाकि नि सिंयू
वनविलासलमादावकि सि सिंयू पव ३२
प माकि निपनिसाक्रगावचाठग्रमसहसुनूं सिंयू पव ३३
पूर्वविद्धकि निग्रमसहसुनूं नसामनव
अयं श्रयकि निवयमनव
पूर्वविद्धमानसत्राग
अने पूर्वविद्धभागलकलश्रुथाय १२॥
यूनवदिनाजानमूनियकठना
विस्तारान्नदण

मूनिकाना
विसर्पनागयानिदान
विसर्पनागयास्तन
ताकालशलनाव विसर्पनागयाश्रुसाध्व
विसर्पनागसवायूयकापशयिवलकल पव ३४
वातप्रकृतिश्रयध्व १३/३
पिरुप्रकृतिविसर्प
विसर्पनिजायलपूकक्रियाविवाव
श्रुसाध्वविसर्पियाविवाव
श्रुनिविसर्पमानकल
करुप्रकृतिन (श्रुसाध्वकाप
(श्रुश्रिक विसर्प

१५ निपातिकविसर्ग
 विसर्गसक गद्वल विचार
 वलसम्बन्धयथागशयिविचार
 मर्मसंज्ञायल विसर्गसमाध्व
 १० र्निपातनकतनजायलपूज्ययथसमाध्व पय ३३
 ध्यावागादिदाप्रसियाव विकित्सायाय
 धनविसर्गनागयालकल श्रुध्याय १३॥
 पुनर्वादिनाजानकना
 ददयस्तुलीनागगधधक
 मृनिनकाना
 ५ श्रुत्यसत्त्व कि गियाददयस्तुलीनागशयिव
 कि गियानगलदाय्याविचार

ददयस्तुलीनागश्रवका कि गियाधध
 विकान धक्कत्रसाध्वसिय
 धनददयस्तुलीनागयालकल श्रुध्याय १४॥
 पुनर्वादिनाजानकना वालकानीनागयालकल गथ
 मृनिनकाना
 वालकानीनागयाउत्पत्ति
 वालकानीनागयालकल
 ध्याविकित्सा
 वालकसकडिकवयानजायलघालयालकल विकित्सा
 वालकवलसकृमिदवयाविकित्सा
 वलखनकाश्वावाधपनिसर्मासलधनपलप पय ३४
 किउंसादि लधनपलप
 सूनसादि लधनपलप

पिपल्यादि (मधन प्रलय
 लाकादि प्रलय
 कमि (मधन उषध
 प्रपूनादि नैल
 धन कमि नागया विकित्सा
 प वालकाणी नागया सद्यव (मक विकित्सा
 कालाती ग रलना व वालकाणी मूसाध
 धन वालकाणी नागया लकल विकित्सा मूधाय १७॥
 पुन वदिना जान मूनिया कदना
 मधु कानी नागया उत्पलि ग (धधक
 मूनिकाना मधु कानी नागया उत्पलि
 मधु कानी नागया लकल
 मधु कानी नागया उत्पलि कानल

नक पितादि नूति घात नवलादि विकान पय २१
 हूटि गादि विचान
 पिरु प्रका पया विचान
 नक प्रका पया विचान
 सनिपान दाषया विक्र
 मधु स्कन सु नाना दाष विक्र १३१
 कछन मूगयाय
 मधु कानी शव क कि निया विकान यथा
 धन मधु कानी नागया विक्र
 मूधधया विकित्सा
 माकि निना पलातक
 मधु स्कन संगत (की गद्यु गन सक
 सव गि घटलक

15
कीनट्टादिभूयः
उद्वन्नादियलप
सजादिकाथनमदुसिल
खठिनादिकाथनमदुपत्रिसक
यक्षीमध्वादिलप
नलादिप्रलय
भूतिद्यातादिव्याधियास्वद यक्ष
जातीपयादिभूतेल
एलादिबलाणधनलप
काण्ठट्टादिनेल
सजादिवृष्ट
बलयकालन

स्वदनधूपनादि
मूलादनादिराजनापवा
धनमदुकातीवागयालकविकित्ताग्रुवाय ॥
भूथहसुवागवागयाउत्पलि
हसुवागवागयाविकान
ध्वयाविकित्ता
भूनिर्मथादिडोषधी
स्वदादिनगसिंघनादिदूधन
द्युतमंदादिस्वद यक्ष
(गधूमादिपाकसक
एनलादिस्वदन
भयाञ्जन

कनधूपन
घृतादिमस्य

सूत्रापानविधि

कौमल्यल्लादि राजना पञ्चान

धनं हस्तं ग्रहं वा तत्राग्या विकित्सा भूष्यां य ॥

प नूथरुस्मान्मथितनागध्याय

हस्तामयितनागयालकलध्वनागश्रुसाध्व

ध्वयोनिदानश्रुता

धलिविकनकसकुकु सिथिवसिय

श्वखूतानिदाननकिजिसियू दिनया विद्यान यल४०

ध्वनिरुक्तात्मधित्वागयाविकृवल्लक्षणब्रह्मय १८॥

यूनव्वादेनाजानठनाउल्कलुकनामया नागयाविाकत्सा

मूनिनकाणा

उत्कृष्टकनामवागव्याधियाउत्पलिकांन

ध्याविक्किता

धृतवसादिसक

वायूहनल्लदिस्वद

अत्यंगदिक्रिया

(अनाकादिनाजीखद

स्वप्नादिमांसवसपोन

उद्धृच्छाति नैल

नक्कोक्षदिमांसत्रसपान

वह नाह मांस न स पो नु

सा ध्वगुलिनागं सकेदाचित किमिनमलमृगयाक

वैष्णवसंस्कृतशैलसाधुसाधु

नसः।

136

15
ब्राह्मदिवायूयायकापनवाविशूयविचान पत्र ४१
ॐ द्वियनिनाधनडदावरुशय
१०
लक्ष्मयकापनयाडसुसुपनागदिशय
पिलयकापनपाधुनागदिशय
विदाधसनिपागनददुआदिननागशयिव
वगनाधुशुधिसुन
वायूयासुनूपगुलनिर्लुय
धनडलेकुकिनागयालकलविकिसा नूध्याय १२ ॥ पत्र ४२
शूयवातगतिश्याधियानिनुपल
वातगतिनागयाडत्यहिकात्रल
वातवाधिनानीयानिदान
धयाविकिसा

प्रातःकालसुश्रासवपानयासुविचान
यवादिधूप
सऊनसादिधूप
ककटादिधूप
जीवनादिधूप
मनीयादिजून
हिंवादिप्रत्यजन
नकाश्यादिकाथ
पंचमूललैकाथदिशजन
धनवातगतिनकलवाधिविकिसा नूध्याय २० ॥
यूनवादिनाजानदना
मन्यायदुमयलिसाधुलकलगधधक

मूनिनकाना

मन्याग्रहवाधियाउत्पलिकानल यग ४३

मन्याग्रहवाधियाविक्र

धयाविकित्सा

उष्णकनसक

प मर्दनादिउपाय

उपायद्व्यादिष्वद

व्रीक्षादिककलय

गाल्यादनादिशजन

तेलनस्यादिउपचार

धर्ममन्याग्रहवागयालकलविकित्साग्रध्याय २१॥

पूनवादिनाजानकना

मदकीलशवक्तकिगियाउपायगधधक

मूनिनकाना

मदकीलयालकलधयाविकित्सा

गमदूष्मादिपान

पंचमूलादिवसकाथ

कलनादिराजन

सूखगयादिउपचार यग ४४

मधूनवृंहनादिउपचार

राजनतथ्यलदि

मददाषमदाल्यलिनिर्लुय

उपद्रवनमलहावननावमहावननाहायकउपाय

गूदूगाल्यादनादिशजनापचार

१३२

धर्ममदकीलयाउपायब्रह्मय २२
 पुनर्वादनान्नाननानाउपवात्रन
 लहियानकगग(धशुलमूर्निकाना
 कगशयिवयाकावल
 द्युतादिविलपन
 काकात्यादिकवल पृष्ठ ४३
 सुधवलक्रिधननादिकवलनक
 (मकीनपान
 मत्यादनादिराजन
 जलचरादिमांसनकउपवात्र
 सुधनकयाउपवात्र
 किगियाब्रवस्तुदिविचानयाकावउपाययाय

धर्मकगयालकलविकित्साब्रह्मय २३॥
 सुधवलकीलध्याय
 वलकीलयाविक्र
 ध्याविकित्सा
 नैलद्युतादिपान
 मयूनादिमांसवसपान
 मत्यादनादिराजन
 मृगमटकादियवसराजन
 वलदतनावर्सममादिकर्मसजाजलय
 धर्मवलकीलयालकलविकित्साब्रह्मय २४॥ पृष्ठ ४३
 सुधल्लभारिपनाध्याय
 ल्लभारिपनयाविक्रलकल

15
लक्ष्म्यादिपन्ननद्याविशयिवलकल

नैथ्याविकित्सा

उष्णकावादिशश्रुंदि

यवसादिराजन

प लक्ष्म्याविकावलत्व (दाषविधादि शलनावडयाथ

सर्षपादिनेलार्यग

धनैलक्ष्म्यादिपन्ननागयालकलविकित्सा **ब्रह्माय २७॥**

पूनर्वादिवाजानठना

नवग्रहयादाषनमनःसितापश्वयाविकित्सागधधक

मूनिनकाना

नवग्रहयादाषनमनःसितापश्वयावनानायाविशयिव

धयाविकित्सा **यग ४०**

कालकदल्यादिरुक्कल

गन्तव्यादिरुक्कल

यवसादिरुक्कल

मावात्वगादिरुक्कल

उदकयवसादिरुक्कल

रत्नानकादिरुक्कल

कदनीरत्नानकादिरुक्कल

ब्रह्मनकादिरुक्कल

मुख (गधनयका

धनैलक्ष्म्यादिपन्ननागयालकलविकित्सा **यग २७॥**

पूनर्वादिवाजानठनागलकागीनागयालकलवि

कित्सागधधकमूनिनकाना

१४०

15
गलकागीनागयालकल

गलकागीनागनकवक्रकिसियाविकानलकल

गलकागीनागशयिवयाकानल पृष्ठ ४८

धयाविकित्सा

10
सहाय्यग

द्युतसक

गलकर्मयायविचार

गलकर्मयायमनवयाविचार

गमनगमधन

मधुक्षिपदिपाक

5
भूशनादिगापन

वकाहादियादाकनयलप

गलनिवर्धन

कूमादियादाकनतलनिवर्धन

गलविद्यान

गलसुकुन

नाचनादिक्वाथनतलप्रकाशनयाय

नखवागमदिनिर्धान

मूत्रादनादिशजन

नखयामल्लस किमिदवयाडपाय पृष्ठ ४२

नखस किमिदयिवयाकानल

वलसस किमिपिकाय

कषायकल्ललप

नकमांससजायल किमिवलसनपिकाय

किमियावलुदिविचार

किमिपिकायाद्यालसपूर्वाकाप्रकारवासरुगय

15
 10
 5
 प
 मृसाध्वसायावकात्रादिकर्मयाय
 किं निनपत्रिणमादिमयात्क
 किं गियावलसायाववलनापनयाय
 वलनादिविणषन
 वलनादिप्रकात्रलकिं गियाचनलतलसदाषशयिव
 नकपिरुकरुवायूधलिमूढावकिं गियाचनलतलस
 नगययाकावतलकाणीनागउत्पलियाय
 हिलाहासिखातदवधर्थिपव्वतवनाकसचनलपान
 तलकाणीपलुतिनानात्रागशयिव
 धनतलकाणीनागयाचिक
 थयाचिकित्सा
 चनलतलसद्यालदवक्ताकिं गिमासदायकमनव

द्यालयालकायायनिमिहिनत्कनान्नसतय
 मगार्थमदिउपचान
 उद्धूगावधूगादिगम्वकर्म
 गुडादिपाकनतलपाकन
 खतिनामदिनित्रागापन
 ववाहादिदाकनतलनिव्वपिन 181
 नूथवाग्रदश्यादियादाकनतलनिव्वपिन १८०
 तललकल
 धातव्यादितलसकृपलप
 नाहिल्लादितलसकृनपलप
 कषायपाकनतलयकालन
 धुगुलिप्रकात्रलतपश्चाकक्रिववहिववचाम्
 किमिन्त्यादिनाकशयिव

मृथजलपायसमियास्तु नदाधननखसकिमिदय
 धकिमिनदाककिनिपनिदूर्वलश्यावडनिच्यमरुयूत
 धयाचिकित्सा
 प्रथमसनखरगधनयाथ
 किमियाद्यालनहिक्किवलसामूलनवलसीनकिमिपिकाथ
 घृणमधूनवलपुष्टुयाथ
 किमियाहाकृतायुताहाकपूतिहाकसायावडपाययाथविकार
 किमिपिकायमजिलसाक्षादिकर्मयाथ
 उहान्वकपुष्टिपाकसनसुपादनागर्थायनसु
 सूनागानकविधि
 घृणमूलादिशजन पृष्ठ ७१
 सवनादिप्रकार

धनगतलकाणीनागयाचिकित्साध्याय २१
 किमियागलपहनागगथदन
 मूनिनकाना
 किमियागलपहशयिवयाकायल
 प्रकारान्ननगलपहनागयाकायल
 गलपहनागशवक्केकिमियाविकार
 किमियाविकारविक्र पृष्ठ ७२
 गलपहनागयासाध्यासाध्याविचार
 धयाचिकित्सा
 किमिवियावडपाययाथ
 वयत्रादिनडपाय
 गलपागेसाखिपार्तकाठकययाववेधन
 विक्रदादिवासर्ललाहनीसवासर्लपूयाव
 किमियाधकासवालावसायडपाय

काथसथादावचाठनसायाजीर्णजीर्णविचान
 कंथसंखयथनागदत्ताविलापनयायउपाय
 अतिकठिनशलसावालानलयावकाय
 कंथयास्वदद्युगपोनादिउपाय
 पंचमूलादिकाथपान
 पृथ्वीकादिराजनापचात्र
 नाजीत्वदविधि
 सिनासिनविचान
 अतिस्निन्नशलनावदिकानशयिव
 (मराजनादिकं०)नूसात्रण पण०३
 नीलादिश्रुत्यजूनस्वद
 मधुकादिबुधु
 गालीसपयादिधूप

अक्षुनकादिर्नूजन
 कोमलहृत्पादिराजनापचात्र
 गलयहृत्पादकयाकक्कावेधयाप्रभंसा
 धर्मगलयहृत्पादगयालकलविकिसाभूषा०२५
 घूनवान्नाजानठना
 हृत्पादशुवक्रकिनियाविकानलकलगथ
 मूनिनकाना १४२
 हृत्पादकिनियानागश्रुत्यकानल
 हृत्पादकिनिवेशनपनीकोयाध
 हृत्पादिनकिनियानागमूकदि
 लखतानकयाविचान
 जलपानयागुलविचान
 जलपानमविलनावदाषशयिवयालकल पण०४

15
 10
 5
 दिकानलकल
 हषायाविकानममस्तनपीठ
 थाकश्रादिनकथसजिकासककिवयिव
 सिद्धार्थनामवाधिशयिवदिवान
 हषाहयाविद
 जलपानश्रावशकविवान
 मृद्धीकादिनसपान
 यवकीनादिपान
 किनियाननीनससिद्धसस्तहय
 स्तरपाकप्रकार
 गलकथदिसमस्तनागसंधूगुलिप्रगस्त
 लावतिलिनादिमांसनसगत्यादनादिराजन
 कामलहृषादिउपधान

धनहृषावागसिद्धार्थनामवागयालकलविकित्सा
 श्रुद्धाय २२ ॥ पञ्चज
 पुनवदिनजानकना
 किनिपनिहृगग्रहपीठसाध्यासाधगमनिगथधक
 मूनिनकानाहृगग्रहादियागम्यादिविवान
 ग्रहयानामरावादिन
 ग्रहनपीठयायूयालकल
 किनियकहृगग्रगयशयिवयाविवान
 शववाकूकग्रहनपीठयाककायालकल
 मृगकग्रहनपीठियालकल
 प्रगालग्रहपीठियालकल
 स्वयिनिग्रहपीठियालकल

15
 10
 5
 पतर्दनग्रहनपीठयाकलकल पञ्ज
 कामाख्याग्रहनपीठयाकयालकल
 वनिजग्रहनपीठयाकयालकल
 सुविग्रहनपीठयाकयालकल
 ग्रहयासाध्यासाध्याविचार
 नृसाध्याग्रहनजायलपुविकार
 समस्तव्यसादिसामान्यविकार
 नृसाध्याग्रहपीठितविचार
 वर्षपर्यन्तादिग्रहयाविचार
 दू४खसाध्याग्रह
 ग्रहपीठयाविकित्सा
 वलिहामादिगान्धि

गजगालागधन पञ्ज
 गालासगजपवनविधि
 किगियोहवननकाद्यादिमनुपा०
 यदहपनिष्पवनादि
 नृजनधूयादि
 गमद्युतादिनृत्य
 तिलादिनृनूलपन
 विकटकादिनृत्यकर्म
 स्वदाद्वर्तनादि
 पित्रमर्चादिसुद
 द्विपर्वसूलादिकाथ
 वाक्कीनसादियान

183

15
 बलिदानविधि
 धूपविधि पृष्ठ ७८
 नाजिक्रियविधि
 ग्रहनागनमूकश्लेष्मनावकिनिलहियविधि
 गालादनादिशुद्धनापचार
 ग्रहविकिसकवेद्ययालकल
 धर्मेष्टुनग्रहयोऽयालकलविकिसाग्रध्याय ३०॥
 धूनवादिशुद्धनागनमूनियाकठना
 किनिष्ठायवावयालकलकठना
 मूनिकाना
 धायवावकिनियावयालकल
 धायवावयाविकिसा

अकपिलादिशुद्धना
 गल्लतीयकमूलादिशुद्धना
 कनवीनमूलादिशुद्धना
 श्रुद्धशुद्धनादियाश्रुद्धिनधूप
 उतयाकासुश्रुद्धिनधूपयाथ
 मनःशुद्धनादिशुद्धना
 काकपिलादिशुद्धना
 गालादिशुद्धना
 ककपिलादिशुद्धना पृष्ठ ७२
 हिन्दुदिशुद्धना
 धर्मेष्टुनग्रहयोऽयालकलविकिसाग्रध्याय ३१॥
 श्रुद्धशुद्धनागनयागयालकल

अपस्मानगया विक्र
 धया विकित्सा नवग्रहा गया प्रकनक्षक नयाय
 धत अपस्मानगया लक्षण विकित्सा अध्याय ३२॥
 पूनर्वादिवाजानरुना
 वातकुलुलीना गया उत्पलिलक्षण विकित्सा गथधक॥
 नूनिनवाना वातकुलुलीना गया उत्पलिकानल
 वातकुलुलीना गनकवक्र किनिया विकानविक्र॥
 वातकुलुली असाधलक्षण
 धया विकित्सा साधन
 निवातस्तनसकिनिगय
 गल्यनद्युतादिशाउन
 काथयतिपानादि

वसिकर्म पत्र ३०
 प्रातःकालसुदृढपानादिविधि
 धत वातकुलुलीना गया लक्षण विकित्सा अध्याय ३३
 अथ रात्रा मथितना गया लक्षण
 अदिकम्या उरात्रवृषिकावर्यनावरात्रा मथितना
 धया विकानविक्र
 धया विकित्सा
 नासचूनसादूदसवानावसूथानक
 कृत्माषादिउपचार
 पिष्ट्यादिचूर्ण
 पिष्ट्यादिदीनपाक
 दाकादिपान
 शुभलपिलादिनेल

१४४

यवसादिशजनापवान
यवातस्तनसगयनापवान
सुखगयादिदयक यग३१
धर्तशानामधितनागयालकलविकित्ताश्रुधाय३४॥
पूनर्वादिनाजानमूनियाकठनालूफनागयाउत्यहि
लकलविकित्तागएधधकमूनिनकाना
लूफनागयाउत्यहिकात्रल
लूफनागनकडाककिगियाविकात्रलकल
थयाविकित्ता
कीनरुदयाकाथपान
कीनतर्पलादिपथशजनापवान
मयुत्रमृगमासादिगाल्यादनादि

धर्तसामान्यलूफनागयाविकित्ता
अथविणषलूफनागयाविकित्ता
विणषलूफनागयाउत्यहिलकल
लूफनागीकाकिगियासवर्गससुसुलाषविक
द्युतकीनादिपानशजन
जिहतादिरसमार्थग
वसिकर्मस्वददृहनादि
धर्तसामान्याविणषलूफनागयालकलविकित्ता
श्रुधाय३५॥
पूनर्वादिनाजानकठनाउदावर्लनागयाउत्यहिविकि
तागएधधकमूनिनकाना यग३२
उदावर्लनागयाउत्यहिलकल

उदावर्लवागीयाविकारलक्षण

ध्याविकित्सा

उन्वकादिनैल

जांगलमांसादिशाजन

वस्तिनिवृद्धादि

प पंचमूलनसपान

ग्रहव्यादिउपवाय

धनउदावर्लवागध्याय

ग्रथवल्मीकवागध्याय

वल्मीकवागयाउत्पलिलक्षण

गमुकर्मकारादिउपवाय

गमुनगमधनादि

धनवल्मीकवागध्याय ३३॥

पूनर्वादिवाजानकना

पण्डमिवागयाउत्पलिलक्षण

मूनिनकाना पण्डमियाउत्पलिलक्षण

पण्डमिवागनशवकाकिगियालक्षणविकान

ध्याविकित्सा

गतधोतसंकष्टानसक

किगिकसपातगाहाकलाखसखयक

लखनकिगिधकायावलप

दूर्वादिलप पण्ड३३

हनिडादिलप

मूनादनादिशाजन

यवसादिउपवाय

धनपण्डकिमिवागयालक्षणविकित्साग्रध्याय३॥

१४५

पुनर्वादिना जानकना उन्नं कनरा गया उत्पत्ति गायधक
 मूनिनकाना उन्नं कनरा गया उत्पत्ति लंकल
 उन्नं कनरा गनकवक्त्रा किमिया विकारलंकल
 धया विकित्सा
 रिंध्यसकिनिनय
 हलस्वद
 नागीस्वद
 नकाथिदि पाकन श्रुत्यकपनिषधन
 विरुता नसपान
 यवकालादिने लार्थजन
 नस्यकमनिवासनादि
 धनं उन्नं कनरा गया लंकल विकित्सा ब्रुथाय ३८॥
 पुनर्वादिना जानकना मूनिं लालिता लुना गया लंकल॥

मूनिनकाना लालिता लुना गया लंकल
 लालिता लुना गया उत्पत्ति कानल
 लालिता लुना गनकडा ककिमिया विकारलंकल
 धया विकित्सा
 गमनमूल संहिपिकाय
 हिपिकाया घाल सधलनव्य
 सुनामधादियनियान
 रुद्रिडादिलय
 श्रुतिकर्म
 पिष्यत्यादियनियान
 वाधनाथलवलादि
 नेत्रिकादिष्वलनापनलप
 धनं लालिता लुना गया लंकल विकित्सा ब्रुथाय ३९॥

३९

धूनवदिनाजानठना
 यवगलुनागनामपादनागयालकलउत्पलिविकित्सा
 ग(थधक मूनिनकाना यवगलुनागयालकलउत्पलिविकित्सा
 यवगलुनागयाश्रुकाउत्पलिविचार
 धयासाध्यासाध्याविचार
 धयाविकित्सा
 विग्रहवनादिनखलधन
 वातधूपलय धयउज
 नैहवत्तानूपानादि
 धनयवगलुनागयालकलविकित्साश्रुध्यावठ॥
 धूनवदिनाजानठनावर्मकीलनागयालकलग(थधक
 मूनिनकानावर्मकीलनागयाउत्पलिलकल
 धयाविकित्सा

कानानिगमुकर्म
 कषायादिलप
 लसूनादिलप
 विवलीयुनागकउपचार
 धनवर्मकीलनागयालकलविकित्सा
 श्रुध्याय४॥ १४३
 श्रुथश्र०श्वपनिकिसिलहिययाउपाय
 श्र०याविकानलकल
 वृद्धावस्तुसद्याधिउत्पलिलशयिविचार
 धयाउपयाग
 कामलगया
 कामलहणयाउपचार
 पविग्रमादिनिषध

15
गिनाख्यं गदि
डाकादिपान
यवसद्व्यादि राजनापचान
धनदृष्टकालसकिगिलकायायउपचानब्रूयाय४२॥
10 पुनर्वादिनाजानकनाकिसिग(धश्रूवसन्नश्लधक यगउउ
मूनिनकाना
किगिश्रूवसन्नशवयाकानलकण
श्रूवसन्नश्लनावसिथिवयाविचान
धयाचिकित्सा
5 गमलउलाववाककाकिगिथानउपाय
पूखनब्रूदिनजलागयसकृतिथकाययाउपाय॥
सपिन्दीनादिपानसवन

नाजानविचारमयातनावकिगिश्रूवसन्नशय
नित्यं नाजानवैद्यकपद्याकावाकिगिसाय
किगियाधससा
धनश्रूवसन्नशवयाविचानब्रूयाय४३
पुनर्वादिनाजानकना
ज० ननागयाउत्पलिलकणग(धधक
मूनिनकाना यगउग
ज० ननागयाउत्पलिकानल
ज० ननागयाविकान
सन्नशदनविकानशद
धयाचिकित्सा
गिनाख्यं गदि राजनापचान
वसिदोनाकि कर्म७

धर्मेण ० नला गया लक्षण विहित श्रुत्या ४४॥

यूनवदिना जानन नोखदा सवर्क धेक कि निध

यावहया लहिय उपाय मूनिन काना

मामववडा खयावहया कि निवापनि मनिनाग

याय निमिहिन नूपावलिहामादिकर्मयाय

प कीनपानादि

लखसजाय लपूकामलघासल्ल्यादिनक

सादूदेसाधलि ल्ल्यादि नूनया दूनगयावनक

लमद्युगपिष्यलीवुअदिनक

उत्कालिकादि सिखराजन

नसलवलादिनक मगवविवाव पय ३८

कि निवापनि सजिदा दसानि स मरुकादि नूग सधलव्य

दकवधससुन सवकनव्य

पकूना सवर्जिसद्युगनहाय

रानव्यक दूनगमन ल्ल्यादियासु मगवविवाव

कामल ग्या ल्ल्यादि दयकावगय

धर्मेण काननल हिया कि निवापनि सन

लीताश्रादिसहयाय रुयिव १४१

रुतीयादि दग्गसगमनादिविधियातक

धर्मेण उपायन कि गिया निवाग शयि

वालक कि निलहियया प्रसंसा

धर्मेण वालक कि गिया लक्षण विधि श्रुत्या ४५॥

यूनवदिना जानन गज्जल वादकान

घालकाखयाक दनाना विहित फना गया लक्षण

मृत्तिनकानां नातिदिक्कनां गयानूपलक्षण
 नातिदिक्कनां गयानूपलक्षण पृष्ठ ३२
 नाकस्य हादिय सुलक्षण
 लतादिन गय शयिया विवाच
 नातिदिक्कनां गन कवक्क किमिया विवाचलक्षण
 कृपाग्रह नय सुश्रवया विवाच
 नातिदिक्कनां विवाचलक्षण
 धया विविक्ता
 केवलद्युत सव पृष्ठ १०
 समालयन धूपादि
 माबूला दिपानास्य
 गायमानादि यदह
 कृष्णादिधूप

कर्कजवीजादिनस्य
 वनाहदनादि अंजन
 गुणदिनस्य अंजन
 वयस्स दिपाक
 सर्षपतेल निराल सनयावल् पनयाथ
 गजमूयादिन मर्दनयाथ
 पूष्य तल्लादिन नागि सवलि विथ
 वचादिन काष्ठधूप
 गजगालासवाक्कणादिन स्वस्ति वाचनयात्क
 हामयाथ
 कृगलषद्युतन किमिया कासवूयनक पृष्ठ ११
 धूमनातिदिक्कनां गयानूपलक्षण विविक्ता गृष्णादि पृष्ठ ३३ ॥

पुनर्वादिना जानकना
मूयसंगना गयागथधक
मूनिनकाना
मूयसंगना गया उत्पलिकावण
मूयसंगना गया विक्र
प मूसाधलकण
साधलकण
मूयसंगीकिलियाविकानलकण
गठमूयीशयियाविवात्र
धयाविकित्सा
निर्मलसूनापान
घृतकणनादिशजन
यवादिपूषपाक

गंगलमांसवसरुजनादि
कामलयवसादिराजन
निवृत्तिस्नानसंकिणिधनतय यव १२
उष्मापवात्ररुजनादि
धतवायूविकानलजायलपूयसंगना गयाविकित्सा॥
अथपिरुविकानलजायलपूयसंगना गयाविवान
पविमूयीनागयालकण १४८
धयाविकित्सा
नामयध्मादिकाथपान
गुनिमध्मादिकाथ
मध्वाननादिराजन
जलकूरुग्रावण
यसपान

१५
 १०
 ५
 सुगुप्तं कसीधूपान
 धनपनिमूर्त्तीनागया विकित्सा
 अथपिष्टमहीनागया विचार
 एतन्मयकापनपिष्टमहीनागशयिव
 पिष्टमहीनागया विक्र
 धया विकित्सा
 पंचलवल्गदियनिपान
 यदात्रादियनिपान
 निम्बपटालादि राजनापवान
 धनपिष्टमहीया विकित्सा
 अथनकप्रमहया विचार
 लासरुक्मिण्यकाया विकानल
 कद्वन्नादिउष्णराजनया विकानलनकप्रकापश्याव
 नकप्रमहशयिव विचार पृष्ठ १३

नकप्रमहया विक्र
 धया विकित्सा
 गुंथादिबृहत्सूथानां नक
 कद्वनीवीजादिदूषपाक
 गाल्यादनादिमध्यांनसूनक
 गालिगुलादि राजनापवान
 धननकप्रमहया विकित्सा
 अथसगर्कनमृगनागया विचार
 सगर्कनमृगसंगनागया उत्पलिकानल
 धाउप्रकापनविकानलशयिविचार
 सगर्कनमृगसंगनागीश्वक विनिया विकानलकल
 नानामृगविकानलकल
 नकप्रमहशयिव विचार पृष्ठ १४

ध्याविकित्सा

पाषाणरुदकादिनिक्ताथ

शूलवलयकसूत्रागानक

वसिष्ठान

गतावेयादिउरुवसिकर्म

प धतसगकनमृगसंगनागयाविकित्सा

शूलवसिष्ठानसवायुयकापनश्रुमाहताम

मृगसंगनागयाविक्रलकल

ध्याविकित्सा

स्वदक्षादिक्ताथ

मयूयमासमेनयादिपान

यवकालादिशजनापचार

धतश्रुमाहतामृगयाविकित्सा

शूलजोनेमृगसंगनागयालकलविकित्सा

श्रुमाहतादिपान

द्युतयानार्थगवसिकर्म यवनाज

धतनानायकात्रमृगसंगनागयालकलविकित्सा

धतमृगसंगनागयात्रध्याय ४०॥ १४२

यूनवदिनाजानकनाप्रसववागयालकल

मूनिनकानायप्रसववागनागीशयिवयाकात्रल

वायुयकापशयिवकात्रल

ध्याविकित्सा लकल

उष्णतेलादिनाक

वंगमदिस्वद

सूत्रातेलादिपान

मधुकादियान
 गन्धमूलनादियानिलय
 कृष्णमूलादिधूप
 पंचमूलादि काथनमूर्त्यंगदि
 विकटकादिशूकसीधूपान यश १३
 कृष्णलोदिशूकनापयान
 यवसादितर्यल
 वाकडाक्रामाकिनियानसामनवश्रादिविकारयाविवात्र
 धयानिकित्सा
 हलकाभीतलजलपानादि
 कामलहलजंगलगीसादिशूकनापयान
 धनवाकडाक्रामाकिनियायसूतवागनागया
 यसूतवागनागयालकलविकित्साशूकनाय ४८॥

यूनवदिनाजानकना
 दन्तनागयानिलुयगधधक
 दन्तनागशयिवयाकात्रलयता
 सामान्यदन्तनागलकल
 दन्तनागीशवक्तुकिनियाविकारलकल
 दन्तनागशयिवयाकात्रल यश ११
 वातदूषदन्तनागयालकल
 दूषयितनदन्तनागशयिवयाविवात्र
 दूषकलनदन्तनागशयिवयालकल
 विदाषनदन्तनागशयिवयालकल
 वृद्धावस्मनदन्तनागशयिवलकल
 शूकस्मादाषविनीकि सियादागनहि.क्रिवलसा
 नाजायामरिठ

15
 मूकसाधनपतनशूलसालाखरास्यवलसाधउत्पातधाय
 जवदायादांगसशकवलसाधमूसाधधाय
 धकाकिं सिगक्रयादगसतालतावच्छय
 धमउत्पातनजायलयूदकनागलकण
 मूयमूगलुदाषनजायलयूदकनागलकण पृष्ठ १८
 साधसाधदकनागयालकण
 साधककनागयालकण
 मूसाधदकनागयालकण
 वासलेयायनवमनवदकनागयालकण
 धयादिकित्सा
 दकसद्युगनप्रकालनयाय
 कदूकादिबुलुपाकनदकसल
 कारादिनदकसल

गजमूगनसन
 वातिकदकनागयनिलसर्षपकल्कनदकसल
 नननस्यकर्म
 पेलिकदकनागयापठलादिनेलपाकननयाय
 अश्न
 ध्वतादिनेलपाक १७०
 नकमालादिनेलपाकसर्वदकनाग पृष्ठ १२
 पिथल्यादिनेलपाक
 पात्रावनादिनेलनक्रपागल्यादिसथान
 ब्रिमदादिद्युगपाकनक्रस्योतसथान
 नावनादिबुलुनिदकलभनादि
 धयोपुत्रीकादिलय
 ववासर्षपादिलय
 कर्कजवीजादिधूप

वृक्षवस्तुविणमलवर्हिभधन
श्राद्धादिनजायलपूदननागयाविकित्सासामान्य
श्रुतदन्तपाकनविधि
दन्तपातनार्थकृत्लाहादिगलाकादयक
कदाविदन्तपतनमश्लक्ष्णजलावगमहनादिउपाय पृष्ठ ८०
विबलीयोकेप्रकावलदन्तवलयाउपाय
धनदन्तनागयालकलविकित्साश्रुधाय ४२॥
पूनर्वादिनाजानदना
विरुत्रंगनागयालकल
मूनिनकानाविरुत्रंगशयिवयाकावल
विरुत्रंगशवक्रायाविकावलकल
समस्तविकावलसंशकशलसाजिह्वासिय
हीनविकानशलसासाध्य

श्रुयाविकित्सा
सर्वांससद्युतलक
नादिद्विफनालकप्रकावलज्जनस्वदादि
वामदवादिवदया ०
कामलादिशजनापचात्र
किणियामनप्रसनयायगानृहणीतादियाय
गल्यादनादिशजनापचात्रादि
गजगान्निविधिनगानिकर्मयाय
धनविरुत्रंगनागयालकलविकित्सा
श्रुधाय ५०॥
पूनर्वादिनाजानदना
किणियाश्रुतनागयाउत्पलिंग(थ)शलधक
मूनिनकानाश्रुलयास्वद्रूपनिर्णय

15
शूलनगरीनसुधास्रसधाउदुमलयायुविधानपय

द्विविधशूलविधान

द्विविधशूलयादासविकानविज्ञ

धयाविकित्सा

यैलिकशूलसद्युगात्यंगक्रिया

प सकरुवानशूलयाउद्धनेलसस्रदादिक्रिया

गमद्युनरुद्धादिनधूपयाय

शूलद्वययासामान्यविधि

हनिदादियिष्ठ

शुंशादियिष्ठ

शुंणकल्कादि

श्रानाहनात्मकप्रतिपानादि

धनद्विविधशूलनागयालकलविकित्साश्रुध्यायज॥

यूनर्वादनगानठना

श्रानदनागयालकलगथ

मूनिनकानाश्रानदनागयाउत्पलिलकल

शूलश्रानदनागयापताप्रकाशद

सानदनागयाविकाललकल

धयाविकित्सा

यातःकालसविधानादि

दिनादिविधानपय

पंचलवलयकसूनापानादि

षष्ठिकादनादिलजनापवात्र

कषायनिकादिकवल

नजावत्यादिकवल

नैलपानप्रयाग

131

15 धर्मस्कूलगणनदवागयालकलविकित्सा
 अथयैलिककृष्णगणनदवागयानिबुपल
 यैलिककृष्णसावदवागयाउत्पलिलकल
 धयाविकावलकल
 10 धयाविकित्साक्रपायाध्वं
 प्रागःकालससद्युगगर्कनगाल्यनराजन
 मृद्धीकादिन्नूपान
 पिलघ्वर्तुहनादिक्रिया
 5 धर्मकृष्णसानदवागयालकलविकित्सा
 अथवागयैकनिप्राकृगनामगणनदवागयानिबुपल
 प्राकृगणनदयाउत्पलिलकल
 धयाविकावलकल

धयाविकित्साक्रपायाध्वं
 सिग्वराजनादि
 पंचलवणसूत्रापानादि
 तैलमांसादिर्तुहनापचान
 वस्तिकर्म
 धर्मप्राकृगणनदवागयालकलविकित्सा
 अथनकगणनदयानिबुप
 नकगणनदवागयाउत्पलिविकानादि
 धयाविकित्सा
 गतधोर्गद्युगात्यन्
 खर्कनादिमिष्टितजलपान
 धर्मयगायकावगणनदवागयालकलविकित्सा
 अथयवरागुवागयाविकित्सा
 यवरागुवागयालकल

ध्यासाधन
नैलाख्यं गनकविश्रवनादि
धर्तयवर्गं उवागमध्याय
मूथगीतस्कनत्रागयाविश्रव
गीतस्कनत्रागयाउत्पाहि
ध्याविकाननिद्रूपन
ध्याविकित्सा
निर्वातस्कनसकिगितय
मिच्छक
मिक्कमगव
उम्भनलनसर्वाभलप
उम्भपवानराजनादि

धर्तगीतस्कनत्रागयालकणविकित्साब्रूध्यायज३॥
गएथधक

अथकसिहानकाकयाविश्रव
कसिहानकाययाकात्रण
कसिहानकाकयाविकान
ध्याविकित्सा
यखलिसकिगितयक
घृतसक

१५२

कीनवृकयाखालादूदूचूनावतानक पय८४
हविडादिलप
मभूनादिआहाननक
पूनवदिधलव्यावनाखसखयक
मत्स्यादिकादिशोजन

धर्तकसिहानकाकयालकणविकित्साब्रूध्यायज४॥
पूनवदिनाजानकनाकविदाषयासाध्यासाध्यालकणविकित्सा

मूनिनकाना
विसर्पिकादि जिंकुगायकाप्रकृविदाष
थयात्रसाध्विविवात्र
साध्वलकण
कृविदाषयाउत्पलिकानल
विसर्पिकाकृविदाष
मणुलीकृविदाष
दक्रकिमहादक्रकिकृविदाष
धनउलियाविकान
धनउलियाविकित्सा
नकृविष्णवनादि
जागसूकानामकृविदाषयालकणविकानविकित्सा पय ८३
नैलपानादि

पिचकानामकृविदाषयानिर्लुप्य
रुल्लिकानामकृविदाषयानिर्लुप्यविकित्सा
उन्नमिकानामकृविदाषयालकणविकित्सा
विचर्चिकानामकृविदाषयालकणविकित्सा
हलधूषीनामकृविदाषयालकणविकित्सा
किलासिनीनामकृविदाषयालकणविकित्सा
कृविदाषसर्पनिपातश्यावत्रसाध्वश्याविवान
कृविदाषयाउपाययायूकवेधयाप्रससा
धनकृविदाषयाउपायनिर्लुप्यत्रुध्यायजग
पूनर्वादिवाजानठनागुसथाठकिगियामृत्पूश्यजिमठागा
वनसथाठकिगियावानयानवलवक्तगथशला पय ८३
वनसथाठकिगियनिसवानयानअमसथानाव
विकानशयिव॥

15
 10
 5
 वानयायाविकानलकलधसम्युर्ध्वमनिनकाना॥
 दगविशगनकषायादिषुसंयूकश्वपृथ्यायाविकान
 पृथ्यायाद्विषादिवर्धुविकान
 नयागुलिमृहिकापययश्वविकान
 मृहिकायाभूजीर्णविकान
 प सुसचाठकिणिपनिसनवानयानविकानमश्वविकान
 मृहिकायाविकानरुदगयायथमरु
 भवतायकानलकानल
 दोहदयाविकान
 गहिनीमाकिनवानवयाविकान
 वानवक्रामाकियाकनानवावक्रायाविकान पृ
 वृक्षर्गमदिनयिवविकान
 यथाकाचाठकिणिनवानयियाविकान

धनसुसचाठकिणिपनिसनवानयिवयाकानल
 मृथग्रमसचाठकिणिपनिसनवानयिवयाविकान
 पथ्मपथ्मविकान
 किमिन्त्यादिदयूविकान
 कीनश्वविकान
 नानात्रांगउत्पलिशयिवयाविकान
 वामनकताविकान १७३
 ग्राम्यकिनियावानयिवयाकानल
 वानयानजायलपविकानयाचिक्त पृ
 वानयाविकानयासाध्यासाध्यविकान
 वानयानकिणिसिधुविकान
 मृथमृहिकारुदगयाचिकित्सा
 तैलमकादि

वहुमसकूपकयावलंखनथकावकिमिहयक
 निवर्तिगालासकिनिगयावहिंकादिधूपविथ
 हिंकादिधूप
 पिष्यत्यादिपिण्डकवल
 दन्त्यादिपिण्ड
 वालिकादिपिण्ड
 पाभदिपिण्ड
 आनाशकवसिद्रान पञ्च ८२
 आनाशकनिवृहादि
 पंचलवलयूकापिष्यत्यादिसूत्रापान
 मूर्जशृषादिशजनापचात्र
 थनमृलिकाशकलयालकलविकित्सात्रायाजज्जा

॥ घृणार्वादिनाञ्जानकनाग्रहनीदाषनाम
 मूनिनकानाग्रहनीदाषनिब्रुपन
 वातग्रहलीलकल
 वायूयाकापनविषमक्षवादियायूविचान
 ध्याविकित्सा
 पंचमूलादिकोथ
 हिंयादिपिण्ड
 वातगुल्माकाकाथादि
 वातकविधाननिब्रुह
 धर्मवातिकग्रहणीयाविकित्सा
 मूथयैहिकग्रहणीयालकलविकित्सा
 मूलादिनसपान
 घृतपानादि

किनातमिकादिकाथसद्युतपाक पत्र २०
 अथ करुग्रहणीनागयालकलविकित्सा
 जम्बादिपानविधि
 सर्वदातविकारसग्रहणीदीपनविधि
 विनकयाविचार
 प पंथमूलादिचूर्ण
 हिंमदिपाक
 किमिद्रादिउपाय
 नानाविधदूधपान
 धनग्रहणीनागयालकलविकित्सा अध्याय १॥
 अथ आमरागयाविचार
 आमविकारयाउत्पत्ति पत्र २१

अग्निमन्दशयिवविचार
 आमयालकल
 ककुसाश्च आम
 आमरागीकाकिगियाविकारलकल
 वसस्तनस आमयकापयालकल
 अक्लिधउस आमयकापयाविकार
 दाकलूत्यादिस आमयकापयाविचार
 धयाविकित्सा
 खदादि
 उष्मादकादि
 सिद्धादिपिण्ड
 चूर्णनिष्ठयथाग

१७४

15
धनत्रामनागयालकलविकित्साग्रधायज॥ पृष्ठ २२
पूनवदिनजानठना किनियाकिमिकाठनागयानिदान
मूनिनकाना किमिउत्पहिशयिवयाकावन
किमियावलुविचान
किमियाअकावनिर्भुय
किनियाअत्यन्तवसकिमिननयिवविचान
किमिनागीशवक्किनियाविकावलकल
अथकिमिनागयाविकित्सा
कृतजादिक्वाथ
रत्नातकादिकवल
काकादन्यादिकवल
मन्दुकपञ्चादिकवल

कट्वाहिल्यादिनिबुद्ध
कृतकादिनेलानूवासन
सूचदिनेल
पचानिम्बादिलजनापचान पृष्ठ २३
माषयवसादिनाजनापचान
धनकिमिकाठनागयालकलविकित्सा
ग्रधायज॥ २॥
पूनवदिनजानठनारिकावलहियान
किनियायुस्किगधमशतधकदीनगथशल
रुनकयनागगथशलधसमस्रश्लादयकमाल
धकठनामूनिनकाना
कयनागयाउत्पलिलकल
कीलदूर्वलयालकल

15
दूर्ध्वलयाथगायकावरुद
कयभागयाजितायकावरुद
दूर्ध्वलयालकण

दूर्ध्वलयाचिह्न

उपधाननदूर्ध्वलयालकण

प स्वरावनदूर्ध्वलयालकण

भाउकयश्वनिमिहिनदूर्ध्वलशयिवयाविधान

भाउकीलयालकण यव २४

नकाकीलयालकण

कीलमांसयालकण

मदकीलयालकण

मृत्किकीललकण

मजाकीलयालकण

शुक्रकीलयालकण

दासकययालकण

कीलपिरुयालकण

करुवातकीलयालकण

गुष्मकीलयालकण

करुयिरुयकापनवायूकीलयालकण

दासकयचिह्न

भाउकयनवायूयकापयाविधान

नाजयकायालकण

गुष्मभागयागुर्थ

कयभागयागुर्थ

दकयजायनियावचनकयभागशत यव २३

वद्ययागपविधान

१३७

15
 वदयाकृष्णपदसकयश्वर्थगुक्कपदसदृद्विश्वर्थ
 किनियाकयवृद्धश्वविद्यान
 कयवागयासाध्यासाध्यालकण
 कयवागयाचिकित्सा
 10
 नसकयश्वयाज्जांगलादिमृगपक्षियामांसनसत्तानक
 नककयसज्जांगलादियात्रकतानक
 मांसादिकयश्वयामांसनक
 महिषादिमांसनवसवानदयक
 मदकययामदसंयूकमांसनक
 5
 अस्त्रिकययाश्रुक्तियूकमांसनक
 मज्जाकययामज्जानक
 गुक्ककययामज्जादनाद्युतदूधनक

दाघयाचिकित्सा
 किनियावलसायोवयाय
 कीलयाचिकित्साविद्यान
 किनियाश्रयसत्वादिपवीकायाकावचिकित्साविद्यान
 यथास्तुनादिविद्यान यज २३
 विद्यमधूनादिशाजन
 ग्रीयश्रुदिनिष्काथ
 सूथवलकिण्णाल्यादनादिशाजन
 वृक्षविण्णदिशाजन
 वक्त्रवाकादिमांसनमराजन
 गाल्यादनादि
 मदादिपाकघृतगर्कनासंयूकयादनकसूथ
 गुक्कवर्धनादिघृतादिशाजन

कनीनादिशजनसर्वकयथा
 मागनुनागयाशजनादिविधान
 मादकदयकविधान पृष्ठ २१
 ग्रहणीदीपकमादक
 कनीषयथाग
 कनीषयागुण
 वाजिकनीषयागुण
 मृगयागुण
 आसकगुण
 आसकथाग
 कवलयायमान
 सिद्धाषधयाग
 स्वयंमुकादिकवल

य

प्रवृत्तादिकवल
 ग्रीयन्मादिउषधीमांसवृद्धिरुयकता
 कलृकात्रिकादिउषधीग्रहणीदीपनरुयकयता
 गलीनादिकवल पृष्ठ २८
 कलृकानकादिकवल
 जीवन्मादिकवल
 दाहिमादिकवल
 निनीषत्वचादिकवल
 ककुनादिकवल
 गल्लवादिदिकवल
 दीफाशिरुयकताउषधी
 अनवृत्तवादिमदकीगयावासल
 पूषकादिमांसवर्द्धनयाउषधी

१७३

15
युक्तिकादिउषधीकलधाठया

कदम्बादिकवल

चूल्मविष्ट

गृगधरादिपाक

चूल्मदियायमान

संवर्तनवर्त

दीपनीयकवल

महाषध्यादिधूप

पाभयाकवल

गुंकालादिवाताध्यातयाउषधी यम २२

उन्मूयुकादिउषधी

कालपानविधि

शुनिदीपनचूल्मविष्ट

चूल्मविष्टनकयाकालसूधावलक्ति

निम्बत्वचादिउषधमद्यानिया

एनलुदिकवल

सूवर्दलादिकवल

धनकीलधाठयादिनेकयभागयालकलविकित्ताशुष्मा

यूनवादिवाजानठनामदहायूलकलगरथधक

मूनिनकाना

मदहायूयावातादिहातायकावकानका पन १००

सोयादिवर्द्धनमदहाठ

वातिकमदयालकल

वर्षाकालसहावगुलिवातिकमदधाय

शु ३०॥

15
 येहिकमदयालकण
 ननकालसयेहिकमदहाय
 (समकमदयालकण
 (समिकमदहमनकालसहाय
 10 प नकट्टिजायलमदयालकण
 ग्रीष्मकालसनकविकारनमदहायव
 सन्निपातमदयालकण यद्य 101
 मिश्रगंधमदयालकण
 5 श्रीजनमदयालकण
 हर्षनमदहाययालकण
 पाविनामिकमदयालकण

निसर्गजमदयालकण
 मदहाययाविक्त
 सीतापजायलयमदयाविक्त
 येहिकमदयाविक्त
 सीर्यजमदयाविक्त
 धतमदहउपकान
 मूथमदयाविकित्सा यद्य 102
 वातिकमदयाविकित्सा
 पंचलवलयकसूखादकेपान
 तीक्ष्णकवल
 माषचूर्णुदियाग
 नैलपान

1511

कामलहृत्पदिकवल
 धनपौलिकमदयाचिकित्सा
 नूथपौलिकमयाचिकित्सा
 सूथपूखलिसकिणिहयक
 याकगुलिगलसकन
 किनियाकासधनयानलखहायक
 विसमृत्तलालादिकवल
 खडूनादिउपचान
 पनूषकादिपान
 हृत्पप्यरादिशजन
 षष्ठिकानादिशजन
 नूलादिनकमतवविधान

द्युतपानादि
 धनपौलिकमदयाचिकित्सा
 नूथपूषिकमदयाचिकित्सा
 कदूतेलेनसर्वमिसक
 तीकादिकवल
 डाकादियिण
 श्रवणवधादिशजनापचान
 धनपूषिकमदयाचिकित्सा
 नकायाविकावणमदहायूयाचिकित्सा
 मूत्रयूषादिपान
 पौलिकमदाकउपाय
 सनिपातयाविकारमदहायूयाचिकित्सा

लवणपिष्टाद्यादिचूर्ण

सौधूपानादिउपाय

धृतनानाप्रकाशमदहावयाविकित्तालकलपय १०३

श्रुध्याय ३१॥

श्रुथकर्णकगमसकमिजायलपूयाविधान

कमियावलुविधान

कमिनदाप्रशवककिगियाविकानलकल

कमियासाध्यासाध्याविधान

धयाविकित्ता

हृगवाजादिकल्कप्रलप

वर्लिप्रयाग

कमिनग्रन्थिदयकडायाउपाय

कमिध्रकबलादि

कट्टकादिपानशजन

धर्तकर्णकुमिनागयालकलविकित्ता

श्रुध्याय ३२॥

श्रुथकर्णनागयालकलविकित्ता

कर्णनागयाउत्पलितकल

१७८

कर्णनागशवककिमियाविकानलकल

करुनकवातनजायलपूकर्णनागयालकल

धयाविकित्ता

हृगवयादिचूर्णनसनकर्णसक यग १०४

कालीमधकादिकल्क

मधसिखदिभेलनकर्णसक

गलीप्रमूलादिकर्णपूवण

15
ययोपुत्रीकादिकल्लोत्त
नस्यकर्म
10
लेलयकादिधूप
राग्यादिराजनापचान
श्रीकावादिनसं
जलावगमहादिमतव
धतकलुनागयावि कित्तालकलश्रुध्याय ३३॥
श्रुथरुकाकन्दनामनागयालकलविकित्ता॥
रुकाकन्दनागयाउत्पलितकल
रुकाकन्दनागिराडाका किगियाविकानलकल॥
5
धयाविकित्ता
श्रुसनपानादि

व्यादिकवल
तजावत्यादिकवल
विमुकादिकवल
कट्टकादिकवल
मूर्मरुषादिराजनापचान
धर्मेरुकाकन्दनागयालकलविकित्ताश्रुध्याय ३४
पय १०३
पूनवदिनाजानकनारुकासापनूधयालकल
मूनिनकाना किगियाज० नानियाविचान
ज० नानिस्ववृथलकल
ज० नानिननयाउलि पक्कयाय
श्रुनिसूर्यसामात्मकलकलगनीनया

५० रात्रिमन्दविवात्र

मन्दाभियाकनानरुक्कप्रसापनूद्ययाविवात्र

रुक्कप्रसापनाधनागयाउत्थलितकण

रुक्कप्रसापनूद्यनागीशवक्ककिगियालकण

धयाविकित्ता

पंचमूलादियेतिपान

ग्रहणीदीपन

विष्यत्यादिनेल

सर्पचलवर्णलुंश्रुदिकवल पृष्ठ १०७

यवसादिराजनापवान

धनरुक्कप्रसापनूद्यनागयालकणविकित्ताश्रुध्याय ३७॥ एषानाकादिप्रदह

यूनवर्दिनाजानकनाडाणीकनामसारुनागयालकणगथा॥ स्नेहपानादि

मूनिनकानाडाणीकसारुयालकण

वातपिरुक्ककुरुक्कसंनियानयाकनान

कातायकात्रडाणीकनागशयूवपथस

वातिकडाणीकयालकण

वातिकडाणीकशवक्ककिसियाविकानलकण

धयाविकित्ता

मालत्यादिपाक

नाजीस्वदादि

गुल्लादिप्रदह

गाकपञ्चदिपाक

एषानाकादिप्रदह

स्नेहपानादि

१३२

१५
 नकमाकलादि
 धनघातिकडाणीकयालकलविकित्सा
 मूथपेलिकडाणीकयालकलविकित्सा
 यिरुनधाउप्रकापलकल
 १०
 डाणीकनम्वयथुनागशायिवविचान
 म्वयथुयावर्षुदाहादि
 धयाविकित्सा
 दवदाव्रादियदह
 म्ममादिपाक यग १०१
 ५
 कृगमूलादियदह
 नकमाकल
 म्वयत्कदिकषायचूर्ण

धनयेलिकडाणीस्वयथुयालकलविकित्सा
 मूथकरुडाणीकम्वयथुयालकलविकित्सा
 करुप्रकापविक्र
 उदम्वयथुविक्र
 धयाविकित्सा
 गमयादिस्वय
 काकादन्यादिलय
 कृषादिलय
 पनर्षुवादियदह
 निम्वयगदिराजनापचान
 नकमाकल
 कट्वाहिल्यादिचूर्ण

कृष्णध्वविचार
 स्वदनाख्यगदियुक्तान
 विवृणीयाकडाणीणधन
 धनकरुडाणीस्वयथूयालकणविकिसा
 मूथनकडाणीस्वयथूयालकणविकिसा
 नकयकापविज्ञ
 कदयणरुविज्ञ
 धयाविकिसा
 सिग्धगीतलादिराजनापचान
 तिन्दकादित्वक्लपपाक
 नकमाकण
 पूर्वकिचूर्ण पत्र१०८

धयथूयानकाधिसुनादिविचार
 धननकडाणीकधयथूयालकणविकिसा
 धनवातादिनयतायकाधयथूयाविचार
 मूथसनिपातडाणीकयाधयथू
 डाणीकधयथूयालकण
 धयाविकिसा
 वनाहादिमूक्तिनस्वद
 तिलचूर्णुदित्वद
 टरुधूमादिचूर्णु
 मूर्कपयादिचूर्णु
 कृष्णदिलय
 सिग्धमूलादिप्रलय

१३०

काकादन्त्यादिप्रलय
निम्बादिपाक
श्रुवापादिपाकप्रलय
उपनारुनविधि
आतिश्रुत्यादिक्वाथपान यन्त्र १०२
पठालयत्रादिशूष
गाल्यादनादिराजनापचान
धतुडाणीकगणरुयालकणविकित्ता श्रुत्याय ३३॥
श्रुथश्रुतिपातगजलकण
श्रुतिपातयाविक्र
श्रुतिपातविकान

श्रुतिपातनग्ननाग्नदिश्रुविवात
कण्ठादिविकान
धयाविकित्ता
दानुल्लदिकर्मनिवृत्ति
माकिंसिजनायउसकायक
पूखलिसकायक
रुतसमसानक
कामलरुल्लदिराजन
रूद्रकवल
मदिनापानविधि
षष्ठिकादनादिराजन यन्त्र ११०
मांसवगवान
वस्तिवृद्धल्लदिकर्म

धर्मश्रुतिपातनागयालकलविकित्ताश्रुध्याय ३॥
 पुनर्वादिवाजानठनाकागायकाप्रगुल्मयालकलगथ
 मूनिनकानावागादियंचयकाप्रगुल्मयाउत्यलि
 वातगुल्मयाउत्यलितकल
 वायुप्रकायनगुल्मश्रयिविवाय
 वातगुल्मश्रयिककिसियाविकानलकल
 धयाविकित्ता
 पुनिकादिनसयान
 गलीनादिकाथयान
 नाहिषादिकाथ
 कश्रुलवलादिकाथ
 मधूसिग्मादिकाथनसयन ॥॥

कामलगाल्यादनादिशजन
 धर्मवागुल्मयालकलविकित्ताश्रुध्याय ३॥
 मूथपिरुगुल्मयालकलविकित्ता
 पिरुगुल्मयाउत्यलि
 पिरुगुल्मश्रवककिनियाविकानलकल
 धयाविकित्ताकर्म
 उगीनादियान
 यियालादिपाक
 कथिंजलादिमांसशजन
 ग्रामाकादिग्राम
 धर्मपिरुगुल्मयालकलविकित्ता
 मूथश्रुगुल्मयालकलविकित्ता

१३१

15
1
लुम्भगुल्मया उत्पलि
लुम्भगुल्मशवक्रकिसियाविकानलकल
धयाविकित्सा
हृदिदादिका
10
व्याघ्रादिका ० पान पृष्ठ ११२
चित्रविल्वपत्रनेलपान
नसराजनादि
वर्गपत्रादि राजनापत्र
धर्मलुम्भगुल्मया लकल विकित्सा
5
मूथनकगुल्मया लकल विकित्सा
नकगुल्मया उत्पलिलकल
धयापिरुगुल्माक प्रकारल विकित्सा

सर्जादिका ० पान
ग्रीयलुम्भदिका ०
धर्मनकगुल्मया लकल विकित्सा
सर्निपातगुल्मया लकल
वास्तुदिधवंधवप्रकाव विकित्सा
धर्मवातादि दातायकानगुल्मया लकल विकित्सा
मूथ्नाय ३२॥
मूथदडागया लकल विकित्सा
दडागया लवूथ
वातिकदडागया उत्पलि
वातिकदडागशयिकया विकानलकल
धयाविकित्सा
सामूद्रकादि पंचलवणपान
+ x x

वचादिपान

कटुकादिपान पत्र ११३

कक्कटनसराजन

धनवातिकद्वडागयालकणविकित्सा

श्रुथयैलिकद्वडागयालकणविकित्सा

यैलिकद्वडागशवक्रयाविवाव

धयाडोषधी

गिगिनगकनादिनसपान

जंगलमांसनसराजन

धनयैलिकद्वडागयालकणविकित्सा

श्रुथकटुद्वडागयालकणविकित्सा

कटुद्वडागयाउत्पलि

कटुद्वडागीशवक्रयाविकान

धयाडोषधी

निकादिकवल

गल्लकृदिकवल

कपित्थदिनसपान

मृगमांसादिसाजन

धनकटुद्वडागयालकणविकित्सा

धनवातादिस्वगाद्वडागयालकणविकित्सा

श्रुथयैलिक॥

श्रुथगमद्वडागयालकणविकित्सा

वातादिगमद्वडागयालकणविकित्सा

वातादिगमद्वडागयाउत्पलि

१३२

वातिकगणनागीश्वक्कयाविकानचिक
 धयाचिकित्सा
 द्युततेलादियेनिषक
 सहपान
 प्रतियानवित्रवनादि
 वातघ्नहृणदिशजन
 शूलपादि
 स्वदनकसाकणदि पृ० ११४
 उपलहविधि
 कपिन्नादिपाकनाठीस्वद
 शूल्यगस्वदयाकावश्वसर्वगपसक
 शूलिमादिपाकलप

शूलश्चदियलप
 पंचमूलादिषुदह
 तेलद्युतादियान
 वलादिनसपाक
 द्युततेलादिपाक
 द्विपंचमूलादिसह
 वक्तिकमादि
 उदकसकादि
 शूलिकमादि पृ० ११५
 शूलिकसमायतायनीकाविचान
 शूलिदाहापकनल
 शूलिप्रालिखनविधि

यत्रिमर्दनादि
 उपनाहस्वदादि
 धनवातिकगणनागया
 लक्षणचिकित्सा
 शूल्येहिकगणनागया
 लक्षणचिकित्सा
 पिरुयकापयोचिक
 येहिकगणनागश्वक्क
 याविकानचिक
 धयाचिकित्सा
 सूनासंयुक्तद्युताख्यग

15
तेलादिलय

मृगमलादिगमगलप

पद्मासनादिलय

पद्मकाशीनादिलय

मालिवादिकल्कलय पय ११७

प

जीवकषलादिघृतपाक

घृतमृजादनादिशजन

गीतलप्रदहादि

धनयैहिकगमगयालकणविकित्सा

मृथल्लुष्मिकगमगयालकणविकित्सा

ल्लुष्मप्रकापयालकण

ल्लुष्मिकगमगयालकणविकित्सा

धयाविकित्सा

विलादि(वद)

तेलाद्यंग

यवसर्षपादि(गमगयालकणप्रदह)

मृतगीतिलादिगमगलप

मृजादिमृगयाकनगमगलप

१३३

गंगलमांसादिशजन

लवणमधूयूकसूत्रपात

धन(ल्लुष्मिकगमगयालकणविकित्सा

मृथविषमण्डिदाषसंनिपातगमगयालकणविकित्सा

सर्वधुवकापनसंनिपातशयिकविकित्सा

संनिपातगमगयालकणविकित्सा

धयाविकित्सा

नकः प्रवशलसायिलसाहाकयकावलयदहयाय
 वसातेलादिनगमसक
 षठिकादिपाक
 सहादिकाथननागीस्वद
 सुवर्चिकादिगमसकाथनगमस्वदसक यग १११
 पा००दियलय
 नकगमत्यादनादिशजन
 धनविधाषसनिपातिकगमगयालकलविकित्ता
 पुनद्वदिनाजानदनाकिसिनीयगमनादिनगमगयाजित्यकि
 ग१२धकवलनायकावगमगयासंगरंगविद्युनिविष्णुष
 साध्यासाध्यायकयश्रीगधित्तनादिधसमर्तश्रीकादयकस
 विष्णयमालधक

मूनिनकाना
 किसियागमगयागनतायकाव
 आगनुगमगयाग
 दाषजगमगयाग
 आगनुगमगयागयाजिमनताउत्यकि
 षठावाध.६
 दाषजस्वदय
 दादलगत्यकिनिष्ठय
 स्वलनादिनिष्ठयन यग ११७
 षठावाधनिष्ठयन
 रंगनिष्ठयल
 द्यावधनिष्ठयल
 श्रीकस्वलननिष्ठयल

15

10

5

15
यत्ननयंभदिनिवृपण
ध्वयध्वदनादिवातविकान
पनिस्तानलकण
विस्तप्रलकण
संगलकण

10
य तलसंगदिनिवृपण
सर्वसंगलकण
रुनयोसाध्यासाध्याप्रत्याख्यादिनस्वतायकान
असाध्यलकण
गीताध्यादिविविधकिया
आगनुगभगनागयाविकित्सा
गीतलजलनगवसक यय ११२

गजगलासवाथिलगच्छादिकामलपूथनगयादयक
गीतलजलनयविसक
सुंदादियलप
यकादियलप
नलर्वशलादिगभलप
कूमदात्यलादिकलकनगभलप
यवतिलादिगभलप
पातगलादिगभलप
यदहादियथाग
वलादिकाथनश्रुत्यमपानादि
यवगलादिदूषुसद्युजलपान
गतधोतद्युताख्येग

१३४

चन्दनालीनादिगन्धयुक्त
 मृजवनादादिमृदुपाकवग्न्याख्यं
 काकोल्यादिपाकपान
 गन्धसद्युताख्यं
 मृदिषादिपाककल्कनगन्धयुक्त
 नलवंशलादिगन्धयुक्त
 गन्धदूषनादिचूर्णकोथनमृत्ख्यं पानादि
 एममदिषादिमृत्पूनीषकाथ यग १२०
 वाक्लीकादिगन्धयुक्त
 प्रवकादन्नादिमांसनस
 नकगन्धयुक्तनादिशजननसानूपान
 धनधनविग्रगादिगन्धयुक्तयाविकित्सा

धनधनगन्धयुक्तवाधगन्धयुक्तयाविकित्सा
 पूनवदिषाजानकनागन्धयुक्तयाविकित्सा
 विकित्सागन्धयुक्त
 मृत्निकाना
 किमियागन्धयुक्तसुखादिनजिममृत्पाक
 सुखगन्धयुक्त
 सुखयाविकित्सा
 सिन्धुदिपाक
 नाठीस्वद यग १२१
 कूटजादिपाकननाठीस्वद
 मादिषादिमांसननाठीस्वद
 मृदनादि

* * *

कूलकादिपाकननालीखद
खलखद
निलसर्षपादिबुलुनलय
खनवीजादिकल्कनपिलुखद
दवदावादिपिलुखद
सहास्यग
यवकोलादिनेलपाक
अननादिनेलगर्भ यव १२२
थुलिसिंहयानयास्क
थतस्कवगययाचिकित्सा
अथनियानलकल
नियानचिकित्सा

निधिष्वमजलकल
निधिष्वस्वरूपलकल
निधिष्वयाचिकित्सा
द्युतनगमसक
गंलीवजलसेकिसिंहयक
लाखनथाकायावद्युतनकुनगमलय १३३
मृत्तिकानगमलय
कूकूटाळुमिग्रसूनायान
कूकूटाळुदिगमलययान
थतनिधिष्वमजलकलचिकित्सा
अथविहृतगमलागयालकलचिकित्सा
विहृतयालकल

ध्यायिकित्सा
 पत्रिग्रमनिवावलासूखगया
 तैलपत्रिषक
 कल्माषादित्यद
 द्युततैलपानमर्दन
 धनविहगगान्नागयालकलविकित्सा
 मूथमूहगगान्नागयालकलविकित्सा
 मूहगयालकल पत्र १२३
 मूहगयाविकावलकल
 ध्यायिकित्सा
 तैलनसर्वाङ्गसक
 नकायादिकाथननाजीस्वद

यवचूळीदिप्रलय
 नैल्यक मूजाकोनपान
 सुवचनसचनमर्दनादि
 धर्मश्राद्धमग्नयागयालकणचिकित्सा
 मृथमृगमग्नयागयालकणचिकित्सा
 धननागयासिद्धयलिलकण
 मृनवागीशवक्त्याविकान
 धयाचिकित्सा
 उष्णकलनमग्नलय
 नाडीस्वद
 मर्दननैलजलयान
 गिर्यर्कमादियाकननाडीस्वदप्रलय

धनं नृनग्नगयालकलविकित्सा
मृथसंकुचिनग्नगयालकलविकित्सा
संकुचिनयालकल
धयाविकित्सा
नैलनगायसक कसकूना
मृवग्वधदिनाजीस्वदमर्दन
तिलसर्षपदूर्ध्वलय
वशादयादाकनवगवावदयक
वहललपयानादि
वृहनादिक्रिया
धनसंकुचिनग्नगयालकलविकित्सा

धनं नृनग्नगयालकलविकित्सा पृथ १२४
मृथम्लानग्नगयालकलविकित्सा
म्लानयाउत्पलिलकल
धयाविकित्साकल्प
उश्रुधृतनग्नगयालकल
निचूलरुलकल्कयलय १३४
मांसनिर्हृदि
मृक्किरालस्वद
धनं म्लानग्नगयालकलविकित्सा
मृथमृवधितग्नगयालकलविकित्सा
मृवाधितयाउत्पलिलकल
धयाविकित्सा धृतनैलसकनाजीस्वदादि

निवृत्तिनग्नगयालकलविकित्सादि
 मथितमाठनग्नगयालकलविकित्सादि
 उन्मथितग्नगयालकलविकित्सादि यन्त्र १२५
 द्विविधउन्मथितगयालकल
 विमथग्नगयालकलविकित्सा
 एकाकग्नगयालकलविकित्सा
 क्तिनग्नगयालकलविकित्सा
 क्तिनलकल
 क्तिनयाविकान
 क्तिनयाविकित्सा
 द्युतनसर्वमिलप
 वन्दनादियुलप
 जलसकद्युतार्थगदि

स्वयादि यन्त्र १२५
 जलयान
 क्तिनवनगयालकलविकित्सा
 धनक्तिनग्नगयालकलविकित्सा
 मूथविद्युतग्नगयालकलविकित्सा
 विद्युतलकल
 विद्युतयाविकान
 विद्युतयाविकित्सा
 द्युतसेकपलपादि
 कीनवृत्तादियुलप
 नागीस्वद
 एमधूमवृत्तादिवरुलप

15
लालस्वद
तिलसर्षपचुर्लुदिकल्कलय
द्युतकीनादिपानवस्त्रिकर्म
थतविद्युतगगनागयालकजचिकित्साश्रुध्यायन॥
10
ॐतिशुद्धनागस्कनद्वितीययापगाक॥ ॥ पृष्ठ १२१

१३१

प

रुक्मतेयनसिग्धं पिक्विलं रुनिलं गुणं दालं स्य करं नीतं यत्री यमनि सार्थं ॥ विक्रितं मस्य गिक
 दूकपि यली मूलं विगु कवचं दयवया भति विषा विल्व मूलं विवृद्धिं गकर्णं आरुयामलका निक्काथयि
 त्वावदुर्गमवगिष्टं सोवर्चललवला न्वितीयाय यत् । यत्रिणमं वास्यदधिरुदा डिमसर्कं मं त कधग्री
 कषायसिद्धं काडवादनं यूक्ता रुजयत् । सूत्रां विवृद्धिं तीयाय यत् । रुवीति वागु (सकाः रुतवः यूवम
 दिष्टं यंत वृत्तं तथा । अवित्रा (धनवर्तं तं रुयादि (गुणं सात्त्वर्न । यथा काश्चिन्ती सार्धं क्रिया रिः साधय
 द्विवका संग्रह्य च नागनी साध्या साध्विव कृत्वा निदानं सूरुवमार्गं मत्वा काला विता निव ॥ यथागं
 लरुणी सिद्धि क्रिया मालमथा पिवा । पर्यं अथा यथा यागं सहिषः कुं छुट्यत् ॥ अथ वीत्याल काख्या नाज्ञं
 (गनयवादि तः ॥ ~~अथिवा कस्य कस्य गगनं विदमं रुतवः नवमं वृत्तं वा ॥ अथ नागं रुतवः विवा यत्वा~~
 यानाध्यायादि नीयः ॥ अथिवा आत्रम्यायां याल काख्यं सम्युद्धति । कात्रदूषेर्मदनकं मूर्च्छा किं नूयमृ
 क्ति ॥ वात्रलः केव्यविक्रया लिं (गेः साध्या सु । यत्र ॥ वादि तस्त्वं वर्म (गनयाल काख्य सुता ववीत् ॥ कात्र
 दूषान्मदनकान् यदिरुद्धयति द्विपः । रुत्रितान् रुद्धयद्वापि विवद्वा मदनं दकं । तदिदं काययच्छा

15

10

5

15

10

5

वा०

वा०

युत्रकयिरुकरुनिलान्।ससमत्कृष्टदाप्रमुमूर्च्छनागनियकृति।मूर्च्छितांनिषेधुवयतयद्विदयत
 ।उत्कृष्टकामःपततिविद्वलनिवगकृति।विन्यस्यधायतिकर्तयत्तयाकुर्नवत्तिव।गमगायत्रयनिषक्का
 वदनालोहिवीश्वर।नारिनन्दतिवीहीनीलालावास्ययवर्हत्।वक्षत्रस्याविलस्त्वंनववालनवीज
 त।सर्वगगालिसीदन्तिनववायुःपययत।नवमूर्णयत्रीयवाश्वनक्षस्ययवर्हत्।यिरुंवास्ययवर्हत्
 ल्प्यात्रुधिरभववा।यात्रिष्टमपिगदृष्टकर्मकुर्यादितद्विदित॥नवमदनऊर्ध्वंदुविदित्वाकृगलारि
 षक्।सुसाल्प्यवयोदसंज्ञात्वाकुर्यात्क्रियामिमां॥गमयनयदहास्यकल्लवःकर्मभनवा।गीता
 दकोवगमहृष्यवातस्त्रयनंहित।नवक्रियासमाकाकायथानाहृष्यमम्यति॥दधिमसुमगीनवयि
 श्चालेनान्वसर्षयान्।तेन्निवृत्तमुदात्तवायावगमहृष्यवर्हकः।गकृत्तुद्वानिवृत्तगीतावस्त्रिन
 नर्त।ययाद्युतसमधूर्ककोदरापरुसंसृजत॥ततोस्मेदाययद्वसिंकाष्ठनिर्वायर्णहित।वदनाधथसं
 कथ्यगर्कनावृत्तस्यती।तमस्मेदाययत्यिषुमजाजीमत्रिवैर्यत।निर्वाणभवत्तरुतमूर्च्छवास्यायम
 म्यति।तस्मादननत्रमिमान्कवलान्दाययद्विषक्।आमातकान्निर्तितीकंकयित्वानीगलादकान्

७

सूक्तमावावधकवसंयन्ताहवैविधनवापैधशहवन्निवलसंयन्नेष्टाकवसमचिनाशा
दृष्टयवैविध्यादकासवन्नामनस्विनशानवन्नागमन्निगवैविध्यालवधवर्किना
शावन्नामनानीष्टाहवन्निवलसंयन्नेष्टाकवसमचिनाशा
नू॥यासंक्षर्षगुर्लवयर्थसगस्यहान्नाहमथदद्रागवन्नामनस्विनशानवन्नागमन्निगवैविध्यालवधवर्किना
मथकलर्लवयर्थसगस्यहान्नाहमथदद्रागवन्नामनस्विनशानवन्नागमन्निगवैविध्यालवधवर्किना
वन्नाहिनन्निगवैविध्यालवधवर्किना
नैवत्येवयविकिलिनी।तन्नावतीकुलदृष्टिः४वालकाभ्यामहायन्नामनस्विनशानवन्नागमन्निगवैविध्यालवधवर्किना
यन्नामनस्विनशानवन्नागमन्निगवैविध्यालवधवर्किना
सावन्नामनानीष्टाहवन्निवलसंयन्नेष्टाकवसमचिनाशा
शावन्नामनानीष्टाहवन्निवलसंयन्नेष्टाकवसमचिनाशा
यन्नेष्टाकवसमचिनाशा

15

10

5

किंविच्छेदविदधत्तार। अथवा सलवणनगकानीयसाहिता॥ ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वस्तुमिया। कारुणिकवस्तुमस्तु ॥ अथवा गनार्थाय लक्ष्मी ॥ गुर्वीहिनयूमी सा च दुर्कना च विद्यादिनी
 मृत्तिका वा वलगता यश्च निलवद्धनी ॥ धानसंस्तुता सा नमो धर्म्ययनिमृता ॥ मन्दग्रस्तुता
 लक्ष्मी मृत्तिका जगत्सु लक्ष्मी ॥ न तदुद्धृत्य तस्मात्तिष्ठेत्तु च मनूना धिया वन्या यनक्ति तिरुक्ता न
 रुचि विविता विष ॥ नृप ॥ कलाये ॥ कट्टे सुधदुमसुमहये ॥ नयेर्ना ना विधेना गं यथा किं स गते वन।
 कलीतनायथा। गनगुरुणी दानू धरु वरा। जवयन्ति महीरुक्ता वानधायन दानू धी ॥ ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वान धायु कीर्तिना ॥ ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कदवा मनूजा धिया वलवान्स्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यनस्य सुवचना। गमूदिता जगत्कामया। सीयथा गं वनर्तु गुरुका ति। धनू का। न स्यात्संका गगर्त्तसीको
 र्ददना मका धुक्ता ॥ सुदिनी रता अवा मास्यं काय नैरुणी। सनवा लो गक वना ॥ ॐ मृत्तिका मयल वता ने
 स्यादुदय मं धनान्नी ना श्रीप्रतिदिता ॥ निवा च सव हा वा न नृ सुगर्तः यथा रायथा ॥ सुसुतं। धनू का
 कोल हन्ति ना यदि वा गरी। मातुर्दोद दय दयु मृद समनू वरुत ॥ स्रव क दन संसु वं नृ वरुति नि

४४

य३

१४

मृलिकावाधरंगरीडत्यादयन्निवागंश्चविद्विधानूयाधनापनान्॥ एतस्मात्कान्धाडाकनुक्ति
 रायामरीगका॥ एतरीमृलिकादावादानेष्टिचूचमेवृच॥ याम्याधमृदुकाशनीदुर्कनारुवाते
 दिकि॥ काहानयनिधमवेन्नाग॥ सादकिमृलिकी॥ मृलिकायनिधमवायदाहानीनिधवता।
 दावेनलरुतवानमृलिका रुद्र (एनवे०००) रुद्रका नदी आर्कयाम्या नधनिवाशिनी॥ गजानीमृलिका
 दातेरुद्रुद्रुद्र॥ वृथकविध॥ नृथविक्रानिबन्धकगजानीमृनृकाधियामृलिकी॥ एतानितिधिव
 प गणमुनिध्यागालायाका॥ विव (गनसुखास्यसगीकन॥ कृष्णायवागमाती॥ नामन्द्यासातिया
 र्थे॥ गूलार्कचिमनाध्यायिनिगुक्तमृदुवाहणी॥ एतकायवागमाती॥ गल्लुमाह॥ यनिगुयति॥ दधमा
 न०० वावस्माहानगगुतिमार्थका॥ कनयलूमेनहिनेयनीममि हदकिनीविवर्णुमल्यवर्गीवकू
 धरी॥ गकनीमेवेका॥ नास्तिरुद्रानचानेवेवविमनाह॥ रुद्रदूसनयाह श्रीमन्दप्रामृदादि
 गा॥ वीरुप्रयागमाती॥ ग॥ कृमिदूरीनिबूहकि॥ उवमल्यर्थदूर्नेधेयनीमीकलयेगुवता॥ विनम
 सथकाअनप्रुक्तवज॥ गगन॥ नृथवायमानकोम॥ एतद्वचन॥ धन्विम॥ रुद्रत्याधुय

आन३

यागनविधुयन सद्धविशानभट्टविद्वलानागियसुखद्विजमानसभानवाह्यध्यानकृतिर्यः सगन
 १ साधुलक्षणाकधुलीगूलविन्यसागभटाध्यातामूदमूदभालश्चर्यग्रमारीगानसुजावसिदर्मनाः साधु
 नृपंगनदकुलकपाठ्यकारिगः १ गनरुमगिमानवेद्यः १ ज्ञानरुगविकिस्तिडा १ ज्ञानाद्वैकाद्विद्विज्ञाना
 दयैकलविद्वमे १ गनरुमालिगिरीरुंरुसर्वेकेलनसचयता ॥ नृपेनेकठिनद ॥ गचकातद्वैनिवा दय
 १ ॥ निमधुत्यवनिकीमोयानिमीमर्कअरुमीडक्तिवायनिमधुत्यवायायविवर्तने १ ॥ गनकाकः
 गतावायूः १ दिप्रमवप्रममति ॥ वडुनअखनरुदूयैयावकुणीप्रमापत १ ॥ गनरुंवा निधमकूयै
 सुखाप्रनावप्रनयता ॥ गाननकूयरात १ सम्यकनागीरामवगभैरेतू ॥ निवातासीवभलायीधू
 ययदासाधेरुका १ हिगुसुकेनधागीने १ सर्वगी ॥ धेयकनये ॥ धूयनाभननागस्य वायूः
 गाम्यनिकायूः १ ॥ नृधलेकवलान्दद्यानृहिकायानिब्रह्म ॥ १ ॥ यिष्यलां यिष्यलामूलेचि
 नृकैहकिपिष्यला ॥ यवामतिवायाहीरुधकट्टकनाहिधां ॥ हविद्वविठं गानिमनिवानिमलोम
 धी ॥ प्रनामधूनसीवेयगभनरुस्विनामपि ॥ दवदानृगथाहिगुं शिवृतीशेन स र्जयै ॥ विद्वलामरुमा
 वि २

दीवकोपेवन्तु यवानायालवोः यैवहिर्यकैश्चादयित्वा सुखसामृद्धिं तन्नामो ययनू।
 उक्तनमृहिका सुखासुप्रीतिः निवृहति॥ ययनययानविषाभा यल्लयवा। नूथान्यदसो दारा
 यैमृहिकाया निवृहती॥ ययनकद्वयं वीरयाणमन्त्रं जानक। गिनीययणं सगुने सस्यत्तु ययनकी
 (ममयनाथमृदिनी यैममस्येयदाययनू। उक्तनमृहिका सुप्रीतिः निवृहति॥ वाक्का नविहति
 निवृहति नयधस्य ययनमूलं रुनी गव्यं हलानिव ॥ ११ ॥ ययनमन्त्रं गतं नयगतिने वा हनूयकी
 प उल्लूखलं कादयित्वा यैवहिर्यकैश्चादयित्वा सुखसामृद्धिं तन्नामो ययनू। ययनययानविषाभा यल्लयवा। नूथान्यदसो दारा
 यैमृहिकाया निवृहती॥ ययनकद्वयं वीरयाणमन्त्रं जानक। गिनीययणं सगुने सस्यत्तु ययनकी
 वाहिका कद्वयं वीरयाणमन्त्रं जानक। गिनीययणं सगुने सस्यत्तु ययनकी
 मूलं विवृणो हसि ययली। गिनीययणं सगुने सस्यत्तु ययनकी
 त्वा सुखसामृद्धिं तन्नामो ययनू। उक्तनमृहिका सुप्रीतिः निवृहति
 नाना वयथायार्कं वल्लिमस्येयदाययनू। अनिह वदचिद्वयं वृमिका यै ववडयक्रमे निवृह

४७

म२

पि४

स्नानवसनमुदसुयवस्त्रिसिद्धो यथायुक्तं निवृत्तं दापयति यत्क। उयकमरुधनागं शुभाग्रिह्यवृद्धिमान्।
शुद्धकाष्ठं विदित्वाथ वद्धलं उद्धदावर्णं। ग्रहं लीदीयेनाथये वातपुणमनायच। यं वरिलं वलीः सार्द्धं यिष्य
लीमनिवानिच। मेनयं वाज्यसन्नां वायुतिपा नैयदापयत्। रुकाद्धमवमानं गं मूत्रवृषे राजयत्। ततः क
लकृयूषणयादानं रुयदायत्। समस्करुकां वतना राजयदसराजनं॥ वृत्त्यवमृहिका ध्यायः पृच्छतं
गायकीर्तिः॥ पालकाख्यं नमसिषावात्रणं नाहिनीषिणा॥ ॥ वृत्तिपालकाख्यं गजायुर्वदमहाप्रवचनं
द्वयनागस्तनद्विनीयमृहिकानामा ध्यायः॥ ७३॥ श्रीगणेशनामो नमः। पालकाख्यं समपृच्छति। ग्रहणी दा
षनामानिगत्यमात्रदृष्टं॥ एवंपृच्छं गजाजनपालकाख्यं सुभावावीत्। व्यापस्यथमस्तनसूचिनाय
हणी गदाः। उद्यमहं नमः। वदामि विस्तरं। दाषेः पृथक् समसे वारुवंत्यनिलादिभिः। अर्थ
हनादनाहनाहये वविषमागनात्। कृषिभासात्रुः काष्ठं व्यापोदयति पावकं। हस्तिनमुविषाखण
कनातिविषमद्वर्णं महापीठं तथैव गमनं विचरसादिकं। यं वमूलद्वयकाथं वालध्वं ववायूनः। सम
स्तानि विषादिगुलवर्णं प्रयदायत्। सवाधं सलवर्णं हिं वंति विषां वचां। गजमूत्रयूतं यिषुं दद्याद

नगरिर्नृपुर्ववापि न कथमप्यवर्तते। सविर्वर्धसमूलं वा साध्वानं ह। नितिवद्ध। वृत्त्येते लं कर्णं विधादातजं अहणीगदाः॥ ३

स्येयथावर्त्त। काथान्वावागुत्मा कान्दापयदन्पूर्वग। निनामं च सैद्धगृह्णात्वा स्रुथयदापियकिगहादी
पनीयगण काथिस्तुत्कर्त्तैश्चयसाधितैः। स्रुथं नूयवन्नसम्यक् कृत्वा जनादिषूयाजितैः। पिवदन्नुत्तर्त्त
वादगमूलगलीः। स्रुतं विविक्तं गतविक्रं चकभले वांसयत्न॥ सुस्निग्धमनूवाये स्रुतता नागं निनूय
त्वा वातिकतविधानतस्य निनूय कमाहृतः। स्रुथानूवासयदन् स्रुथं निलनागने। दीपनीयतया व
त्स्यात्स्निग्धलिङ्गत्वे दर्शनं। यतियादिगच्छनमाविधिः। सुवदाश्च वत्। स्रुथवा वातिकया कायदुः
लीगदवातिका। श्रुतदुर्द्धयवत्सुमिपिरुक्कस्यापिलक्षणीपिरुक्कयिन् काष्ठकदूका आदिशजने
। दूषयित्वानर्त्तकथातण कदल्लुः। स्वकेयर्त्त। सदा सवदन् रित्तिनं गृह्येहिकसाधनी। मूसा मलकका
भयार्थेष्टिपशुमधूर्त्तिका। मूर्वा च वालवित्वा निमधूर्त्तमाषयशुपिलाध्वयपूठनी कंचयक्तापायावण
यित्। गक नामधूसंयुक्तं पानं पिरुत्तकं स्रुतं। विमूकपिरुक्कापायसपिन्नवयथा जयत्। पानं वराजन
वापिविधिं तस्ययवर्त्तयत्। किनामगिकं रुनिर्म्बयटालं वृहतीदयी। श्रुतं वत्सर्कं मूर्त्तया भंज्याव
तीमपि। तथायप्यठकागीनवासा कदूकनाहिणी। यक्तात्वनिविषां चैव तस्मिन् काथेष्टुगं यवत्। गदुव्य

प

२०

कल्यसंयुक्तं पौलि कं ग्रहणी गदा। गदासंयुक्तं नी कं हंति नागं च पौलि की। कल्यकृपितकाष्ठस्वसमानन
सादि रि॥ अजीर्णं अगनादापिलिंगदाषान्तिनिदिदिगं॥ समूलकल्यपि रं वसकदासं विमंचनि। यवा
अमानं निखिलं नयदग्नि समीपतः॥ अं वृक्षम्वनवराणां कृष्यवधवस्य च। कषायः कालयज्ञां ल
ययमधनासह। प्रलालवज्र कर्षूनपद्मकागु नूतं दने॥ सूक्ष्मवृक्षं कर्तव्यपि यली मन्त्रिवा निच
मासादूर्ध्वं ततः॥ पानं पाययदूरमासर्वं। सर्वं वा तविका नय्युग्रणी दीपयहिषक। गदाषहनलोच
नोक्त्या विस्तृतका विधिः॥ वल्लं स्यादूर्ध्वं मंगसाह गन्धकमरा विधां। आनाग्यं कानययमुगजानां का
षमिदय। यंचमूलं दयं पा। मयामागं सगमदूनी पाषाण रुदकं लार्धं दह निद विहीतकी। मूर्या
सल्लकां मूलां मूर्धा चानि विषां वचां। प्रलीनं जावनीं चार्धं तथ कटुक नाहिणी। वचां कृष्णं वनीं धेनीं विठ
गं मूर्धया सह। तथ कटुक कर्षुवीं च तथानिम्ब कर्णजको। मूर्धां म्रीं का कमाचीं च विरुकी जीवक दयं। मूज
मादां च कालां च पिप्यली मूलभवचा दो कर्णजो तथ कर्च गियु कं सानि वामपि। दाठिमं नि किठी कं च मा
कुलं गमनवतसी। लवणानि च सर्वाणि सूक्ष्मवृक्षं नि कानयत। सूक्ष्मवृक्षं कर्तव्यं॥ समं तय साधयत

॥ सैधवंचसमायुक्तं नाम कं वाचिकित्य कः। अतर्द्धस्यमानि यवी श्रुदाभवलचित्। चउः षष्ठिपंचवर्षादि
गुरुगंसमावयत्। सीधूकांजिकयुक्तं नगमसूखलदवी कर्ग। दध्नाचमधूना सार्द्धं समसतद्विधावयत्। युष्वा
आगद्विजानयुष्वा स्वस्तिवा चसू दक्षिणतः॥ पिण्डी रूतं हि मक्कलात्वा गजानन्दयादिवन्द्यः॥ सथागंसकन
रुंरुवेयैः ॥ अमुविष्मवर्धः॥ दातव्यं कर्मिकां च दीपयवाचमयवामदक्षीणयवतथावा गरिनायवा
प्राथायश्चमूलजं दनं विषयस्यै कृषिर्मा। अजीर्णं नसमायुक्तं सार्गं नहि नागयत्। गजानामथवा
प नांमहि। सीधूगवामपि। पाणिनामपि सर्वय सर्वेषामपि सर्वदा। अल्यमल्यं यदातव्यं न वसेमः कर्मिन्ः २१
कमात्। यदानियरुतग्रीष्मनयननयदाययत्। द्युर्दं द्युर्दं वाविष्मयपूवषणनिसेदय। कर्मिन्म
विकायश्च पिण्डी कल्पा समादरं। दापयत्सर्पिषा सार्द्धं यस्तु कः उविकित्तिर्। नानाविधं ययः। कां यदापि पूर्वसू
विरिः। गव्यं तथपि सर्वेषां भान्ननगद्व्यत। गव्यमूयपूनीषत्वा जातिगुणवसाधवा। नृत्त्यववीत्यालकाखान
क्री। गनयवादिनः॥ ॥ नृत्तियालकाखगजायुर्वदमहायववनकृदगागस्तु नद्विगीयग्रहणीर्दनामा
आयः॥ ॥ अतः नृपयवसाहानाहु नृत्तिगतिराजनात्। अल्यप्राहास्यमन्दाग्नः सदाजागवन्निगितातदान

श्रीमार्तगधिया नाजा नामयादा मंयुनिः। अनेकल्यमृषिष्यैष्यालकार्यं सम्यक्कृति। कथं द्विपानां कसयः काष्ठगठं
निसंतयः निदानं व कथं तवां किं च तवां सितां स्रुं मूका रुगवानुधावा च मूनि सरुमः कमिकां यथा न्यायं सनिदानं स
रुषः। आनूपयवसे नित्यमिदं रिष्यद्वानकः रुके रुग्निमध्वः यत्तैः ४८ त्वावर्द्धनः ४८ गनसंश्रवसा रिग्निमस्य
गुरुयुते सस्था। आमयक विषया सादजीर्णैश्च वराजनात्। अयायामाच्च सोखाच्च करु संयवर्द्धत। सप्रवृद्ध करु ४८
४८ संविता पित्रिगायनः ४८ कसय सुप्रजायक विविधाः ४८ असीरुवाः ४८ गुरुखलूमहा नाज कसय सास्यपीतकाः ४८ कथं
लाभं रुजितनीलासितकूमदप्रयनलिनदल सवर्णं रुनीलमूर्खां सैकविंशत्वा विपूलं खावा। अनामसावाति
अनृकास्तुलां रुग्णादीनां कस्वा रुवन्ति। वातप्रभिनकरु पिरुसैरुष्य राजीवका रुवन्ति। पांशुना नृणां सकरु वातसै
मग्रतिः ४८ अंगसूक्ष्मवर्णः ४८ गणामागयातय कागयमनूपयन ददयस्त्री रुयक दद ४८ रुलां गिरि वं दगल क रू सुनमृव
वर्णां रुका प्रमुदप्रद गानरु दयनितस्य कमि रित्नुय सैरु दद रुय रुद्रा अक्षयवहा नृणां प्रदा। नावकं स्या रुव
गिनवा स्य प्रद्वयानि स नगे विहं ४८ लंघनैः साधो यानपांशु गटवल्मीक वृक्षरु वणावगाह सलिलकी गस्तन गयन
प्रैषजागनादनावका वास्य रुवन्ति सखत्वा आतादना विमना द्वि कीर्ण रुस ४८ यत्रिहीयमाना सा रुग्णा प्रवतल ४८ कमि रित्

व१

व२

व२ व२

व३

व३

नूपसंसृष्टः संहि नमति सार्थं न ककु मूली वरुवति । न वास्य मूर्गं यव रुतं न स्योर्वीति धार्तं समी च कमि रिनूपसंसृष्टका
वत्वाच्च कमिका षीति विक्ला यतं विकित्ति उमूपक मत् ॥ कूटज मूलं यव त्व व म्म था पि च मर्द पाणं काल कि वात निका नाहि
ली माष यर्धु कां वा जी का भन की विठंग गि कट्ट क गिरु ला रु ला न कं द रु त्रि द क र्ज जी व ति प्र ता नि सर्वा लि स म रा ग नि
य थ ला रु नि ४ का थ र्ग का न ग स रु या ज यित्वा पा य य त् ॥ य द्वा रु ला न क कू ट ज कं द क रु त्रि द्वा स्तू र्ज कां ध ति र्म कं ल व
ग सं य का रि ४ काल काल क व लं द या त् ॥ का का द नी का क र्ज या कू ट र्जा काल स म न स र्म द्वा य स्व र्जि काल व ग स र्म क
य र्ग रु सि मूर्गं नागो वा स ॥ यित्वा क व लान् द या त् ॥ मं शू क प र्धु उ र्ध्व न य र्धु प र्धु क प र्धु व रु ती कट्ट का त्रि का । गृ ह्य
म पिय ली रु सि पिय ली ॥ व र्च ना रु रु र्ने रु नि ऊ का ॥ य मूर्गं रा व यित्वा क व लान् द या दू त म्म थ वा स म र्थ ग ल
क क द्वा रि ली व वा पिय ली कू ट ज न ग्ग क ल णु ना नि द्वा रु त्रि द त जा व र्ता र्म द्वा य र्प व ल व ग म्म मूर्गं वि पा च न न का
थे न गे ल य कं नि नू र्द द या त् ॥ य थ व सि सि द्धि या क न वि धि ना म्म थ वा कू ट का वा कू ची वी जा नि ति कट्ट क वि ठंग ल
गु न वि ठ कं ४ म्म द्वा यि र्म मूलं वि पा च वि धि व द नू वा स र्म द या त् ॥ ह य म्म मूर्गं व र्गि कट्ट क प ठा ल पा र ल पि च म र्द सो ना
दि का रि मूर्गं य र्धु सा ध यित्वा स र्म व ल व ग नि र्म स र्म लं पा य य त् ॥ व वा नि र्म व य ट नू ष क स्य न्द ना र्ता त्व क प र्ग र्ग

७४

संयुक्तान् कवलान् दयात् ॥ अथ वा द दूषक पयागिण्यामा विट् नू यती क र्ज ज माल क वित्त मूल द कि नि म्म मूला

२३

विट् नू यती क र्ज ज माल क वित्त मूल द कि नि म्म मूला

सर्गकान्तरथरुहानचरुन्यादकात्रणीनिवाचकदूकं वूयागुसौत्वयच्चपुनःपुनःनिर्यानगयनचैव
 राजनचननाषयत। राजयच्चसदानागंमधूनेकंरुलेशाधीपधुर्वैमधूकांयच्छीमधूकमवच
 णंगवनययस्यावविल्वदकंठकाजिक। पश्चिपधुर्वैमधूकांयच्छीमधूकमवच
 निःकार्थकान्तरथरुहानिःकार्थसमरागंयदीर्गगुपदाययत। प्रकसकं कानयित्वाचगीतलंयाययमृजंयात
 सुधायनाकषणलीनामादनंमृदू। नसेस्तेष्वेवपूर्वाकेदक्षिमास्तेष्वराजययत। रूद्रनविनामृगालानि
 गृह्णतककसन्नकान्। खड्गंनमसुर्कंयवदाययत। खलिनैःसरु। डीदकानिविचित्रानियवसानिमृदूनि
 वाखलिनैरेवसीयाश्चवाचभयप्रदाययत।

॥ संज्ञातयाधर्मासमुद्यदारुवतिवाचनं। कीर्तनंमधूनेकेयकंससुर्थिकेयेदाययत
 चकवाकेवकेरुंसेनाजनूटिदिलमरु। रिः। कार्दवैवहिलेष्वापितिरिनेशुकपिण्डले। श्वविक्कल्यक
 लभारिः। गृकनेमोहिषेसुधा। अजाविकूकूटैष्वेवगतथेवेषादिरिमृगेशराजनार्थंनसंज्ञास्यवसवानं
 चकानयत। ततः। गाल्यादनंननराजयतसनेगं। मदीवमाषयधुर्वैमधूकांयच्छीमधूकमवच
 नतंकनय

xxx

३७

॥ यकं दृतन सरुपाविनी। पातयुक्त यदा तर्था पागस्तनास्य वदन्त। यतं रूगितसंयुक्तं दीवग सरुपावि
 नी। दापय रूगितं नन वल्लुक्क विवदन्ती। कनीनं पिंयादं च गथे वचमं जिक्ता। माकन्दं कूतु विन्दं वरु सिक्ता
 माकभवत्। मरुहसि रूगं च वयभादी वं भूयिक्ता। गवधूकां मृगालानिलवली कं विष्मनिवा। दापयत्तु स
 रूतं ना। गयवसानि विवदन्त। मधूरुगितसंयुक्ता नीद्वयं न निदापयत्तु। धनूकानि ॥ सृगं नागं गमयत्तु। ग
 ववाशुनी वयः ॥ दीर्घं गेहे चैव मदवगमच्च निःसृगं। धनूदी गश्च यानां गमवदवाधवा चान्वितं ॥ नागं म
 यमूक्ता च रुषजं वधु रं सृगं। यरुगं सृगं वगमन्त्येव दीगवला गजः ॥ यः वागनुका नाजन्तु गमः ॥ सम
 रुवन्ति हि। नं वा माहानया। गनसर्वानगो नय साधयत्तु। भस्ममाग्नित्यमतिमानयथाग्निः ॥ सतगाक्तिरः ॥
 माषाणां कलनिधार्णं गुरुलदवभवत्। यनिपानं वदयं स्यात्तु सयं चलवर्णं सूत्रां। विठं गेथे समायुक्तां ग
 थपिकरु कनच। भादकास्त्वपिंदया ॥ गृहं गथां विधिं सतां। दशा चैवा द्वाकं दीर्घं आरु कं वित्त्वभववाड
 लुखलं द्वायित्वा र्यं सूनया ॥ स्किनी। दयसैल नंयुक्तां ॥ लषाक मि विना गतः ॥ आरु कं गुरु लानां
 च माषदा गयुतं स्किनी। किं चैवा रुकं स्तुष्यं सर्वमतं सुसंयुतं। वधु र्थः ॥ रुनिदा गथा भादकः ॥ किं ॥ सकि

प

२०

चार य३ सर

15

10

5

15

10

5

ग॥ ग्रहणी दीपका अक्षुलानी कर्षणहिनी दयसेलनसैयूका भादका द्विकसंयत॥ यदय॥ १॥ वद
 नां वसूक्ष्मां तादिता मुय॥ कनीषाणां प्रयागं गृणु कीर्यतामम॥ गवां कद्रुकमं सैव स्रक् वीर्यां स्मृतां
 गृहता॥ ग्रहणी दीपयत्याधु॥ अक्षमिविनागनी लवणनसमायुक्ती वागयगमनी हिता॥ यवकी गवलाना
 मयवेवदूर्वाला गय॥ त्वकंदाषे रजिहता श्रयां पूना गदिता श्रय॥ विषासयूक दह्ममुद्रका गगुस्मिन
 श्रय॥ नर्वयका नायवान्यनर्षा पथनर्षं स्मृतां॥ अजा कनीषस्यैव गृणु॥ सम्यक्पुकीरितां वाजिनामपिवक्ष
 मिकनीषस्य गृण निमान् कद्रुकं वाक्क वीर्यां वसूक्ष्मं नृपा विनी॥ वातानूला मर्तवेव तथापि रुयकापनी॥ का
 नुल्यनर्षं र्क्यं लवणं दक॥ धनं॥ गृणु॥ अक्षीर्यथा मिमूयाणमपिमृणु॥ नृगामवमूयाणि सर्वा
 यक्ववृद्धिमान्॥ उक्ष्म वीर्यानि जानीयात् कद्रुका निविणषत॥ निवृहष्यर्षं सक्तिरुमिका ऋषदहिनी॥ नर्व
 कनातिधीमान् वैय॥ सदा कात्रय रुत॥ ससदा सुखमाप्नाति पातका खववायथा॥ त्वकंदाषष्यगसा नि
 यानश्चतषूह्यत॥ अक्षुता वेजयनी वसूक्ष्मं कानि वदववा॥ अक्षं संहिता अतर्गं वैसा रनूषर्का॥ अ
 सवष्यसं सक्ति गृणु वा न्यायि यहिता॥ कजा मधूनि यूप्युनिका दीर्घवृता॥ सफयर्षु श्रिनिवश्रमशय

८१

का१

15

10

5

प

२८

निकीरिताः यथा लारुं यथा सात्स्यं यथा कालं च वृद्धिमान् । प्रथमं च तमं तथा गमासवश्च धदाय यत् ॥ त्वर्कं दाष
 गमनाश्च कृमिकाश्च नागनाः । अनाहूयं स्यं नयदस्य दर्वलाय यः स न कानां रुदागवाः । त्रिभुवनं
 वेवदन्ति नां । दूदाणां नयदागवाय ययिरु विकानि ॥ १॥ विंशत्यलमुयधमामश्चमः ॥ यं वविंशकः ॥ ऊय
 न्याविंशकश्चैव कवलमुसदाहिगः । यरुणी दीयनाश्च न वलवर्षुयसादनाः । सिद्धातोषधया गर्भयव
 द्याम्यनपूर्वः ॥ स्वयं युक् गुर्वीचमूययर्षु रुवर्षु की । विदानीमाषयर्षु च का काली दयमववा ॥ १॥ त्म
 लायात्रिरुर्द्ववेजयनी कर्जं कर्क । अग्धगंक्षसमायूकान् कवलान् संयदाय यत् । यरुणी दीयनां प्रनं
 वेजयनी च आरुकी मूलमववा । धीयर्षु दधियर्षु च त्वं मषामूयारुवर्षु । अग्धगंक्षसमायूकान् कवलान्
 संयदाय यत् । यरुणी दीयनाश्च यवसंवारि नंदति । धीयर्षु दधियर्षु च त्वं मूलं नलस्य च । आरुक्ष
 स्त्वमूलानि दद्याच्चैव कर्जं कर्क । प्रनं वद्धतमं संसोमनस्यं वजायत । द्दकं टकात्रिकदशा नमूलं चम
 धीयर्षु । दीयना यरुणी तस्य यवसंवारि नंदति । गंठी च कत्वर्ववगियूकस्य वनालिका । पियलीर्षु ग
 वनास्यां नालिका निपथक् पथक् । यदी विंशत्यलवर्षु नालिकां लिंरुवर्षु । प्रतान् संरुत्य संरुतान् नूक्षा

वज नाका
 नृपञ्च वीवरुपसादनान् । प्रतान् संरुत्य संरुतान् न्याययत्की ग ॥ ३५ ॥

दयित्वा शूलखलामदितां नृणां मय नास्य कवला न्दाय यद्ध ॥ क मिकाशी विष्णुश्च त्महिकी च तखा दति।
 दं कंठ कात्रिकं दं द्यात्किं नि श्चामूलमवय। आवर्त्तमधुनि ग्रंथ कवला मांसवर्द्धन ॥ जीवनी मधुमांशु
 कीरु निषि ॥ जीतकां निवा वित्त्वं क नी रंगणी नी कवला मांसवर्द्धन ॥ दाठिर्मवमनी रं गांडरु र्मगिनि कश्चि
 कां। वत सामुत वल्ली च दाय यत् की लघा उष। गिनीषस्य त्वर्चं लं मानटी सिन्धु वा। न की सदा रुद्रा मयामा र्ग
 कवलां यदाय यत्। क कू नायु धिका मूलमूल्य लं नवमालि की। क नं ज अग्निर्मथश्च कवला अग्नि वर्द्धन ॥
 गन्तु की दाठि र्मगुं ऊर्षं वला याषा ल रुद्र कां। गग विन्दू च लं वत थामधु न साम पि। दाय यत् कवला न क
 लाय थया गं रिष ग्व न ॥ रुवर्द्धन की कात्रि र्यव र्मा रि न न्दति। पूष का मार्क वा स्तु नो नो रथे व दीर्घ वृं न
 की। सुशूची व नू र्णा चैव कवला मांसवर्द्धन ॥ अ न लू त्व व मा रु द्य यू तीर्कं वृ रु ती तथा। अ मृ ती च य य स्यां वम
 द की लघा यदाय यत् ॥ पू ती क त्व गे न लू कें क मि नि द्र कि दं गि न ॥ य य स्या च सुशूची च पु द या की लघा उ का क
 द र्म म व र्णं गी र्णा य न्ना ग त्व व म व च। रा ग न ता न् स र्म क्त्वा नि गि मू र्ण वा स थ न्। य नी र्षं गं च ना ग य क
 वला न् स यदाय यत् ॥

नकर्त्रीकीपिणीगथा। दयादातरुनेअतगुसीरांजनकमववावाताआतकूकिदी। एवात्रगस्यमहीयत।
 डनूवूकाथनकर्त्रीकाकालीदीनमवता। विल्लाठथ्ययदागथावाताआतस्यदन्तिन॥ मूथदा नयवआमि
 पानकामानिदीयनी। कूरीकस्याठकंदयातूरुलानांरुसूहीगथा। विल्लाकनकमालानांत्वच॥ यगानिषा
 ठगा। ग्रीनांलंक यनायविनिगतां। दापीडा। एयदागथानियकंवनवाधिया। रुतवका मकूरीनांत्वच॥
 सीयाजिता॥ समा॥ रु। लिऊकस्यमूलानिगथेवाककनंजया॥ रुवयूनेतः। दा। ना। दा। न॥ कूपादकक
 तां। पूथमूकनविधिनाका नमनंयदायेयतू। कूरीक॥ यानसीका न॥ समनारुंगंयववा। रूथनपा न
 याग॥ सूर्याखातादिपदांवन। चूर्णुत्रिष्टानिवक्षामिगजानामनिदीयनातू। दवरुल्यो कनंजंयया
 विरुदकमववा। रुनिदंविठंगनिदयादिन्दयवानपि। गतावनीच। गार्णवत्वयानिचूलवित्वया॥
 गमूयवासयदावीदिवासूर्यव। गमयतू। विनागभवकत्वाउससूर्यकादयरुत॥ विरुलाहिगु
 यूकंयपंवहिल्लवलीयूनी। लवणस्यचया। गनचूर्णुत्रिष्टस्यषट्पली। दवरुल्यो कनंजीदावधगंभ
 सुवचला। डरु। रुनिदया। नचकनीषगजवाजिता॥ वतसर्वसमाहृत्यसमंकत्वा। मूलखल। नित्यंलव

लयागनवद्वयलंवासादाययत्तु। दो कालोदनिनादयात्तुवृक्षं यागमतद्धिर्ग। मनःप्रसादजनयद्वर्णु
 वनपदकितां। निम्नस्याथकनंजस्यत्तुवावन्नृणकस्यवा। भवर्णं ग्याश्वपाटल्याविदलस्यवसीरुवताम
 धूगि। ग्याश्वताः सर्वसिमरुगधिकल्ययत्तु। डरुमंवेवतीक्ष्णं। गमूतवासयकुर्तु। मन्दागिगमनार्थेय
 द्विपस्युपुदाययत्तु। ननंउपूतिकात्रिष्टेः समां। कवलंरिषक्। निरुहस्यैपूर्वाक्कदाययदाग
 नागतां। सुवर्चलां गुर्वीचमूयामार्गकनंजकी। वेजयकी। चरुनिर्मितधवेसाठवृषकी। नतानुहक
 गजः कल्या नागनृद्विपमं वति। वलं मांसं च दृष्टिं वयाप्रातिस्मृमर्तः सदा। रूखं वृक्षमहीपालवि
 धनं श्रीगधरुषा। यनर्वयाजयद्वेयः सल्लारीजनयिष्यति॥ रूखववीत्यालकाखा नाङ्गा। गनयवा
 दितः॥ ॥ रूगियालकाखा गजायुर्वक्षमहायववनद्वितीयक्षयनामाश्वायः॥ ३० ॥ श्रीगमहिनाजाच
 म्यायामृषिधर्मविदां वनं। विनयनायसंगम्यपालकाख्यं स्मयकुति। कथं मदः सीरुवतिरुतवास्यक
 निस्मृताः। कथं च सुनरिंदानं कटाखां यत्रिवर्तुत। नतमूकां गवाजनपालकाख्यसुताववीतु। वातात
 यरिद्यतकश्चित्कश्चित्तिरुयिरिद्यत। रूखभांरिद्यतवाच्यः। गलिनादपिवायनः। सन्निपातारुथे

य२

१००

वा न्यामदं कनतिवान् वां प्रवर्षययका नश्च सदा वै संपकीर्ति गं सोर्या त्पु रि यत क थि ले पे वा रि ज न न
 वा क र्वा द न्य ४ य व र्क न य त्रि ष मा रु थ प न ४ नै स र्मि क सु थ वा न्य ४ सै ता या द पि वा प न ४ य पू ष्वा य रि यं वा पि
 वा धि दा ष क ता प न ४ ड य धा ना रु थ वा न्य ४ य रि य त म रं ग ज ४ व रु द्द गे त ना ग ना की र्ति ता म द रु त व ४ स
 मा स्त न न ग भ र्दू न गृ षू वि सु न ता हि मा ग रु ता व तू पु व द्वा मि ल क र्ण वा ति क म द । य त्रि धा व ति वा य र्थ । ज
 य न वा न व स्ति ग ४ न वा रि ल ष ति ग्रा सै ण या द ष ष्ठ जा य त । दै रु त व कू ग थ पि व प त सु न य र्थ यि ।
 य ति न म्भ्या रि न म ति वि न म र्थ न म र्थ यि । य रि य त वि धा वै रं सु र्वां ग थ पि र्ज यि ता य वा द क नि का र्ण व
 क षा यं कू नू त म द । च न्द ना णी न प द्मा नां ड ल ला नां सु ग न्ध कं । क रू का नि क षा या नि ति का नि च नि ष व त
 या वृ ट् काल च ति त नां म द सु स्य य व र्क त । नू ति वा ता त्म कं था कं ग जा नां म द ल क र्ण । ३ । ये र्के क स्या
 पि नृ प त वि क्क न मू य द द्ध न ग ज । स्त्री का य न । श्वे व सै ता पी च रु व द्दिय ४ । या य ण गी त र्तां क्का र्थां स लि ल
 वा रि कां क ति । वि दै रु त न म ति च त थ य ति न म र्थ यि । क यो ली वा णु का ग थ प द्वा न व न रा धि या पी ता स त
 थ न कं वा क णा द नं पु सि य त । स ग न्ध चू त य र्था र्णं त्र ला मू सु ज ग न्धि कं । ग न दि ये र्के क ४ काल म द ४ क

15

10

5

नतिवान(गा)कईकामानुसलवणनसजानिनिषवत। रूखतल्लक्षणं पाकं पितागूयकपितमद। यकथापे
 शिकं नाजन्मदं वक्षामिगत्वतः। वलवान्गीलसंपन्नसुजसूधनूकामर्तः। स्वप्नगीलधरुवतिर्मदकमविन
 क्षितः। ग्रामनकूनतकामं र्सीनं वदयत्यपि। पितादकपतीकां पाशुनं कननमदं। सुगन्धं गलपूषाणां सि
 धूवानतनात्रपि। तथातिमूकयूनागवकूलानां वगन्धतः। गीतलं सुनरिंदयं रुमनसं प्रवन्नदं। मधूनामा
 निसर्वाणि निनिषवयत। त्वकैंदार्षिपिजायन्महर्ष्यं संचिद्यं तथा॥ रूखवत्सु शिकं नाजन्मलक्षणं सम
 दाक्षतां। गीतितात्संयदृद्धमदवक्षामि लक्षणं। मधूनां सुंरुमागिष्यनकानि सुलाचनानेव वादिजतक
 साहसिनापियकूयत। विमूकं निवसर्वांगैर्गजः सन्धिषूकः स्नग्गः। गीतलानि च सर्वाणि कया विवारित
 न्दति। गीयायां सुखमात्राति यत्सुषपात्यमिच्छति। पाशुना सर्वगंगाणां सिन्धुमाहा नमिच्छति। पूनीषवमधूद
 नं नर्कं समूय जायत। कठार्यां रुशतयूवं निदाय वापि मायति। ऐरि कस्य रुलिंगमनि सर्वाणि कूनतगजः।
 रूखतत् लक्षणं पाकं मदवे (ग) नितात्मके॥ मूकद्वयवक्षामि सन्निपातात्मकं नृपा। पूर्वोक्तानां मदानां तुल
 नं। सानिपातिकं। दू० त्रियया साधुगीतानां सहिषू र्वतिद्विपः॥ दू० स्कानमथ दू० गीयां सहतसतर्गजः।

प

15

10

5

यतिनम्याहिनमतिविनमत्यूनमत्यपि॥ नारि नन्दतिवाहनं स्वादं स्वाँद्यामिग्रमर्तजानीयान्निग्रगर्भं मर्दं नृ
 पात्रं त्यक्तं सन्निपातयप्ररिन्नस्य उल्लङ्घनं। मरु नऊनितायां उ यस्तु मरु नजायत। योर्गुमास्यां यरि अतमर्दं
 मरु गुलेर्यैती। जानीयाहं उ नाजल्य मर्दं ल रिजनात्मकं। वक्र पूष्य समृद्धानि का किला विनूतानि च। मरु वहिर्ग
 पूषानि वनानि समवेक्ष्वाहं ससा न संगीतानि च कवा कनूतानि च। सताम न स क क्ला न स गन्धि पवनानि च।
 मनाह ना विजम्या विपल्वानि सर्वां सिवा यन्मात्य ल विविद्या विरु मनेः कूजितानि च। द्वा द यि त्वा च पी त्वा च क न
 गू ग ल म ध ग ॥ न व ना ग म म हा ना ज ह्वा द व य रि अत। द्वा ग भ ह्वा ग नी न श्व व या नी ता म र्त ग ज ॥ ही न वी र्या वि
 र्मा सा पि स र्वान् वि धि ती क्त ग ॥ न र्ते मु ल क्वा र्णे वि द्या न्म र्द र्ग या नि ल म मि कं। दू ४ स्का न म थ दू ४ ग र्था ल द्वा २ ल द्वा व
 मा रु र्ता। नि र्त्स न व र्ध व र्ध नि ता न्क त ऊ र्त्त ग ज ॥ य न म र्द य प्र व ति र्द वि द्या नि स र्ग र्ज ॥ उ र्ध्व ल थ र्ध श्व ग म ना न
 गु न्द्रा न ग वा प न ॥ क र्म णे ति य या ग द्वा रु न त वा रु रु द्मा न्। न र्ते नि दो ने ना ग स्य ग नी न मू प त य ता। र्ते
 ४ य सि च्य त द्वा नं दू र्त्त श्वि व म र्थू नृ पा र्त्त स न्ना य र्ज वि द्या न्म र्द वा न ग वि क म ॥ वि वि वि नु गि ना ना गे मूर्त्त ना ग
 व वा य दि। गु द्वा ल के रु रु त्वा द्या धि ना वा न ग म द ॥ वि वि धा रि वि धा रि र्य ४ पू षा मा य ति वा न ग ॥ स म द ४

विर्गमृगालान्गलुक मत्पलनलिनान्यपि। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

विष्णुयविकित्सां संप्रदाययत्। यं चरितं वलीः सार्द्धं पाययत् सुखादकीर्तिं। श्रुत्वा कवलान्दद्याद्वा नग्नयम
हीयत। वातिकामदादाऽन्मृचतर्वेन संप्रदायः। दध्मन्मथवातर्कमाषवृर्धुं च पाययत्। नृननायिचथागव
मृचतः॥ वातिकामदान्। शुद्धकाशायदातर्वेन लपानं महीयत। यवसानिविविगलिमृदूनि रुत्रितानि
वाखलितनायदिश्वनिकवलान् संप्रदाययत्। ॐ तिवातपरिन्नस्य विकित्सां संप्रकीर्त्ता। श्रुत्वा चिरपरि
न्नस्य विकित्सां संप्रदाययत्। पृथुषकालमार्तं गंक्रुदं निर्वययद्दिषक्। गलामासार्द्धलिकायां गीतस्का न
स्तितस्युः। स्रावयद्वा त्रिपूर्णां श्वतस्यापनिनवान् दद्यात्। दापयत् कवलान् तस्मै गार्कनाचूर्णं संप्रदायत्। तस्व
र्द्धनं मूक्तं क्वेवदापयत्। खलिते र्गैर्लोदकानि विवेगलि रुत्रितानि मृदूनि वाखलितनाय संप्रदायत्। अत्र
प्रग्नययदापयत्। नग्नयननथागनय रुद्धपेरिकानृपापवृषकानि मृद्वीकागार्कनाखलितं मधु। सानिवा
मधुर्कवेव समासिचरुत्वा दकी। ततः यतिनयच्छीर्तं कल्याणकायपाययत्। ॐ तिपिरुपुरुदध्मपानना नग्न
मयति। पुरुदधेरिकतस्य यवसानियदापयत्। रुग्णस्य पर्यट्टं दद्यात्। गार्कनाद्यत संप्रदायत्। विष्णिकानां पुनाग
नां गालीनामादनं मृदू। सपिषा राजयन्नागमवैरुदात्तुपमृचत। शूलमूर्ध्ववती क्वेवलवर्तनचदापयत्।

15

10

5

पानं च सर्पिषा (ग्रह मर्त्यं गन्धार्थि सर्पिषा) नृति पिहान् यरि न स्य विकित्सा संप्रकीर्तिता ॥ (सुष्मणा रुद्रि न
 स्य विकित्सा वयवश्चूत। कटुकनास्येन लन सर्वसका विधीयते। गीष्मान् कषाय कटुकान् कवलान् संप्र
 दापयत्। मूजामूगं लसं याश्च (श्लेष्मिक स्तन गाम्यति। दादा रुनिदामं जिह्वा सूक्ष्म चूर्णं) धका नयत्। मूजामू
 गं लसं याश्च पिष्टु मस्ये प्रदापयत्। अनन कमथा (गनय रुद्रात्य निमूचयत्। ३) मूजामूगं
 सामवर्कं पटालं का कतिन्दूकं। पथा पिमधू संप्रकीर्तिता ॥ (सुष्म रुद्रं स्मृतं) यवा दनं च तैल न मायया
 प राजय मज्जी ॥ नृति (सुष्म यरि न स्य विकित्सा संप्रकीर्तिता। यरु देव कर्जं राज नयती का न ४) वयवश्चूत पाययत्
 मूजामूगं चूर्णं पटालं सह संप्रकीर्तिता ॥ काणं कूणं पटालं च यव सार्धं प्रदापयत्। यदूकं पौष्टिकं भावत सर्वसं
 यथा जयत्। सन्निपात यरि न स्य विकित्सा वक्त्रं धूना ॥ (श्लेष्मिक स्य रुद्रा गै हिक ल्ये नाग स्य का नयत्। पौ
 हिक स्य रुद्र यत्कर्म मध्वा कृतं समा रुद्रं। वातिक स्य रुद्र यत्। कांसा या क्रतु यथा जयत्। सन्निपात समूः
 कान मदे या गं प्रदापयत्। वृत्त सीधू समा यूरुं यति पानं यथा ययत्। मद्युगानि न तन वा न ग स्या यजा यत्।
 मूहाना वा न या गं धं संप्रकीर्तिता ॥ सन्निपात समूकान् (ग्रह मर्त्यं च विकित्सीत ॥ नृत्य वृत्तीत्या लका

103

लवणानि वसवो लिपियन्ती मनिवा निव। नृगवर्जं वसं हत्य सूक्ष्म चूर्णं निका नयत्। ३

स्वावाक्कांगनयवादिता॥ ॥ नृतियालकाखगजायुर्वदमहापवचनद्वदनागस्कानदितीयपरिनाय
 ॥३॥ अथगः कर्णुवालजानां कमीर्णानिदानं चिकित्सिर्गुं याक्काखास्यामः॥ नृतिरुसाहुरगवान्पालका
 खा॥ नृहखलुगारुस्तिनांकणयसूक्काकटकसुखानुपूर्वात्तुर्मासं गालितं रुदयन्ति। ग्यामाः नृकाः ॥ ५
 तानकाजाजीवंतग्निराः सवलाः कर्णुजावालजाश्चक्रमयः सरुवन्ति तेषां कर्मिन्नुपसंसृष्टानां लक्षणां य
 त्रिणीयर्तवालां सुगुसाधयत्यत्रिप्रवन्ति क्लियन्मयतः साध्याः अथेषां चिकित्सिगमपदद्वामः ॥ ६ गना
 जारुमकर्णुविर्गं किं च ववा रान्मिधूक् ॥ ७ निर्वसं नसाकाकादनीकाकतिन्दकीकाकमाचीकनवी
 नसर्षयगंजिक्कासेचवलवलयवकात्रनिक्किठीकणिनीषकर्णिकात्रवर्चनरुणि। ऊकर्णं खिनीदानूरुनि
 दाथेकनः कृत्वा समरुगेनूपकभत्। नृतर्षां कषायैः पद्माल्यकल्केः पलयनं कर्था दृष्टुमुपनिसानयद
 नर्षां नृवविकर्णिकां वरुचिचयथार्गं विदधात्॥ नृगश्चाखनर्न विसर्पवत्। पनेग्रावयत्। यन्किं वरुक् नू
 नकमिः। यन्गुनामिव। ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
 अथमिध्वैश्चकषायैः पद्माल्यपलययत्कमिकाः पयूकान्कवलान्दद्यात्॥ नृगं ग्राहकः॥ कषायैः कर्णुके

15

10

5

प

108

किं केलवलीः पानराजनेः। कर्णजा नालां नैव विक्लिप्तं कमीनं रिषक्॥ पायणं पृथक् पायणं वागजानां॥
 ऋयाभुना मुं कसयः गनीना। कार्यः ययत्तः पंगमायतयामुपादिताः पाणरु नारुवन्ति॥ ॥ रूतिपा लकाखा
 गजायुर्वदमहायववनद्रुदस्तु नदितीयकर्णु वालकमिनामायः॥ ५२॥ रूतिपा लकाखा
 गमवावरु॥ रूत्याना गस्य विक्लानं विक्लिप्तां वयथा कमीनं स्यात्तः सहसा दहतथा गीर्षविनवन। कर्णुय
 र्वयनस्यार्थः। प्रागसोः कीटवर्गः नागू। वालं ऊर्ध्वं विगतिरुच्यत वा निमाद्यतः। रूतिपा नननिनसः कर्णुना
 गः पवर्तत। डर्ध्वं कृषिता वायूः। प्रागसि युतिपयतः। रूत्याना गितमादाय कर्णुना गस्य पीठयतः। गनी
 नागं रुकेदोषैर्यदा कर्णुयदूष्यतः तना स्युः मूला व्याधिः कर्णुजं स्यवर्तत। तस्य मानि च नृपाणि वा न
 लस्य निवाधमा। सति युतिपधमति कर्णु। प्रागस्वसोः कर्णः। रूत्याना चाल्य काष्ठं न कवलं न च यषति। पृ
 थग्रवति कर्णु। रूत्यां दुर्गन्धिः रुनिर्लं रुर्गं। रूत्याना नृगसं सनात् कसयः सैरुं किहि। नृभिर्न कसि संसृष्टं दृश्यत
 यस्या रुस्तिनः। कर्णुना गः स विक्ल यः कर्णु। रूत्याना गितवा तजः। रूत्यां वं कर्णुया व्याधी नृदृष्टा रूष्यमा चनत्। रू
 गवर्नं च रागी च विरुं गनि च यषयत्। दवदा नृच कूष्ठं वसूक्ष्मं पिक्व विवक्ष्य गः। न सना ननना गस्य कर्णुया

गानिषचयत् ॥ गतास्यवदना गानि नतस्मात्स्यान्महीयतां न गतं संहृत्य संज्ञानं सूक्ष्मकल्पं यथयत् ॥ गता न
संप्रति प्रावृक्षोऽलसहसंयुतां गतास्य कर्णुयादया कर्णुना गतं यमूचातामधूनीयुं वविल्वं वसनलंदव
दान्वा श्रीकालकुरु लं सानं मांसी कृष्णमवन्नुजं मयूनपिरुमज्जानं विल्वानिकहृणनिवा विर्गं गधुषिवी
जं वतधनिम्वरुलानिवा यवदान्वा धागी नं पिच्छागानि समानि वा सर्वमसमालो यतैलध्रीनाविपाचय
तां गस्य सचयत् कर्णुं वतनलरुतसुखी गं गी नमूलं मधूकं वसुक्तं कर्मा क्षोदलसहसं याश्च कर्णुयाऽपू न
लं हितां यथोऽपू नी कर्म जिष्ठां कृष्णं मधूकमवचाऽधगी नं यक्षकं च वदवदान्वा यथयत् ॥ गतास्य कर्णुयाद
यानस्य कर्मवकानयत् ॥ गेलयकं सज्जनसं दवदान्वा धागुनी ॥ यतमं न संयुक्तं धूर्यं मृत्तो यदा यथा ॥
नीमूलं च मधूकं षष्ठिकानं कूटनटं ॥ मूर्ध्ना मामलकैः सिद्धं मधू सखिं समन्वितां ॥ पियली गृगवर्नं वरुक्का
संपद्यत सुखी ॥ श्रीकालविनवित्वा र्यां न सावैः ण विकारुवत् ॥ अथ गह्वरिषकं च वरुं यत्नविः ण भग
ॐ ह्यगकर्णुना गस्य सनिदानं चिकित्तितां ॥ पृच्छतं नामाद्रायपालकाख्यानकीर्तितां ॥ ॥ ॐ निपालका
खगजायुर्वदमहायववनं कृष्णनागकानदिगीयकर्णुना गनामाश्वासय ॥ ३॥ ॥ अरुकाक्षं नानाज

x x v

नू सनिदानविकिसिनी। नागस्य संयवक्षमिति न निगदत ४ गृह्य। वातन सहित ४। एषा ददय संयुधा व
 नि। आमाग यं धम न्यनं पून यित्वा वनिष्ठत। करु न वद ददय ४ कृट वं पन्तु वं हर्षा ॥ अना वमानं कृकुणकिं
 विदभाति वा जग ४। तस्य न नाहि हतस्य विकिसा संयवक्षत। तस्या सर्वप्रसन्ना वामे नयं वा पिपाययत्तु
 हिंयु नार्थं वल वलौ ववा हनि वल्लु नं पिपयत्यो मत्रि चानि वस्यं वल वलौ नै कसे कवलान् संयदा पथ
 नूत जावर्ता विकदू कं तथे व क दू नो हिणी। मधूना सरु संथा अक वलान् संयथा जयत्तु। विषकं सज्यं हि
 प युं विरुला वदना निवा हनि वनि प्रवीर्ज चक जं वी जम वचा र्थं वरिते वलौ ४ सार्द्धं द्वादयित्वा मूलू खल। १०५
 सकुलि ४ सरु संथा अक वलान् यतिश जयत्तु। कदू कां नाहिणीं या र्थं यव द्वा रं ससे न्वर्वा पिपयत्य ४ कदू क
 मत्स्यां श्वमनी चीं वाट नूख कं सवर्णि समरा गनि द्वा दयित्वा मूलू खल ॥ गमय न समा यूकान् कवलान्
 नै कस्य दाययत्तु। मूहं धा न दनं तस्मै दया कि कदू का निनी दद ४ सवा रुय दी क ४ काष्ठ रा जगान् नपि। न
 वं गजानां विधिव क्तने न नि नूदा दत ४। रुकं सर्वम (गुषण दह्य नि निव न्वन १ रुक कन्दो रुव ह्यवम
 निदी क श्व जायत ॥ ॥ नूतिया ल का श्व गजा यूव दम हा यव वन द्वितीय रुक कन्दो () नामा

आय० ॥ ५४ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ या पातकाख्यं सप्तश्लोकि । रुक्मिणीं सायनं यद्वत्तु कर्णवृद्धिं तत्त्वतः ॥
 न संवत्सरं गिरिं चेतममामां समधपि वा । दक्षिणां ज० न संवत्सरं गिरिं चेतममामां समधपि वा । दक्षिणां ज० न संवत्सरं गिरिं चेतममामां समधपि वा ।
 सात्त्विकं चेतनं निखादयत् । विष्णोः सपत्नितोऽयं च कथं गमयति दक्षिणां । प्रवृत्तं चेतनं गमयति दक्षिणां । प्रवृत्तं चेतनं गमयति दक्षिणां ।
 सुतावतीनां । अनादिमश्च निधनं काया निपत्रिमश्च तः । पशुं लक्ष्मीं युकं वीजं तस्य रुतिष्ठति । अनादिमश्च निधनं काया निपत्रिमश्च तः । पशुं लक्ष्मीं युकं वीजं तस्य रुतिष्ठति ।
 हिमालयं जीवस्य विष्णुं साममधुलं । मधुं मधुलं विद्यारुतः । सूर्यस्य मधुलं । यदीकं सर्वसत्त्वानां त
 स्य मधुं दूता गतः । नृणां काणमास्काय यथा दीपसुधार्थं रुसः । तिष्ठति मिमिता दीकानुगतं च तैर्न रु
 मि । गजानां नारि मधुं यवमाग्रावतिष्ठत । कस्वैमं यकाः । गुरुस्तिष्ठति । विष्णोः सपत्नितोऽयं च कथं गमयति दक्षिणां । प्रवृत्तं चेतनं गमयति दक्षिणां ।
 निसर्वां सिद्धा । तद्वद्गजानां सूर्यं युकं ज० जानाति मधिरुतः । मुखयुक्तिं कमाय रु सूर्यकाका मधिरुतः । द
 क्षिणां ज० न संवत्सरं गिरिं चेतममामां समधपि वा । दक्षिणां ज० न संवत्सरं गिरिं चेतममामां समधपि वा । दक्षिणां ज० न संवत्सरं गिरिं चेतममामां समधपि वा ।
 ॥ दिक्कथं कत्रणं कोर्षं सलिलं न च पूर्ववत् । श्रीगणेशाय नमः । सर्वजगत्कृत्वा न जं गमं । श्रीगणेशाय नमः ।
 काजाजन्तु दक्षिणां सचरु विषः । सूर्यात्तु कानि मागानि यस्मात्सामात्मकानि च । सूर्यात्तु कानि मागानि यस्मात्सामात्मकानि च ।

तजाकुसुमायतः ॥ ३

यज

॥ कायश्चान्यथ तिष्ठति प्रमालतः । कृमिकीठपतं लघून् न वनाजः । इति ॥

सूर्यादि विषयः तिष्ठति

१ गायत्र्या च यथा च विधीयते । तद्धृतान्तर्गतं किं च दध्मन् विपाचयत् । तत्रियर्था विर्तमानं प्रदहन्त्येकाचयत् । अकपल्लितं ददन्

वर्णनं सूर्यदर्शने

15

चाठनूषका । कर्कशं च नर्कनीति लघिर्द्वयं च यत् । नाजीसुखाद्यौ जलजानां वसत्वानां मयामां संचयाचयत् ।
 स्वयं सूर्येण गार्ग्यं सुखाद्यैर्नृपलपयत् । ग्याता कपातली विल्वं काम्यं वगूयति का । आनन्दं कना क्रीमं च
 गृणीं ससंभवं सर्वपां सलपर्णं वल्लुपिच्छानिकाचयत् । सुखाद्यैः सद्युतं च वयदहं सुस्ययुञ्जत । स्रहपा
 नं वनागस्य गार्ग्यं च दापयत् । डीर... दकानां वसत्वानां नसे संप्रति राजयत् । अग्नान् सर्वथा गार्ग्यं
 क्रियं न कं प्रमादयत् । निर्दोषं गार्ग्यं तद्वद्विगार्ग्यं तं प्रनिवृत्तं यत् । गृहधूमं हविद्यायां सकृद्वसंभवं नचा
 ल्यमवाति कावाधिवद्वतपिरुसं रुवः । अग्नां राजनानि र्थं कटू कात्यगनादपि । लवणस्याति यागश्च पिरु १००
 धातुः यक्यति । डनादानीं समाग्निर्यथैयथैः स्युजयत् । यथैयथैः स्युपीतास्तत्र कारुण्यं पितृद्वत । पिरु
 द्वाहं यनागस्य क्रियं पाकं च गच्छति । रुक्मि कर्तुं पलाग्निसूक्ष्मं चूर्णनिकाचयत् । सूर्येण ययसापक्वा
 गार्ग्यं तस्य प्रलपयत् । दवदानं च यश्चाक्रां पुरुनी कं नलं तथा । पद्मं च वलार्धं च मात्यानि लजानि वा स
 मराग्निययसां सद्रूपिच्छानिकाचयत् । सूर्येण सह सौम्यं यदहं तस्य काचयत् । ग्यातां सूर्यमतीं च वन
 नलसूनानि वा दद्यात्पुनी कं च विषामति विषान्कथा । मकनस्य च मां सानि गार्ग्यं संचययत् । दर्वीयल

प

मा १ ज ३

5

पंविज्ञायतनसुमवतात्रयत्। तनप्रदहं नागस्यवहः लंपदापयत्। कृष्णमूलानि संहृत्य धूम्रं साजिवांग
आपयसासह पिष्टानि प्रदहः सद्युता रुवत्। अतिवृद्धवध्वपथीयकृन्तनस्य कात्रयत्। निक्षीपे गालिगंदह
कषायेऽपनिचूर्णयत्। अश्वत्थस्य कषायलसक्तस्य ककूरस्य चारुत्रिदा गृहधूमायां लघुनेऽसंभ
वनवाग्नेयपिष्टजः पाकावद्यतं करुसंरुवः। राजनस्यातिमाधुर्यात्संभलाम्बुनसंनयि। नागस्यास्य
पुष्पात्राचवसक्तं कृषिगः करुः। उदयध्वयधूस्य जायतग्लान्मसंरुवः। दानुलं करिनेत्येवर्गो विम
न्दवदनः। प्रतद्वनस्य विज्ञानं व्याख्यास्यामश्चिकित्सीतः। गमयवर्णपणालिखदां ध्याययश्चिषका वृत्तं
नपूर्वमस्य कदुयात्संखदने गजः। काकादनीमतिविषां सुवर्णां गालयशिकां। काष्णतर्कीलां गतीं च वि
वर्कं रुक्मि कर्णुकीं। गृहं वने रुद्रिदां च कल्कपिष्टानि कात्रयत्। रुक्मि मृगलसं सुखं सुखाश्रं स्यात्पुनप
नं। कृष्णवातिविषां वैवतगनंदवदानुवः। स्वर्गैर्जिर्कां धुमतिवैवहनिदीं चिगर्कं तथा। अत्रानुजानि वीजा
निसेधवैरुसमारुत्रत्। अश्वत्थस्य सुखाश्रं यद्गतास्य कस्यलपनीं पुनर्धुवां वि कर्कं विगमन्यथसेधवैरा
द्गगन्मरुद्रिददकनवीनं सगियुक्तं। पषयद्वस्मि मृगलसर्पिषा वनूर्णं तथा। नात्युश्रं दृत्तसंयुक्तं प्रदहं नस्य

15

10

5

कानयत्। यत्निर्मयतालास्यां मूढयूषं विपाचयत्। ततः ॥ गत्या दनं न न राजयदा नर्गं लिखत्। विद्वद्भयं (थो
 तस्य कार्यं ॥ गतिगमादृणं। निर्दोषं ॥ गतिगंदृष्टा ॥ गुरुं गंयति वृत्तं यत्। कदनादिनी पियत् ॥ कृणोति भवसर्वं
 ॥ सुप्रवृत्तं। मां सनमदसा वायदा रुवत्। तदा निकटिना राजनृक्षकुसाश्च जायत। ततस्तु स्वदनात् ॥ गेसु
 लपाने ॥ यमदने ॥ पानलयनया ॥ गेययथैके ॥ समुपाचयत् ॥ गी ॥ कषाये ॥ कदूर्कं ॥ तस्य वनिषवने ॥ वाया
 मेर्द्धा वरुन ॥ गुरुमर्द्धं जयत् ॥ कुरुन। दाणी कार्या उरि नार्या ॥ गधनानियदाययत्। विवलीयय ॥ कानिने
 प लानिव विपाचयत्। ॥ लक्ष्यं कुरु ॥ यत्किं काननी ॥ क्लामुलवलेनाहो नैर्जययदा ॥ ७ ॥ भूतिकर्मवाया ॥ १०८
 मानूकमादकं यकूयति। ७ ॥ दा ॥ गतिगं ॥ गुरुं जययत् ॥ कुरु ॥ ततः ॥ तिकर्मात् ॥ सुरुर्वदे ॥ अतये हि कायथ
 । सुमहान् साधुदहने ॥ पाकमाश्च रिगुक्कति ॥ तस्य स्निग्धं मृदूलदूणी तं मधुनमववा ॥ राजनयुषत नित्यं न
 वाष्मानु निषवती ॥ तिन्दूकं वा नू सज्जातां पला ॥ गुरुमववा ॥ त्वर्वकी नलसं विद्वद्भयं ॥ कस्य लपनी ॥
 ५ ॥ मवत्वव ॥ सम्यक् कुरु ॥ साय विपाचयत् ॥ ततः ॥ सुहावले ॥ उपा नं रुक्ममववा ॥ गधय ॥ ७ ॥ दमानस्य का
 र्यं ॥ गतिगमादृणं। निर्दोषं ॥ गतिगंदृष्टा ॥ पूर्वोक्तं यति वृत्तं यत्। पूर्वोक्तं गतिगमादृष्टा ॥ यत्किं नस्या नू लपनी

यः

याः

१०८

15

रुनं यदि ह्यं। धाणी क। ग। रं रुमिका रुका सम सं गयं रुक्ति च वा न गनी। पठा लये ४ सरु निम्व पतु मूद्र
 प्रसिद्धं यपि वच यूर्य। ग। ल्या दनं वापि मृदुः सुसिद्धं दया शं। कं य व सं विचि र्त्तं ॥ ग। ग। क ४। धाणी क ३
 यदि रु व नि द्वि प स्या रि नः स कि पुं य द नि जी वि र्त्तं वि द द ४। उ र्व य ४ स म य नि वा न स्य व य ४ स प्र धा रु
 व नि य नानु प ल यूर्जा ॥ ॥ नू ति या ल का ख ग जा यूर्व द म हा य व च न द्वि ती य धाणी क। ग। ल्या ना मा ३
 ध्या य ४। ३ ३ ॥ नू ति या ना ग जा वा ज नू य थ रु व नि त नू गृ ४। नू था। ग। ना न रि कू न था ग जा वा रि ना रु ४
 स ह वि र्त्तं धा रु य व स स थै व स न सार्त्त न ४। धा य न य मु मा र्त्त। ग। था य न न व क र्म ग। ल। रु त वा नि
 दो र्व ल्य मा ना रु व व वा न ४। रु क म थ व व र्त्तं ग। न द त्वं न थै व च। स दौ ये ल्य पुं न नो। ग। मृ क्त्वा क र्म
 वि ग न द ४। नू क र्म वि य य र्त्त ग ४। सं ज्ञा न क र्म नि। री म क र्म नि वा ना ग स थ। रि च व धा व धा रु सि
 य द्ध पि वा ल्य थ म थ सी ग्र मि क पि वा। त्व न या क र्म ला रु दा य था ग स्या नि मा रु या। व ला व ल म वि क्त्वा य
 या क्ता ना र्ग य पी उ य त। नू ल्थ र्थ क र्म था। ग। न त द ग। य। लि मा नू त ४। पि कू न स रि त रु स्य वा या द य नि रु सि
 न ४। य र्थ ग सी य ती का। ग। य। ला प स्का न म व च। क ला र्थी व स कू टि क र्म रू ४। व क स कि नी ज द न र्त्त न

10

5

वापिर्जगन्तं च गच्छन्तं सः। लल्लुगं गच्छन्तं वापिर्जगत्काण्डे वल्लुगं। अथार्थं कर्मथा। गच्छन्तं नमस्कृति। कृ
 म्यमानमुदीर्घं लुगं कर्मनिनयना रुवं। कृण्वि वल्लुगं पाण्डुनि नृत्सा रुग्ण जायत। यन्नीर्षं रुग्ण वा
 स्य। गच्छन्तं वयमरुति। उल्लाह वल्लुगं लवर्णुयः। कियं चपनि हीयत। यवसं पल्लवं वापिन गच्छमरुति न
 न्दति। आहो वः यगलं वापिन वृद्धि मूयग कृति कर्मणीति नामा गच्छति पाणिनि नृयत। दा नृल्लुगं ल
 लुगं कर्मस्य संनिवर्णयत। कन वः सहितं वनं यथ कालं विद्या नयत॥ नम्यं वन रवं वृष्यथाश्च
 प वृसृगं धिषू। रुल्लुगं कन रवं वृष्यथाश्च विगहयत। वृक्षं लुगं लताः रुल्लुगं सृगं वृक्षं वृक्षं दा कला
 १। यव कष्य सुमात्रेण रुक्कयः कं विद्या नयत। चन्दन स्य गीर्णं वा कर्दमं हा नयत॥ यं वृक्षं हा नय
 दनं कल्लुगं पि सृजं दपि। यवसानि विचित्राणि रुक्मिणानि मृदूनि चा विष्णुनि यमृल्लुगं लानि पल्लवानि मृदू
 निवाः रुक्मिणानि यवसानि कव लानि यदा ययत। मनः प्रसादं यथ तथ वल्लुगं ववाप जायत। गच्छन्तं सजात मांसं
 यवा नम्यमहीयत। यमन्नां मंदिनां निर्युक्तं यकां यदा ययत। रुक्मिणानि यथ वाप सन्नां लवर्णे
 र्युक्तां। नोस्मि वृक्षिका नां वग्लिनां वासुसंस्कृतां। उदनी दापय दैयः। गच्छन्तं दानं र्युक्तां रुक्मिणीयानि वृक्षा

११०

त १ ली ३ अतिपन्नार्थ २ या

15

10

5

15

10

5

लिमांसान्यसो गतः यत्रा वसवा न स वायिका न यित्वा यथा पयता मांसो दोने सध सुह विविधे यवसे
 नयिावसि लिहृ हं लीये श्वगीतन विविधे नयि श्रुतिपातस्य नागस्य वलं गीयं यव रुत । बाधिः यगमनेयः
 नियागे नरुि न्नश्च न ॥ ॐ स्ववमति पात मुया कु द्वा षे ग जायत । तस्मान्मुखो यमा र्गं न दयः पृथिवीपत
 ॥ ॐ नियाल का र्थ ग जायु र्वद महायवचन दू द वा ग क्तान द्वि तीथ श्रुतिपाता नामा श्रयः ॥ ॐ न
 त्रामया दामहा नं जाः यलम्य नि त्र सा णु विः पाल का र्थ मूनिव र्न विन या त्य विष्ट कृति । गुल्माः यं च मूनि
 ण्येष्ट बाध या द कि ना मिह । पूर्वेषां कारु ग व ता ना म ता वा ग सं ग्रहा समूक्ता नं च नृयं च त र्था विस्तु जता
 वदा वि कि त्सा वा नू पूर्व ग र ग व न्व कु म रु सि । ए वं पृष्टः सरु ग वा नू पाल का र्थ सु भा व वी ता । ण्ठ ग र्वे व
 महा राज य स न्न ता न्न वा त्म ना । गुल्मां यं च महा ना ऊ य पा काः सं ग्रहं म र्या त र्था नि दान म त्प लिः ॥ वि कि
 त्सा च य व द्यु त । वा ता ति ला क्क रु च्चे व ण नि ता च्च य को य ना ता । जा य न दं ति नां गुल्मः स नि पा ना च्च यं च
 मया दू र्वा व श्व सर्व र्थां लिं ग वि ह्वा न म व द । क म ण न न वि धि व च्चि कि त्सां च य व द्यु त । रु सु र्यं ग म च्च प
 ना नि का ल न ल रु ग य द ॥ सि ष्व रु के श्व मां से वा य द ना । ग नि त्रा क्त नः त द्वा गु ल्म समू त्प लि जा य न वा

तकायन० कदुनिककषायानां नसानां वातिस्त्वनात्। शुक्कानिचयदानात्। गतयवसानिचयजयत्। कयानी
 यययानवायदायिवतिवात्र०॥ लव०॥ दकते लंवायदानलरुतगज०॥ मूल्यतजो नदानादा सरुसाकः
 व्यत०३ निल०॥ सतस्यजनयहुत्सं समनार्तदुदयस्यच। पृथीर्षरिद्यतवास्य आ०॥ यथायिलक्षतौ। तस्याना
 हं सृजनकायात्काष्ठवायूरुमयपि। क०॥ गजनिमार्त०॥ गदृष्टिकालेयथयन०॥ यमरुतिप्रसक्तं ववि
 मना०॥ संकुचयपि। संकुमाधित्यविसंस्कूलं निधिसितिद्विप०॥ यमरुत्यपिविचिनीवालमूर्द्धमदस्य
 निरुत्यते लंकलीयुका वातगुल्मा उवा द्विप०॥ धृतिर्कचिद्वर्कदनी गधुी नंस्वर्हा वचा। पियली शैथ
 वं पाणं देहं कुर्वमहोषधं कूलकौंथयवांश्चैव समरागमनययषयताते लं वसूत्रया वायिसका रूपा
 ययद्विप०। गंभी नं किं दुर्कं म्यामां डव नो सूनसां वचा। पियली मत्रिचं चैव मलिलनविपावयत्। वसूत्र
 नं उकार्थं वै सकृलवल्गान्वितीतत्यान०॥ पाययनागमत्रयनारिसूक्तिर्गं। राहियं यं वमूलद्ववर्षा रू व
 धिकालिका। वसूक्तं वं समं स्वर्जिकां काथयकुला सकृलवर्गं। काथं तथा वसूत्रयत्रिधुर्गं। सूत्रय
 मूक्तिर्गं नागं गन्धर्वो वयपाययत्। मधूनिगूचगधुी नं विगर्कं वदनालित्र। यवान्नवा कूलकौंथयं वमूला

१११

तं ३

त्रिवं २
 वसिन्त्रिवं २ घा

१५ निपाचयत्। काथेनाननसहितं वा नादं काथयत्सं। नं न संलवर्णं स्निग्धं वा नर्णं प्रतिपादयत्। मृदू गम्याद
 नं न वन संन सह राजयत्। क्रियां सर्वं धिना गम्यानि गम्य कस्य का नयत्। विधिना तं नागस्य वात गुल्मः प्रगम्य
 ति॥ ॥ नृतिपात्काश्च गजायुर्वक्षसमहाप्रवचनं वात गुल्माश्चायः ॥ ७८ ॥ सक्रियः स निदानं धिपिरु गुल्मः
 १० यवच्छता। मूला मूकदूती क्लाणि दाना निवयदा द्विपः। राजनानि निषवत नृकाणि जलजानि च। स नर्णं स व
 मानस्य द्विपस्या नियतात्मनः॥ मूतिमार्गं यदा वापि श्ववर्णं वातं नृपाश्च मध्वनः प्रयागमच्च गुल्मा रुचति पि
 रुजः। सर्पांश्च विमनाश्चैव नादकं राजनं द्विपः। रुर्णं संतप्तं दह्यन्ती तमवारि नन्दति। रु मूतिमार्गं मूक
 ५ वविदारु मूलास्य जायत। रुकस्य पत्रिण भववदना वाधनं गजं। उदार्जं वच्छनं कर्म पिरु गुल्मानि वर्हन्।
 उनी नं मय कं लार्धं मं जिह्वां नाहिणी कथा। रुनी न कर्कं रुनिष्ठं सह दर्वी ससात्रिवा। समान्यतानि सर्वाणि ज
 र्जरी रुख्यं स तयत्। मसूठिका समायुक्तं वा नर्णं प्रतिपादयत्। यियाला निमधूकानि सात्रिवा कदली
 रुली पाठली यष्टि पण्डुं वरु निर्व्वं वरु नीतकीं। विरु मूलं मधूकं च निन्दूकानि गता वरीं। खडू र्जी जी न कं
 लार्धं गथे वा मलकानि च। सर्वाणि गानि सलिल समरा गति का नयत्। सर्वं मधू न कः स र्पिः प्रयाग र्जी व

पावयत्। दिग्दक्षस्य पाननयिरुगुत्साह्यमच्यत। कथिंजले मयूत्रे ग्लोवे ग्लोपि सति क्रिनेः। मूर्ध्नि स्तुतं न
 संकृत्वा राजयद्वा नर्वागतः। ग्लोमा कं मिलिपादं वमृगलक्ष्मि वि सानिवा। मूर्ध्नि वानि रु सवर्वा लिय वसानि प्र
 दापयत्। उर्वां सले के स्यापि। यूक्ता ग्रासः प्रगस्यत। दिपा नीविधि प्रस्यत्। लिखुत्साह्यमच्यत। मूर्ध्नि प्र
 ४ सति दानं ग्लोमा गुल्मं यवश्च न। हवनं लंघनं वापि न नर्वा गमनं प्रमं। कृत्वा धातं प्रमार्थं वयवा नीति
 नर्वा गथा। यदानं लंघनं नागं दिवा स्वार्थं वकात्रि नः। दिपा नीविधि प्रस्यः स्यात्। ग्लोमा गुल्मं यवश्च नः। सि
 प ग्लोमा वमधूना वापि वा नर्वा ग्लोमा त्रिधाः। यल लंघनं धिमत्स्यां ग्लोमा नमिदं मुकुटं वमर्ध्नि दका नं वसुत्वा नां
 मांसानां मयि सुवनात्। मूर्ध्नि यामाच्च नागस्य गुल्मा रुवति। ग्लोमा ग्लोमा सति वलु कति नर्वा ग्लोमा सति ४ ग्लोमा तं च
 च कति। दूर्ध्नि नागु नृद्वि ग्लोमा मधूना रुषं ग्लोमा जायत। ग्लोमा रि नन्दी प्रधाता रुक्मं वा स्या नय च्यत। नि नृ
 रुत्साह्यमर्त्यं वयूनी र्वा ग्लोमा वरुं। रुनि दं मूर्ध्नि सानि मूर्ध्नि पा र्वा ग्लोमा वरुं वरुं। नाज वरुं वसुत्वा लंघनं
 वरुं ता वरुं। न कानि यत् रुं ग्लोमा समरा ग्लोमा निका नयत्। कटू र्ध्नि लंघनं यूक्ता नं का र्थं प्रतियाय यत्। वा
 र्ध्नि वन क मालं वमूर्ध्नि वद ना विवा नि यूवी र्ज क्लृप्तं ववि र्ज क्लृप्तं विवि र्ज क्लृप्तं विवि र्ज क्लृप्तं विवि र्ज क्लृप्तं

११२

कृति ३५

मादाय पावयत् । त्विदं कान्तमायकं न कथं पाययद्विदं ॥ पदे वचि न विलस्येते लंघीना विपाचयत् । तल्लं
लंगुल्लग्नार्थं वा नर्गं प्रतिपादयत् ॥ १ ॥ नर्गं तस्मै सन्धवनपियली मन्त्रिवा निव । राजना
र्थं वयानववा नर्गानां प्रदाययत् । वयं पदं कृणं कानं हृणं धाद गलं नृपा क्ली न पादं यव संकनी न वय
दाययत् । ७ ॥ मूलवधनिर्ह्यं कदूती क्वा विराजयत् । पिरु गुल्मस्य यस्या कं व्याध नृत्य किं लक्ष्मीं गत्वा
मानसमूक्तं न गुल्मा रुवति । ८ ॥ विरिणं न कं मूर्ध पृथीषं च वमं च निगच्छति । नामां स्य यणी र्थं न पिरु हृष
यजायत । ९ ॥ मूलवले विद्यादक गुल्मं विकित्सकः । पिरु गुल्मं दिनं स्रुविधिः कार्यं विकित्सकः । सज्जं
पियालमध्वरुं मधूकं चन्दनं तथा । विदुर्न च सुकर्णुं वसहामो रुम्वरं तथा । निन्द कामजं गृहीतं वगता वनी
रुबीतकी । समरागानिययसा पावयदतिप्रकिं तः । पत्रिग्राव्यवतं कार्यं न कं नावूर्धु संयुगी । पाययदा
नर्गं राजन संयुक्तं मधूकं नवापी यर्धु मूलमधूकं तथा गन्धर्व रुसुकी । आन गवधं मधूकानि कां भयार्थं च
गता वनी । पयस्यां दृष्टि पार्धुं च मूलमिदं न कस्य वा गरुति कं समं जिहं रुवायां वा वगता निव । कांठं क
त्ययित्वा रुसमा न्यता निपादयत् । सुगी नं राजयत् कार्यं न कं नावूर्धु संयुगी । चउर्धु मधु गुल्मानां पूर्वोक्ता

x x x

15

10

5

निवक्रादयित्वा प्रसन्नया सह पानं दद्यात् विमूक नार्गवेन कर्कट नयन राजयदिति ॥ ॥ वृत्तिवार्तिक
 द्वादश ॥ ॥ अर्थः कटुक नीक्षुष्म लवण काजन सशवनात्तिरुप कृपिर्न द्वादश गंजनयति । सरुव
 तिरुक्ता शब्देषु विमना विकीर्ण सु ४ प विमूय विनमति व्यायति निमीलति ॥ सतक ६ नीर्जनी नास्ति न
 न्दी सलिलावगहा कांकी तस्य रुषर्षि गिनि नमधून सिग्ध क्रिया ण क नामधून न सामृदिका रि ॥ धूर्ग य
 य ४ निर्ग पायं यत् ॥ जंगलेश्वर से विमूक पैरि क द्वादश गंजन यदथ संपद्यत सुखी ॥ ॥ वृत्तिपैरि क द्वाद
 द्वादश ॥ ॥ अर्थः मधून गुन सिग्ध गिनि न राजनाम करु ४ य द्वादश दय मवपीठयति । सरुवति गजा
 त्रिकाला लाविष्ठावी ॥ सुलंघ्ये सिति ॥ लक्ष्मण य स न मोहा न मूढ मति । गिनि न व मु द्षी रुवति । तस्य रु
 षर्षि निका कटुक पाय नूक्ष राजनी सा निवा ग्ना क्षिप्वा ण रु द मूसा वद न सैयू कानू क वलान्द यागू
 गन्ध की की न दृक्त्व कू न दीर्घ वूर्णा व क वलान मधू मिश्रानू राजयत् । कपित्था ग्वे कर्षु पियं गु मूसा
 ताल पया णं कषायं घा दा व निष्क मव ता य विना ग स्तिर्न मधूना सह याय यत् । विमूक द्वादश गंजन मे (६)
 यन न भू न राजयत् ॥ ॥ लक्ष्मि क न द्वादश ग न मूयत दि न द वृत्ति ॥ ॥ नव रत्ना क ४ ॥ द्वादश ग मुग य ४ या
 निरुद्ध नयन ॥

15

10

5

प

कावागपिरुक्कहा त्मका॥ नतानयधोकेरुषेर्मतिमान्साधयहिषक् ॥ ॥ वृत्तिपालकाख्यगजा
 यूर्वद्वितीयत्रकानसकनितमाध्याय॥ ॥ वृत्तखलुशंगजानांगमनागमश्चत्वात्र॥ संरुवन्निस्वदरु
 संरुवा॥ वागपिरुक्कहसन्निपाते॥ तर्थावातसंरुवमवादीवक्ष्याम॥ ॥ संरुवत्यतिप्रसक्ताद्यायामा
 दत्यध्वगमनादूताहानाद॥ स्काननयनादत्ययवावादतिर्वधनात्कृणस्यवातस्कानयौगज्जांगलयवस
 नभायथागमश्चातिमार्तदंष्टयाजनां रियागाच्चवात॥ यकृपितागमनागंजनयति। तत्रमानिलिगमनिदलीय
 ति। गगाणमस्यसंरु॥ धयधूधजायतनीवाचवदनासन्धिव्यामयध्वरुवंति। अतिर्गं सर्वगगाणं लक्ष्म
 न्यास॥ ननेर्वात्रधाकेर्नवनिधिलानिननखानिककुलववहिर्गगाणिचविह्वरतिस्वातिकं गगना
 गणारिरुयनवृत्तिविक्षयावात्रलस्यचिकित्सिउमूयदक्ष्याम॥ तस्याद्योद्यतनेलवसारि॥ सम
 स्कारि॥ यत्रिषक्॥ सतर्नकरुवाय॥ यययास्वहार्मावयानी॥ तथा॥ यतिपानविनचनानूवासनस्का
 यनेस्यविदध्मातु। राजनं चवातद्वयवसान्कविर्धेरिर्विध्मातु॥ किर्यां वास्यनिवरुयतु॥ अलियत्रिषकाव
 गरुणिनित्रसंवमानिचनिवरुयतु। स्वदगाणिगभाकालीर्विध्मायतिकिर्यांकूर्यातु। सर्ववीजानीवातद्यु

११४

म३.

५२

प३

नमः गालीयलपकायत्। द्विपंचमूलानिमाषान्संक्षयस्तद्धनसाधयित्वासीधुदधिवत्तयावाद्यतनसूत्रा ३३

नीचूर्णनि का नतल नपावयित्वा यथाथागमप नाहं का नथत्। कपिलमधूनि पूर्वभाटवृषकार्शनाक
नर्कोर्यनिमंथकार्यासंस्कीनिवसंक्षुभ समरागमभनमोषधगर्ह समरागदूग्वनपावयत्तमहाका
ल्या। ननास्यनाली स्वर्दक्यात्। कतार्थगस्य कतस्वदस्यवपनिषवर्नगवयाः ४ सीधूनां कर्तव्यद्वतम
७ नवर्क्यात्। अहिं प्रामधूकगियूकप्रवीनतकोनी रुददा नूतधुलीयक ३३ लवणतसीकि
वसर्षयतिलान्धिसमरागमनसूक्ष्मचूर्ण कतानूक्षी नपावयत्तसुदुर्गेलवद्युतवसारिः ४ गतः ४ सिद्धमवतार्य
मनसुखाश्रुनापिगगालिलयथत्। आरुकीमधूकगियूगनमूल केन्रंठवीजानिविधरुषडी। पृथिका
वलागसीतिलसर्षसयवर्तुलकलक किं वतदत्र विल्वचूर्णनिसमरागनियावयित्वाद्युतगेलव
सारिर्दध्नासीवीनकलसूत्रामंठ नवसंयोषरागावयत्तनाहित पाणी नमस्यानू संक्षयतन ४ पंचत्राय
मकतामहाकाल्या मासैतमासर्वयूनः काथयित्वा शूवतार्यतनसुखाश्रुनयलयर्नगगालीका नथत्॥
तथाद्वपंचमूलानिलान्माषान्सर्षयांश्चेलवद्युतयामीलितया ४ समरागया ४ साधयित्वा शूम्ननदध्ना
संयोषतनापिसुखाश्रुनयदहं गगालीका नथत्। तेलवद्युतदध्ना निसुखाश्रुनियाग नयथक् समरा

निपाययत्। गध वलानास्त्रागोक्षत्रक वासावाक्लीक कंठकात्रिका कर्कशानूक रकोत्री मधूक पृष्ठिप
लुं मूत्रपुर्णुं पुमनी पाषाण रुदिका विल्वपाटली यवाग सीमधूक कांक्षक लक्ष्म नूपावयित्वा गतं निःक
थं द्विगुहं गेलं नयावयित्वा मधूक गरुं पाययद्वात्रगी सयिस्त्रिलदधीनि सूखाक्का निवृथक् समस्तानि
वापाययत्। द्विपंचमूलं गृहीत्वेन स्त्रिग्वन समाकुलं गत्रस्यूक नशो जयत्। सह दाना कनान्य गमन
वागयगमन नक्षत्रहायक मणयवत्रत्। निर्वर्तिक न वास्य विधिना तस्मिन् कर्म कुर्यात्। यथा कवसिद्ध
प सिद्ध विधानेन वा वलिं दद्यात्। अथ दकयत्रिषं कार्यं गयदह लपनं सुकत्र सहा जनयिंशत्वा त्रिका
पनाह रूह लपाषाण कात्री पाग्नि मांसं सस्त्र दारिद्रि विधिवन्मर्दनं धनस्य स्त्ररूपानशो जनयिंशत्कं व
स्त्रिनस्यं कर्म प्रयागत्र सहा जनलघुन गुलुलु विधाना यथागादि रिग्वन गम्यति ॥ ग्वयधूर्वदनाति
गविण पात्सर्जधाह संदानं संनखपालिह सुयस्क जांसद ग्वादीनां वसतगमूयलस्य गतं ॥ अथ
कर्म विधये रुवति। गस्य सूर्यं दिनस्य त्रिंशत् द्विंशत् तस्य सन्निहितस्य स्त्र नगयनयानागना ययनस्य य
थाविगतस्य गसूत्रं कं पतादायेन स्य सर्वं संरुग संस्कारस्य कुलपत्रिं वा त्रिंशत् तस्या सदगयर्गं निषजा

११३

कनयनि।
विधानेन विधिना तनिना वरधन दद्यात् त्रिंशत् विधानेन संपूरुहस्यायर्धद विदालातन विपक्षिता।

यत्॥ गगनोत्तमो रवतः॥ यः स्वदेहो कमविहितो सुभायदहो नर्यो गेन नितरुने श्वयानशो अथ कथ्यात्स पत्न
दतिगगना गमूयं नागनामनिलसमृक्तिर्न कमलानुतां श्वकमविहिता क्रियायथा गमनं भुक्ता क
विधि मनुस्ययः पुकथ्यात्। सुत्कार्यः सरुवति पार्थिवैर्महात्मा वदन्ने त्रिवरुवन प्रवदरुसु॥ वातिक
गगनागः॥ उष्णकर्मण्यथयागं यध्वगमतकटकाष्मत्तलवणश्वनादत्यर्थयागालिहं पुकपितं रुवति
। तस्य सिमिः॥ तगगनालिदध्वकतनाः तीव्रवदनार्हश्च जियुति वयध्वश्चाश्वत्तमनिमार्गं गगनां तस्य
प सुनासंयुक्तं नद्युतना र्यंगं कथ्यात् निलनवासर्जं न सैनकवलनसर्पिषामृणालमूकमधूकर्मजिष्ठा यद
करुददानूकणयवान्कलुः पिष्टानदधिमधूद्युतेः स्याच्छलपयत् गगनालि॥ अथवा यथा तलकूम
दगुं गटकालीवलविभानिवतसं दूगालिमूलानिक क्कात्रसूनिषधु कानिधययत् नैवपिकल्लेदधिस
र्यिसंयुक्तेः यलपयत् यदासा निवाः मधूकचंदनं मूसादादालाधोनी नकूमदात्यलपु धीकाः ॥ ११ ॥
॥ गगालि पिष्टकी वनरुणगूल्यः कालाणीतगि वानिलविषमृणालयवकुं श्वसर्वालि समरागानि
दूग्धनयपयित्वा ननसद्युतनकल्लेन बुदिग्व गगस्य गगनागः पेलिकः यग्नानि मूयग कृति॥ जीवक

११३

अथवा यथा कालीनयवचंदनमं जिष्ठा जीवनालि समरागानिकल्लपिष्टानि दधियुतेः स्याच्छलपयत् गगनालि ३

मञ्जालिविषयविज्ञानाः सुगमजगत्पुत्रं पुनरावापलस्यमस्ति नृपस्य गवयथुचिः ४

१५
१०
५
१५
२०
२५
३०
३५
४०
४५
५०
५५
६०
६५
७०
७५
८०
८५
९०
९५
१००
१०५
११०
११५
१२०
१२५
१३०
१३५
१४०
१४५
१५०
१५५
१६०
१६५
१७०
१७५
१८०
१८५
१९०
१९५
२००
२०५
२१०
२१५
२२०
२२५
२३०
२३५
२४०
२४५
२५०
२५५
२६०
२६५
२७०
२७५
२८०
२८५
२९०
२९५
३००
३०५
३१०
३१५
३२०
३२५
३३०
३३५
३४०
३४५
३५०
३५५
३६०
३६५
३७०
३७५
३८०
३८५
३९०
३९५
४००
४०५
४१०
४१५
४२०
४२५
४३०
४३५
४४०
४४५
४५०
४५५
४६०
४६५
४७०
४७५
४८०
४८५
४९०
४९५
५००
५०५
५१०
५१५
५२०
५२५
५३०
५३५
५४०
५४५
५५०
५५५
५६०
५६५
५७०
५७५
५८०
५८५
५९०
५९५
६००
६०५
६१०
६१५
६२०
६२५
६३०
६३५
६४०
६४५
६५०
६५५
६६०
६६५
६७०
६७५
६८०
६८५
६९०
६९५
७००
७०५
७१०
७१५
७२०
७२५
७३०
७३५
७४०
७४५
७५०
७५५
७६०
७६५
७७०
७७५
७८०
७८५
७९०
७९५
८००
८०५
८१०
८१५
८२०
८२५
८३०
८३५
८४०
८४५
८५०
८५५
८६०
८६५
८७०
८७५
८८०
८८५
८९०
८९५
९००
९०५
९१०
९१५
९२०
९२५
९३०
९३५
९४०
९४५
९५०
९५५
९६०
९६५
९७०
९७५
९८०
९८५
९९०
९९५
१०००

x x x

स्य सुखाङ्गनाङ्गं कर्मेण वरुलन गगना निपुल पयत् ॥ १ ॥ अथ कायगमनार्थार्जं गल मूकवीर्यं यवसंयुदाययत्
यवानेव वियलीङ्गं गवने सने लवर्णयुक्तं समन्त्रिवंशजयद्याधियं ॥ २ ॥ तिकैकदृक् वासी रुद्धं लयुतं धेवव
॥ ३ ॥ राजनेदाययद्येयः ॥ ४ ॥ अथ कायगमनार्थार्जं गल मूकवीर्यं यवसंयुदाययत्
लहसातिस्त्रहातिनूकात्सर्वधायकायारुवति ॥ ५ ॥ यकृपिगाधधातवादायाध्यान्यामरिवर्द्धयति ॥ ६ ॥ सानि
यातिकश्च जायत गगना गस्तु ॥ ७ ॥ अथ यथैयं किल लषूक्तं नषूय रिद्यत ॥ ८ ॥ अथ कथं वतिय रिन्नध्वयुन नाध्याय
प मायनश्च सह सेवय रिद्यत सर्वधायुलिंगनां वागसंयुवा दधत नारि रुता वाज ॥ ९ ॥ अथ नमस्यार्थं प्राणमांस
कथं चलरुत अतः सानियातिक नारि रुत स्या विकिसिद्धमूयदक्षाम ॥ १० ॥ यावदसुक्थय वतित्ता वलिरु ॥ ११ ॥
कैः ॥ १२ ॥ यदहं नूयकभन्त ॥ १३ ॥ अथ कायगमनार्थार्जं गल मूकवीर्यं यवसंयुदाययत्
कर्ण ॥ १४ ॥ अथ कायगमनार्थार्जं गल मूकवीर्यं यवसंयुदाययत्
यसुलिलयाचयत् ॥ १५ ॥ सहस्रं हाकयिक्तुतर्कात्रीयुष्टिकाययत् ॥ १६ ॥ गेगं मूयुलचनिः ॥ १७ ॥ काथ्य गतास्य गगनां नाजी
स्वदं कयात्ता सुवच्चिक्तेन जीदय काला दनीदवनी कयिक्तु विन विल्वसौ वल्लयाध्वं गगन् गम मूयुल सा

११०

म। प।

धयित्वागेंस्यस्वदं संकं गगनागं कुर्यात् ॥ पाठनिविषाहिमावचामधूकलांगलीमूलानिलाधल्लुनैनासामं
जिष्ठाहनीतकीदहविषयिगुतं ललवलाकि ध्वानिस्मरागानिचूर्णयित्वाध्विनेलद्युते ४ स्यात्
विनागं स्फुपयित्वातनसूखाधूनयल्लयनं गगनागं कानयतं ॥ गगनागं कोरुवत ४ ॥ नूतिदायसमूक्तानां
कारितारुषजक्रिया ॥ चतुर्धुं गगनागं गगनागं ॥ त्रिभुजसल्लकर्णयिन्नानुसाधयद्वेष्टागगनागान्यथा
विधि ॥ संपूयसतर्गनाक्काजानमानयत्रिग्रह ४ ॥ ॥ नूतिसान्निपातिक ४ ॥ नूतिदायजगगनाग ४ ॥ अर्थांगय
निजवहितमना ४ समासीनमनिकल्पमवाचयाल्लकार्य ॥ रुगतनवनवधिकवल्लसल्लगुणयुक्तादतिन
४ ॥ नूत्यवमवगतसितगुतं वां सरुसारुजगमन ॥ तत्रलविहनेली ४ संगडयैत्यत ॥ गगनागं सकथमत्य
यनवाधि ४ कतिविधावाहीकैर्गग ४ कतिर्गग ४ कतिविधं विकित्तिर्गग ४ कथंवरुगवाधर्विच्युनिविष्ट
यनिम्नानि नो जानीयादिति ॥ कश्चित्सर्जुतगगलकश्चिल्लनकश्चित्सोहनकश्चिदयस्कात्रलकश्चिद्वन
साकश्चिदंसनकश्चित्सर्वदू ४ खितगगु नूतिगगं गत्वगाक्का नैसाध्वासाध्वायाययत्याखंयाध्वाणीतापकमाणी
यच्चवाधो नयदिग्धदंतिनाहिकत्रयत्रलनयनाचिष्ठाना नूत्युर्कं रुवता ॥ अथविनयादवनगितेवसमंग

ति ४

त २

15 ऊनेमवच्छेपा लकाखाववीत्। दंतिनां खलु महा राजद्विविधं गणना (गणयति)। अगं दुर्धाषज (अभिगणः)
 10 गगनुर्दोद (गणयति) ४ अजवा (अद्विविधः) प्रतिक्रिय (अकुरु) यवनयिह सन्निपातात्स कादाषज ४ धाक ४ द
 द (गणयति) त्रितियदूकं तद्वक्षामः॥ यमनर्गं न ह्यवच्छेद न विनिपातवधर्वधना रिद्यातय प्रधक्षवतर्ल
 यनगुनूह वणरा वा दहनदू ४ खलु न गयना नीतिगुणि त्रिकूला च यात विषमगमनात्यतर्न पिच्छिलः
 निधिल्लुना तूर्गं नर्न॥ स्मृत्वा गमला वविषमांधका नगमनोस्वल न विनिपातनं विज्ञातगमनात् पूर्वतिः
 प मागुं याकर्वधना दधर्वधनायलिः ४ प्रतिक्रियतिषा गमधनमूषलखेद्गणयणकुक्षितामत्रयाजनादः
 रिद्यातायलिः॥ यत्रा (अद्विविधः) कर्माध्वगमनं वति॥ मनाय कर्षणया गतां नानामसा २ २ धूपक
 मगम (अमूगमं) नूकं त्रि वीथीनां वातिमागु गमनादत्रिवलुच वणद (गणयति) दना च कर्मयत्रा धायलि
 रुवति। अलयेत्वा तिमागु दध्वगमनादध्वयत्रा धायलिः॥ गगणां यूगयदूत्यतर्न प्रवर्तिरूयं॥ नूकं क
 5 गमलं दनं॥ वा त्रियत्रिखा संकु मगमदिति वृक्षया का नकपाट २ २ रुं रा रिद्याता दाला नमदना रिहिय
 रुनीनां मदर्नं गुनूह वणं। अतिप्रमाणरा न संवरु नं रा वा दहनं॥ विषमा गमल्लु सवाधदू ४ स्मृत्वा ग

ला ४

ग्यातिगमनप्रतिक्रियननग याग नमि३

११८

15

10

5

यनादः स्तानगयनायलि र्वति। आपलि र्वनूत्यलि त्रिह्यनर्थं तत्रं वगवाधं त्रियदूकं तदनूया
 खास्यामः॥ अवाधरुग्नया वधं विद्युतपत्रिस्तानविष्णुसर्गः॥ तत्ररुग्नं नामद्विविधं विष्णुयं सं
 धिरुग्नं संधिः र्वनं वा गतिमग्नसंधिः अयवर्जं र्वनं अर्धं सर्वस्यापि। यतागमननिष्ठलिर्मन्त्रं वा
 संधिरुग्नं रुसाधं॥ व्यावधद्विविधं वा ३२५५ नूतनं यवनमपि न कयवनं र्वं द्विविधमस्ति र्वं॥ ग
 नूतकः उमनः॥ स्वलनुयतनात्मकं र्वति। यतनं र्वनं नूतनविह्वलनात्मकं वायवं र्वति। तस्य स्व
 लुलदाणां निःश्वयधुर्वदनादाहयत्रिष्णुषदोर्मनस्यानित्रकः। वदनात् र्वगतिर्वैकल्यानिवातः। य
 त्रिस्तानं नामयवृक्षं मुकर्मनियदिनित्राविच्छिन्नादावापहतावाग्भित्तमावहति गतवृत्तदाग्भित्ति
 तसंक्षयादायुर्गताग्भित्तिरयत्रिस्तानं विद्यात्॥ विष्णुषर्गं नामविनिष्ठात्कृतिविग्नसर्गं संभवदा
 त्ययत। र्वगं र्वतियदूकं तद्वक्ष्यामः॥ सरुवतिषु द्विधं सुलनां स र्वनां र्वसायस्का वगवाधं सर्वगतं
 नूतनं। यावाग्भित्तिर्यवर्गं नाम र्वनं यकमग्नगुल्मादिस्तु नूतनं र्विषुः कर्कटवद्वर्तिरुजतयायवाग्भ
 लाह्वगत्रधानवर्ती मही मन्दगतिर्वारुवति गजः॥ र्वकं नामधितविद्युतं तलसंधिपाश्विपूना नखां तन्त्रं खतलं

व२
 वधर्वधने कूलसंभारवति। गताद्युद्धयस्सूटितनिधिलविप्रकीर्णितः प्रविनलग्निलेने २

वह्यपत्तानसंगः उत्राकर्मवि विकारवि लषासंग उहाता गयत्यर्हं सांसदगता मूदहनंग मनमूपवंगनं २

पर्यक्तगतिश्चरुव तीतिगतसंगः ॥ यस्तु द्वयारु ॥ हजर्ग ककु दूदहनमवनमनं वाधारु सगिधारु संगः
वाधायत्तानककां विकारुसं ॥ ककु दूदावगनमनूवगनं वानित्रीरुर्गंगमनं वादू ॥ खादिना लू ॥
संगः ॥ यत्यंगं सांसरु लक कर्तु मुखगिन ॥ गिनाधनागं ककु दूदहनंगमनमित्यंसंगः ॥ सर्वलिंगद
नं सर्वसंगं ॥ सर्वगुण्यथर्वदनासं रुगतिवैकल्यानि नियमानिरुवन्ति ॥ सति विधः साध्यासाध्याः
यथाख्ययथातग निरुग संधिजः पर्वजः सवयवर्गं ॥ स्तु ॥ साध्या ॥ वावधचवनयत्रिम्हानान्यपि सर्व
प त्नायकिता निया निरुव ॥ साध्या निवा (ग) वागिरि वक्तु सा ॥ लोषध कालसंयदा सिध्दन्ति ॥ तर्वांगी
नाम्नायद्विविधक्रिया ॥ रुवनिवाग (स्त) क ॥ लू ॥ दूदि ॥ समूद ॥ षणर्वधियथा कर्म ॥ विकित्तिगमथाय ॥ ११२
स्यवित्तु नयवद्वन ॥ अथ मनस्कं ॥ मरुषिमरिवाद्यां गधियति नूवावत्रा मयाद ॥ रुगवनयदूकं ॥ रुग
वता आगनागगनागस्य षणवाधस्य लदूर्गं नूत्वा ॥ मरुभवे कर्त्य मनसः ॥ सयवर्कं नस्य विकित्तिगम
यददू मरु सि रुगवन्ति ॥ अथ वा वयाल काखो ॥ उका मया स्वदह समूक्तस्य गगनागस्य समूत्तु किल
कूर्गं विकित्साय ॥ अगना विदानी विकित्तिगमूयददू मः ॥ तस्यां गनिवदू ॥ गी गलनया नीयनसवय

ग॥ ग॥ ला क॥ शं व मृ॥ लि क॥ या॥ य॥ लि॥ य॥ स॥ र्ज॥ र्ज॥ न॥ क॥ दं॥ व॥ क॥ ला॥ न॥ य॥ द्या॥ त्प॥ ल॥ क॥ म॥ द॥ ज॥ त्प॥ लि॥ म॥ क॥ क॥ न॥ व॥ म॥ लि॥ का॥
 सह॥ का॥ न॥ न्दी॥ व॥ न॥ स॥ क॥ क॥ दा॥ स॥ न॥ नी॥ य॥ क॥ ठ॥ ज॥ पु॥ न॥ ग॥ व॥ म॥ य॥ का॥ ला॥ क॥ न॥ लि॥ का॥ म॥ ग॥ क॥ या॥ ठ॥ लि॥ क॥ न॥ व॥ का॥ का॥
 ल॥ ध॥ व॥ ध॥ न॥ व॥ न॥ का॥ त्प॥ ला॥ दि॥ रि॥ य॥ र्ज॥ र्ज॥ सी॥ य॥ न्ने॥ क॥ म॥ मे॥ य॥ की॥ र्ज॥ र्ज॥ मि॥ रा॥ गं॥ स्कु॥ नं॥ ग॥ य॥ व॥ क॥ त्वा॥ य॥ नि॥ ध॥ कै॥ स॥
 गी॥ न॥ न॥ वा॥ नि॥ ग॥ य॥ य॥ सा॥ वा॥ का॥ न॥ य॥ न॥ ग॥ ना॥ गुं॥ दा॥ म॥ ल॥ म॥ न॥ व॥ का॥ गी॥ वा॥ लि॥ की॥ न॥ व॥ य॥ य॥ यि॥ त्वा॥ द्यु॥ त॥ न॥ व॥ य॥ थू॥
 म॥ न॥ म॥ थ॥ य॥ ल॥ यं॥ का॥ न॥ य॥ न॥ ल॥ क॥ न॥ य॥ य॥ ध॥ क॥ र्ज॥ न॥ क॥ द॥ म॥ व॥ क॥ र्ज॥ की॥ न॥ यि॥ द्या॥ रि॥ य॥ ल॥ य॥ य॥ ज॥
 ग॥ लि॥ न॥ ल॥ वं॥ श॥ ल॥ द्वा॥ वे॥ न॥ म॥ लि॥ का॥ नां॥ म॥ ल॥ नि॥ य॥ व॥ नि॥ ल॥ क॥ क॥ स॥ न॥ क॥ क॥ मि॥ ग्रा॥ लि॥ स॥ पि॥ की॥ ना॥ र्थां॥ सं॥ या॥ अ॥
 ग॥ ग॥ ल॥ य॥ नं॥ क॥ र्थां॥ ग॥ क॥ म॥ द्या॥ त्प॥ ल॥ य॥ द्या॥ क॥ वि॥ ग॥ मृ॥ ग॥ ल॥ गुं॥ ग॥ ठ॥ क॥ क॥ स॥ न॥ का॥ र्णां॥ क॥ क॥ पि॥ द्या॥ नां॥ द्यु॥ त॥ न॥
 सह॥ ल॥ य॥ य॥ व॥ नि॥ ल॥ ग॥ धू॥ म॥ चू॥ र्ज॥ य॥ द्या॥ क॥ क॥ स॥ न॥ क॥ क॥ द्यु॥ त॥ न॥ य॥ य॥ सां॥ ला॥ य॥ ग॥ ग॥ ल॥ यं॥ क॥ र्थां॥ ग॥ धा॥ ठं॥ ल॥
 गुं॥ द॥ द्वा॥ लि॥ का॥ नां॥ म॥ ल॥ नि॥ व॥ स्कु॥ म॥ ग॥ पि॥ की॥ न॥ व॥ य॥ न॥ व॥ सह॥ ग॥ ग॥ ल॥ यं॥ क॥ र्थां॥ ग॥ त॥ न॥ य॥ द॥ ह॥ न॥ य॥
 धा॥ या॥ र्गं॥ यं॥ जी॥ त॥ य॥ या॥ ग॥ ग॥ न॥ नां॥ गुं॥ र्गं॥ गुं॥ नां॥ य॥ ग॥ नि॥ ग॥ क॥ ति॥ अ॥ थ॥ वा॥ व॥ ला॥ ति॥ व॥ ल॥ था॥ य॥ ल॥ ग॥ र्गं॥ य॥ द्या॥
 लि॥ र्गं॥ ज॥ र्ज॥ नी॥ क॥ य॥ वि॥ ग॥ ति॥ य॥ स्कु॥ ना॥ य॥ क॥ थि॥ र्गं॥ या॥ दा॥ व॥ नि॥ क॥ स॥ व॥ ना॥ र्थां॥ ग॥ य॥ य॥ स॥ य॥ त्वा॥ न॥ य॥ क॥ द॥ व॥ द्या॥ न॥

७२ का दि

वा३ नै२ त्वहिः कल्कपिष्टादिद्युतयकारिः प्रलययन्नालि। अथ विगतमनोमज्जनाह ४

यस्मीनध्वं चूर्णं दिव्यं लीसमां वायुनत्रधिग्रथरुण्यं वने लयस्तु समा लोच साधयत्। सिद्धमवतार्य
र्यगपांतस्य कर्मसुखाजयत्॥ अथै० यवसकुवदने चूर्णं द्युतयकारिणी गतानीर्यं वाययत्। ततश्चै० नै० ग
तोभीतद्युतनायं सुवन्दनागी नसात्रिंशो वनकूटनटयदा कसधूकपयोधुनी कदवयुष्यमांसी कृष्टयाद्यन
खरु नै० लारिं नै० ग्राधोत्तवाध्वत्तुमधूकदर्वे महिषागमदांसि कृकूठगिष्ठुमात्रभदाहिः सहस्रह
पावयत्। तनगगालिवास्यार्यं जयत्॥ नतनरुगनविद्युतमधि त्विग्लिष्टानं संधानं रुवति। का काली
की नका काली जीवकर्षरुक्मश्चिद्विभदमहामदद्विमूजययुय श्रीमधूकसात्रिवाननास्यन्दन
त्वहिः ४ की न विपाद्यगीतली कृत्वा यरुतर्के गेनं द्युतं पाययत्सर्पिषा वा र्यं जयत्तनागालि। अहिं सांजं वृ
त्वर्वं चूर्णं कृत्य यवकुत्मापमिध्वननमदसावावयित्वा नीतं विषमृगलं गृह्णाटककसं नूकास्वयं गु
फा कल्कं न सद्युतनले पथं जगालि। नलर्वं रुतवतसं दूगालीनां मूलानि की न गन्तु कपिष्टानियवति
लकसं नूकल्कं न स्याद्युतनगगलपथं कार्या॥ गमकां रूतवाधं त्वर्वं वतसं मूलानि चूर्णं कृत्य पयस
साधयित्वा सिद्धमवतार्य र्यगपानवस्ति नस्य कर्मसुखाजयत्॥ तथै० गमहिषा जानां मूगयुनीषालि

नाननगगालिलपयत् ४

१२०

दधिद्वृत्तदूग्धेऽसंयोज्यं काथयन् ॥ गन्तावाप्यवाक्की कवमनीयगणितयवगितलपिठौलवणनित्यावयित्वा
 पच्यमानननननास्यसुखांशुनसंकरं गन्तागणितप्रसूदयन् ॥ गन्तास्यगन्तागंमार्दवमयजायतयाधिधन
 न्यति। प्लवकादं वटिं समद्रुवलाकाचकवाकः ॥ तिलिनितावकयागवटिं ककुटं विक्कुलक (गध
 रुविण्मयसुनाहितमहिषाजवनाहमं सैः नसंवसवावयूकं कावयन् ॥ नकागाल्यादतं वसुस्मिन्नमन
 नवसवाननसद्युतनराजयित्वा नसमनयानंदयान् ॥ नतदवधेनूविधूतवसुकीनमंनिर्यातवग (गधसिर्ग
 गगनागहिरुतानां विधेयमननैव सर्वसंजातवलवीर्यारुवक्रियसूर्यं नवाधिरि ॥ गग (गधक ॥ वूर्या
 गगाः क्रियावाकामयापार्थिवसहस्रं गगनागस्यनागनां यथावदनुपूर्वग ॥ ॥ वूरिगगं उकष्य
 वाध ॥ ॥ गग (गहिराजाचम्यायां पालकाख्यं स्पष्टकुति। गगनागः कतिविधा कतिनां संयुक्तीति ॥ ॥
 विक्रान्तं च कथं गगां किंच नगां विकिसिर्ग ॥ गगत्वं पृच्छगगहिरगगनागनूयधविधान्। स्पष्टस्त्वंगनाजन
 पालकाख्यं सुतावतीन् ॥ नूयत ॥ ॥ गग (गहिराजाचम्यायां पालकाख्यं स्पष्टकुति। गगनागः कतिविधा कतिनां संयुक्तीति ॥ ॥
 ॥ त्वाहर्तं ॥ ३ ॥ गथा ॥ ३ ॥ संकचिर्ग ॥ १ ॥ रुग् ॥ ८ ॥ म्लानं ॥ १ ॥ मावशि ॥ १० ॥ तं च यत् ॥ ११ ॥ निविधिर्ग ॥ १२ ॥ वि

स्वदस्यदतिनः। जेते पिरुवत्कार्यं सर्वतः प विमर्दनं। कूटजस्य निमंथस्य मषणं गी क पि क्क थाः॥ व नू व
स्या नू वू कस्य पणाय्या न वधस्य वा। आरु की स क प र्णु व त थ सै ल य का वू री। क्क ल्या मा ध य क र्क था ना जी स्व
दः मू नः पू नः सि न्न स्य व र वत्कार्यं मर्दनं ल गु ग द नेः॥ अ य म न्या वि धिः कार्या ना ज न्ना र्द व का न री। म
हि ष स्य व न्ना र्क स्य मा र्ज ना र्ग। ग वा म पि। स्व न्ना र्क र्ग त मां सा नि य आ न्य स्की नि वा य था। क द यि त्वा र त स्का
नि ना जी स्व दं य क ल्प य त्॥ य थ क ने व वि धि ना म र्दनं ग स्य का न य त्॥ कू ल क्क ना रु की वी र्ज व द ना लिय
वां सि ल्ता ना य य सा र्पं व मू लं व क्क ल्या मा ध य या व य त्। त भा स्य का न य त् स्व दं ना थि व स त र्ग रि ष क्क सि
न्न स्य व य नेः कार्या म र्दनं पू र्व की र्ति र्ग। न च द नं वि धि ना ग र्ग ग क्क नि मा र्द वं। त भा स्य वि धि व न्ना र्क र्ग
ख ल स्व द्वा र्ज नं त वः। स मी थ त स्य ना ग स्य क म्मी र्त्त व र्ग नं रु व त्॥ त भा स्य ल्ता य य क्क ल्ता न् अग्नि व र्णु न्
रि ष क्क त थ। पा ट ला व द्वा ग र स्य त थ। ति ग्ब स्य द नि नः। ति ल स र्प य चू र्णु य य वे आ ल य नं रु व त्। त गः
सं वा न य क्क लं य थ या र्ग वि च क्क र्ग। सि न्न न वि धि वत्कार्यं म र्दनं त स्य रु सि नः। रु त न्न च त्प य क्क नि म
नू पू न क्क स्य स मा च न त्। वि ध य क्क स्य ग र्ग र्ग सि न्न ना र्ग च नि व र्क र्ग। वी जा नि वा र क्क य वाः क्क आ च म्

नग

अथ वीजाकार्या मूलमतसि सर्वपानपि। तिलान्।

15

10

5

15

10

5

हिका॥ सम्यक् सिद्ध नदी नग सुखाश्रुनाथ सर्वग ॥ कल्लु नाननतागस्य पिण्डे स्वर्दय कल्ययत् ॥ स्तिन्न
 स्यवपूनः कार्ये मूर्च्छुर्मवगमरुनी। सलिलवर्णीतनागनी पूनः कार्ये कात्रयत् ॥ नव नव ॥ ॥ ॥ ॥
 विधिः कार्यः पिण्डे स्वर्दयथा कर्म। मर्दनं वास्य पूर्विकं नागी स्वर्दय कात्रयत् ॥ नव मन्या विधिः कार्ये सु
 वगमर्च्छुर्हस्तिनः ॥ यक्क ययनगगणार्णं सर्वतादः यगम्यति दवदा नूह विदीय सह दर्वी गतावनी।
 कर्षं नास्त्राव कालाव सजलं वपूनर्त्तवा। नर्वं सूर्य स राना विण्डे स्वर्दय कल्ययत् ॥ पूर्विकं न विधा
 प ननमर्दनं च विवद्वग ॥ निवात सुस्य वास्यं गं मर्दनं तत् कात्रयत् ॥ सर्वस्व दनतागस्य स्तिन्न स्येव वि
 गरुनी। निवातं यं च नार्त्तं सक्रवात मध्यापिवा। स्त्रहास्यं गः यथा कवाः यथ कस्तिन्न स्वर्दतिनी। अथ वेत
 न कल्येन विगणाना यलस्यत। अथेनं स्त्रहयत् सम्यगगतन विधिना रिषक। ॥ ॥ ॥ यव काल कल्लु
 नी नि कार्ये साधू कात्रयत् ॥ यद्विधरुगु च वती नि कार्ये च मूलया ॥ नर्वं लं समाग्निय गता मृद्वनिना
 पचत् ॥ यश्च मानं सुस्मिनिर्मं गरुं पुदाययत् ॥ अनं ता चंदनागी नमः ॥ कं सा विवाद्यती। तथा च दी न
 का काली जीव कर्षुका वृत्ती। का काली मधूर्कं वास्त्रा सजलं दवदा नूह नूह कं किन्न नूहं वली चापय

१२२

त२ वाज

त३

३३

5

10

15

20

25

30

नस्यसंविष्णुत्यतः। नचतिष्ठतिगणार्थान्वयव्यतिदिपः ३

[illegible]

भीतल यानृय॥ कूकूणिगुमात्राणं मूठान्यादत्यन्तमुविताविप्रक्लितां सुर्वावासीदद्यात्स्वदि गसंयु
तां। अपनय॥ ययूषितां नूणां वमंहीयत। ततश्च लय॥ गीतार्यं गगुणं पूजिता रुवतू। कूकूणिगुमा
त्राणं मूठान्यादत्यन्तमुविता। मजिष्ठां चैव मृदीकां सपिषा सहयषयत। ततश्च लयं गगुणं वरुलन
समाचनतू॥ पानं चैव यथार्थं पाययत विद्वानग॥ विनिश्चिद्यस्य विज्ञानं विकित्सावयवकीर्तिता॥ ॥
ॐ तिनियिष्य विकित्सा॥ ॥ अथ स्येय रुवमोर्गं पुं प्रत्यसु मत्यसुं सरुसानिधनायिच। कोचर्यवापि
प सरुसायपि त्रिणीतस्य दन्तिन॥ न्यसुं वा सरुसावर्धं गगुणं निधनसुथा। तत्र गगुणापि सलिलनिनासुं ॥ १२३
युहिद्यातग॥ यसुं रितां गतां गगुणं सवृजं दन्तिना रुवतू। यसुं च सवृजं गगुणं वहिर्हवति वा नग॥ न च
सुं नयया। गवा समं सुं उमथकुति। गिनायकायात्यसुं च यथूश्वास्यजायत। विहर्गनामर्तं विद्या रु
स्ययं वक्षतक्रिया। अद्यायामं सुखसुं न सुखं दस्य करुच॥ यलधाद्युं यून॥ पाययतूयु न स सुं च
कमेलेमर्तं गजं॥ रुसुं न तस्य गगुणं मदर्नं वायिका नयतू। कमवायामवृद्धिं वतिहितस्य विकित्सा
नी॥ ॐ तिनियिष्य॥ ॥ आरुतस्यापि वक्षामि विकित्सां लक्षणां निवायथानिमित्तं मार्तं गगुणं वरुलन
सं३

गय्यामवधर्न। कान्यच्च स्यते लन सनतीपविधवर्न। कूसावतिलकिं निदीयता सहयषयत। कान्यच्च

वहलनयलपयत्तिलयूकमजाकीर्णपानार्थविधदापयत्त। ह्यवलिक्ता वस्य

भगवत्पदं

मृकृति। मिथ्यावसरुसावेक्यागजः पविणीयत। तनसुस्य रुवकात्तं मधत्सुनूजं रुणी। सगकृतिस्
मृगैस्तुत्यगममृदुम्यवानृपासहसाजयमवास्यधयधुगगसंधिषू॥ सचनं सर्वगगनीं तस्य तेलनकात्रयं
ग। सुखाश्रुनरुववास्यानिहृलिसुस्यकर्मणी। मकोयुक्तिवृका नांसि। ग्रन्थकस्यकात्रयत्त। कंठकात्रिकथोष्टि
वकपित्तस्य गथेववा। पंरुं गनसमादायनिकाधर्पवमूलया। नाडीस्वदं यथायाकं सस्त्रहं वैवमर्दनीय
वचूर्णं च किं वनथाकृष्णं च मृहिकां। मृजाकृतीर्षदीनगसर्पिषा च यथाजयत्त। तनस्त्रिनानि गगालिं
वर्धयत्त। विष्टयवगनः कार्यं सचनं मर्दनानिव॥ ॥ ह्यारुगविकिसा॥ ॥ गगनयस्य रुवकुन
मयवावापिदंतिनः॥ तस्य लिगनिवद्यामिचिकिसां च यथाकर्म॥
का। वलावलमविक्तायसरुसायः ययुअनं पुत्राधस्य गगनयक
रुवागस्य कृयति॥ तनकाया च छुद्यनिगिना गगनं समागिना। तनयस्य रुववजगः गू नगगवावतिष्ठत
नचस्कननगयायां वाजगालरुतसूरवी। सुखाश्रुनाथतेलनयलपं तस्य कात्रयत्त। नाडीस्वदं यथाया
कं सस्त्रिनस्यापिमर्दनी। जलयूकमथतेलपानार्थं तस्य ययुत। निगूर्वगपलागं च निम्बस्य च वटस्य

वारुहिक कर्तुं यत्नानि किं लिख्ये वया वयत् । नाडी स्वर्दयथा पाकं सिद्धं स्य च विमर्दनी । त्वग्निः श्रमि
कार्यः ४ यत्नया द्युतं सैयुतः ४ यद्वा वलमीशा वामदक्षीणमर्गगजः ४ जायत सयदा ह्ययः ४ स्यात् । गते व
कार्यतः ॥ ॥ रूग्निगूत विक्रित्वा ॥ गुरुमध्ययार्गं वालं द्यन हव नानि च ॥ मूश्वीर्था मर्ककां ॥ गमसूत्रं म
धुलानि च । वं गमत्वाप न कर्त्तव्यं यो यत न भानि च । तस्य कूपयति ह्यिष्टं यवभा गमसंक्षिप्तं । संक्षिप्तं
गमगमं वात नारुश्च न पिवा । धाहापस्का न दहषूपन न स्त्री वृथा न पि । कीचिर्तेन न मादू सै गमगार्ग
कुंतिनी । सवयह स्या गमगानि नैल न च स मातथा । कात्रयत सुखाश्च न सफ नोर्गदितः ४ आत्रवर्धं सफय
र्तुमाद कीदीर्घवृत्त की । कर्त्तुं कात्रा नूवु की च स्कुल्य माधयया वयत् । नाडी स्वर्दयतः ४ कर्त्तुं नूयथा
वच्च विमर्दनी । निलसर्षपवृत्तु नलयनं गमकात्रयत् । विनाह वसया सहते लघुत न च । वं सवा न कुर्ग
मां सैदया स्य ४ समादतं । न सै हवति गमगानि नैव नू ॥ यति द्विपः ॥ यत्नं यं तस्य गमगानं वरुल न समाच
नत् । अथेनं या यथानं यथायार्गं रिषकैव न ४ गता विनि कं विक्ला यदं हणीये नूपा च नत् ॥ सै गत मां स
मार्गं कमात्क मां गिकात्रयत् ॥ ॥ रूति सै क्वचित् विक्रित्वा ॥ ॥ गते गमय नार्था वा कर्त्तुं न

१२४

दं

व३ अज्ञा ४

जम ४

विकिसिर्त॥ ॥ नृतिरुगविकिसिर्त॥ ॥ मृथयस्यरुवन्मानगर्गवायदिवायन॥ तस्यात्यर्हिप्रवक्ष्या
 मिस निदानविकिसिर्त॥ संग्रामवायुहनेमुगस्तु कर्मणिवातथा॥ गिनायकवहारिनावदूमचनिगमिर्तात
 न॥ कृयतिगमवपवन॥ गणिताकयात॥ सगमपयतिगयागिसंगवायनियकृति॥ तस्यकृयादिदं कल्पनिखि
 लंगमगमविग॥ सवयलस्यगयागिसर्पिषां नृदकिनः॥ निवृत्तरुलकं लं वजलजं वृत्तयेववा॥ सद्युगं प
 यसामिर्ग्यलपं तस्यकात्रयता॥ ॥ ॥ विधिनाय॥ यथाकं नृदनेन॥ तस्यरुस्मिन्॥ मृस्मि स्वदं वनिखिलं रुल
 स्वदं वकात्रयतामांसनिर्गुह्यकं वानेन॥ वासोयुदायं॥ सर्पिः॥ कीर्तवसां येवविधिनासंयदाययत॥ मानं स
 वत्सनात्तु॥ यथावंग्नसिद्धति॥ ॥ नृत्यववीत्यालकाख्यामानगमविकिसिर्त॥ ॥ नृतिमानगमविकिसिर्त॥ ॥
 ससुनिर्वर्द्धिर्तकृयादावक्षितमथापिवा॥ मर्गं तस्य समुत्पत्तिर्निदानं ययवक्ष्यते॥ कर्दमं वालुकां वापि सव
 तयदिवात्र॥ गगनाकत्रयसरुसायदाहुयत्रिणीयत॥ शीमकर्मणिवात्राजुनयुत्रवक्षारि संयुत॥ यदा
 यनीयसरुसावात्र॥ यतिनीयत॥ मृतिमाननिर्वर्धं वायनात्रायादिकर्मणि॥ निधाजयति सरुसामिथाय
 मद्यपि॥ तस्य कृयतिगमवपवन॥ सन्निवाधनात्॥ मृविश्रुतततामर्गं तथानिर्वक्ष्यते॥ सवनीय

ततो लास्यां सततं गच्छेत्कान्तं यत्। नाशं स्वदग्धं कर्तुं वा सु न कल्पे न दक्षिणां ॥ निरुक्तं वच्च कर्तुं वा ॥ निर्वर्द्धि
नस्य कर्तुं वा सम्यगावच्छेदं वत्। निर्वर्द्धयत्तु ध्याय न मनन विधिना हि षक्। अथ कां स्वदयस्त्विन्न सम्यग
लपय हि षक्। यत्किं वच्छेदकावच्छिन्नं च वत्तान्नयत्। न च त्वत्कतिमाप्नाति तात्थात्तु न मथा च यत् ॥ ॐ सं
कल्पी विधिं कुर्याद्येन लाघवमाप्नुयात् ॥ यथा वच्छिन्नं गच्छेत्तस्य स्रुपीतस्य दक्षिणः। यत्तु वच्छेदकं कुर्याच्च
तस्य गच्छेत्तस्य वच्छेदं। ततस्तत्पत्तिरुक्तस्य मध्ययत्तं न वच्छेदयत्। यथा यागं तथा कुर्यात्तु न यत्तु वा न ही। सपि
प सु लं वत्सं वेदं द्विपं यति या ययत्। सिग्धं विप्रि कौ विष्णु यदं हृणीये नृपा च यत्। ॐ ह्यावच्छिन्नं निर्वर्द्धि गतं सं ॥ १२ ॥
स्य विप्रि कृत्तिगं। सहसा वापि यत्तनाद्यथ नात्यतिरुक्तिर्न। यदासी रश्च तं गच्छेत्तु रिशतमथ तपि वा। तमाकूमा
ठनं नाम गच्छेत्तनाधिप ॥ वदनाद्यथ सुं रा गच्छेत्तु वा च वदना। तस्य वच्छेदमागच्छेत्तु निखिलं रेषं
विधिं। रुग्णं गच्छेत्तु यत्था कं साधनं रुग्णं स विष्णु ॥ तत्कार्यं माठनस्यापि वृत्तं वच्च तं यत् ॥ ॐ निसिधित विप्रि कृत्
॥ ॥ अथ वान्मथिर्गच्छेत्तु मयत्तनावापि लक्ष्मिना। तस्यात्यति निदानं वचि कित्सा च यत्तु वच्छेदं। सहसा वायस
कं वायदावा अत वा नृणां गच्छेत्तु मयति सहसा विषमस्ति गच्छेत्तु। कर्दम वा लू कार्या च सं वच्छेत्तु वा वसी

माच ३

15

10

5

दति। तत्र तवायसं (गनसलिलखर्थागतः। मूथवायुनसं नञ्चः सरुसापविधावति। वृद्धाकात्रयनियः
 नसरुसावायुमर्दतः। तगास्य कृपितावायुनकमादायतिष्ठति। कत्रातिगतिर्वैकल्यं वनगसं रुमेवचः।
 ध्वयर्थं तस्य गभुषमनस्त्रापचदन्तिनः॥ ॐ ह्यतद्विधिं धाकीर्लिंगमन्मथिनस्य वासर्पिषासचनं तस्य सत
 रं कात्रयं हिषक। यलपणीतलं तस्य दीनदृक् ॥ समावनतु। वतस्यैवेवमूलानि वटस्यास्य नलस्य वाक
 स्रुक् समं जिह्वं नलदंत्यं गनकथा॥ ॐ कृपिषः ॥ समं नमः ॥ यलपं तस्य कात्रयतु। विनार्णयं वनार्णवातन
 ॥ संपद्यत सुखी। मूजादीनं वसां मऊं दूतनसरुसं सृजतु। तगास्यसिं वयद्रागमननविधिनारिषक।
 मूलान्यत्यलजं वृत्तां कनवीनात्यलानि वासद्यतं मृलिकामिधं यलपं तस्य कात्रयतु। गीतनतं कल्ल
 नविहिगं वा नूलपनं। यावदूष्य गमनं ध्वयथा ध्वनिवर्तनं। स्वदनं मर्दनं वैवयधमं यल्लुकीर्लिंगीत
 स्य गभुहि नदयिनि नूष्मधूपयादयतु। विविक् सततं स्मृतं व्यायामं वविवर्जयतु। सर्पिः ॥ दीनं वया
 नार्थेयधैकी वयलपनं॥ ॥ ॐ ह्यैवमर्थे विकित्सा॥ ॥ सरुसादन्तिना (अष्यदाकृष्यतिमात्रगः।
 तदापिलादयादावाकृष्यति यवनाहताः। स्वसुस्यास्यदुग्भुषध्वयर्थं जनयन्तिन। समं गकृत्तिवैगनवि

नग

१५ धर्मं वाचि वदत । न सुखं ललुतं सुखं न न गयामहि नन्दति । तमा कूर्वा नर्गं वेद्याः ॥ नूनमका न (ग)हिर्गं
 १० ग्रामसद्वर्षादीर्मनस्यं सुं स ४ प्रवण वालया ॥ दन्तिनां मदिकाल्पे व पूर्वलिं लीनिमृत्तव । विपर्यय कुलि
 ५ गनार्णवत्साधस्य लक्षणं । मीयदान्ययिजायन्तथा न नृपालिदन्तिनः । तस्य दार्षवि (ग)र्षं उयत्री च स
 तिमान् रिषकायथा स्वमवै पूर्वधाकमूपक्रमं ॥ १० ॥ होकां त (ग)रुचिकित्सा ॥ ॥ किन्नगरस्य विज्ञानं
 विकित्सा चय वदत । यदा कता वा विज्ञावापि विज्ञायिवा गजः ॥ सुषित्रं च पयनवा सह सा विप्रधव
 प ति । रुसिना वायुरि रुतं विज्ञासि तापिवा । अकारा ऊजायत तस्य यथार्वा नत्र कजः ॥ वदना याति
 वै कल्योर्ध्वं लीपत्रिमूगता ॥ गगन विज्ञा रुणदापि रं रुस्यथा यजायत । तस्य सर्वाणि गगनाणि सूर्यिषाय
 विषययन् । त्रिष्वगस्य वरु वक्ती तनानन लयनी । चन्दना गी नमधूर्कं दी नृदक्षत्वां सिलानां (ग)वा लीन
 लमूलानि कतर्का दी व नालिवा मं जिह्वा सात्रिवा लाधं गन पृथ्वी च दापयन् । दी नयूक ४ यत्तथायं सद्य
 ५ गाल्पे वदन्ति नः । तिष्ठतश्च लता वापि सु न पूर्वैक कल्ययन् । सुनिखा गं दृष्टं ह्यं यथा रुसि यमा गगनः ॥ ज
 लकं सद्य ता र्यं गं गी तान्या लयनानि वा । कृयादीदीनतः ४ वदं का नयन् विगता ॥ ११ ॥ स्वदाद नन नयं वेवपान

१२५

व ४

मस्य विधीयता। सूर्यिषागर्कवानिर्गन्तुं गीतं यथानृपा। विधीय विधिवत्सिन्धुर्वां रुक्म गगना यदा पयताय
 दावधमवाध्रानितीक्ष्णः सुगियनस्वधेः। गन्धर्विक्कि यतवास्य गगनमन्यतमं यदा स गजः किन्न वनः। रुक्म
 रुक्म निनिर्धुतिः॥ तस्य विक्किन्न गगनस्य निरुहमिह रुह्यजं॥ निक्किन्न विकित्सा॥ ॥ विद्युत्तलक्षणीत्वं
 न्यस्य वद्वाम्यनपूर्वः। रुमगल्लवनाच्च वनिदूषयति वर्तनात्। यजवाच्च वसहसा गगनविद्युवर्तनं
 वत्। गता गकृतिमार्गं। गविकलनिवदूर्मना। श्वयथूर्वदना वास्य गगनं रुग्णं जायता। सूर्यिषा सचनं
 तस्य कात्रयत्सर्गं रुषक। यलयस्तस्य कर्तव्यः। सूर्यिषा कस्तव्यं रुवत्॥ दीनवृक्षवत्तव्येव कंदश्च
 त्यलसं रुवे। समरुगे सुपयसां रुक्मिणिः॥ यलययत्। गता वगल्लु कर्तव्या नागी स्वकायथा विधिः॥
 स्विन्नस्य यूनः कार्यः। यलयस्तस्य मूलम॥ अथ गगधूमचूर्णं निमाषचूर्णं रुक्म वगल्लु यवचूर्णं निमाष
 यवहलं नयलययत्। शूलस्वकायथादिष्टः। कर्तव्यः। सुखरुडना। तिलसर्वयचूर्णं निक्किन्न चूर्णं
 गथेव वा दधितं लघुतं च वगिणुमात्रवसागथा। अतनस्विन्न गगनस्य कल्कनाथ यलयनी। सूर्यिः। दीनं
 पानस्यानं स्यात्वावस्ति कर्मणि। साधयद्विद्युत्तं गगनमवायामस्य दकिन्नः। विद्युत्तलक्षणीया कां यथावद

नृपूवर्गशकमगहिनथसम्यकसनिदानं चिकित्सी ॥ ॥ निविद्युतचिकित्सा ॥ ॥ दूधवागलू
 निमयायुलस्कानंयकीलितं ॥ तदेवंसकृतिं नश्चायेऽसमार्यंस्कननिधयात् ॥ ॥ रुवतिवायुल्लोकः ॥ ॥
 लिषकेऽहूनयथाकमनदर्वविधिमनसृखकनातियथिचिकित्सां ॥ रुवतिं सतर्तं नृपलपूशानियतम
 निनृपनायुल्लिखेयः ॥ ॥ निधीयात्काखामहामनियुलीतगजायुर्वधमहायवचनदूधवा
 गस्कानद्वितीयगगनागनामसकृतितामाऽध्यायः ॥ ॥ ॥ समार्यं दूधवागस्कानं ॥ ॥ धीगजन्द
 प वदनायाम्बिकासूतायनमः ॥ ॥ ॥ धीगुनूवनमः ॥ ॥ ॥ रुमसु ॥ ॥
 सम्वत् ८२८ वैश्व कृषतिवदाववतीनक्षत्रेन्द्रयागधकूकूधगजचिकित्सासारुलिषीणी जयहृपतीन्द्रमल्लद
 वसनमहायत्नपूर्वकनञ्जलायादववावसक्तातकायावथासुसविश्रुतवसंयुक्त्यादादिना ॥ ॥ रुमसूयात् ॥ ॥

१२१